श्रीगणेशायनमः ।

अथ महेश्वर्बिलास ग्रन्थो लिख्यते।

मङ्गलाचरण वर्णनम् ।

बरवै

शारद गुरु सीताबर गौरीनाथ ।
अवध सरजु श्रीहनुमत शुभ गुनगाथ ॥ १ ॥
श्रीवृन्दाबन पावन परमित कुञ्ज ।
बिहरत राधामाधव नवमुद मंजु ॥ २ ॥

सवैया ।

शारद गौरि महेश्वर ब्रह्म सुरेस बिनै बर चोप चहूँटी । बन्दन भूषन भाल मयङ्क मनो तिहुँ लोक छटा छबि लूटी ॥ सामुहे सिद्धि नचैं लछिराम त्यों प्रान को बारि परी परैं टूटी । मानि गणेस को मङ्गलरूप उतारत आरती देवबधूटी ॥ ३ ॥

बन्दन भाल बिसाल प्रभा ससि पूरन बेद पुरान बिचारे । फारि दे फन्द सबै दुख द्वन्द के ज्यौं जस को लछिराम सँवारे ॥ श्रीअमरेस महेश्वरबक्स सदा चिरजीवै प्रताप सवारे । दै बरदान गणेस हमै बरदानिया गौरीमहेसदुलारे ॥ ४ ॥

कबित्त ।

कामद नवल नख दीपति नखत सङ्ग तरल तरङ्ग

रासि मानो गङ्गफर के । सीरी सुभ लाली तरवन की बहाली पर वारे अनुमान रङ्ग सारद लहर के ॥ नागर महेस मंजु मानस मराल बाल मण्डन अवध मग मिथिला नगर के । थल गजरथ नग पालिकी सिंहासन पै राजैं पग मैथिली महीप रघुबर के ॥ ५ ॥

मानद महेस अमरेस अमरावली मैं अमर अताप कर बारिदबरन की । लछिराम सागर बिसाल जोति जाल औरै माल मरकत हीरा लाल के लरन की ॥ पन्नगेस नगर प्रताप जस रासिका त्यौं पन्नगादिगीस अङ्ग आनँद भरन की । फैली त्रिभुवन मैं त्रिवेनी सी तरङ्गदार छबि लहरीली रामचंद्र के चरन की ॥६॥

सरस मयङ्क वारौं बिकसे बदन पर बिधि नै सवाऱ्यौ बृजभूषन सुमतिको । स्यामघनबरन बसन बिज्जु मानो बस्यौ बरन बसीकरन मंत्र बसुमतिको ॥ लछिराम छाई छबि तरह तृभङ्ग ताई बाँसुरी बजाई बरसाई रसमतिको । रामकी दोहाई मधुराई को महल माई जदुकुलकमल कुमार जसुमति को ॥ ७ ॥

बृज अवतंस खेलैं चौसर महल कौधें नथ चकचौधें यासो दावँ सों जुदै भयो । पुलकि पसीजे प्रेमपथ के तरङ्ग लछिराम त्यौं सहेलिन सुखद समुदै भयो ॥ प्रतिबिम्ब लाल के बदन को रदन पर बाल के बदन यौं प्रकास प्रमुदै भयो । सरद कलाधर के बीच मैं सबिज्जु मानो दूसरो कलाधर कला धरि उदै भयो ॥८॥

अथ राजबंसबर्णन - दोहा ।

अवध नगर नृपमनिमुकुट श्रीदसरथ महराज ।
कुँवर चारि तिनके भये त्रिभुवन शुभ सिरताज॥९॥
सकल कलामण्डित मवलि ब्रह्मरूप रघुनाथ ।
भरत लषन अरु सत्रुहन मण्डलीक गुनगाथ ॥१०॥
द्वै द्वै सुत सबके भये जैतवार जगजङ्ग ।
असुर तमालिन पै तपत जालिम जेठ पतङ्ग ॥११॥
भरत भूप के कुँवर बर पुह्कल देव दिनेस ।
प्रगट भये तिनबंस मैं नागर नगर नरेस ॥ १२ ॥
बिरद बली तिन बंस मै रैकदेव महराज ।
जिन रैका नव नगर को कियो नाम सिरताज ॥१३॥
सुभग नाम तबतैं पर्‌यौ रैकवार नृपबंस ।
जा प्रताप जगमग भयौ भुवन दूसरो हंस ॥ १४ ॥
ता कुल कल के कलस भुव भैरवदेव नरेस ।
समर जीति बहु बार बर पूरुब कियो प्रबेस ॥ १५ ॥
जुगुल जसीले सुत भये तिनके तरनि समान ।
सालदेव जेठे तथा बालदेव बलवान ॥ १६ ॥
सालदेव के प्रगट भे श्रीदसवन्त नरेस ।
जथा केसरी के बिदित हनुमत बीर सुदेस ॥ १७ ॥
बिरद बीरता कुल कलस अचलसिंह महराज ।
अचल नृपन मै यौं लसे जिमि सुमेर सिरताज॥१८॥
बांहुबली तिनके भये हृदैराम भूपाल ।
द्विजकबिकोबिदकलपतरु खलदलअरिकुल काल ॥

अद्भुत सुत ताके भये भीषमसिंह नरेस ।
रामसिंह तिनके तनै ज्यौं सुर बीच सुरेस ॥ २० ॥
सुवन तासु साहसधनी बिरद साज बर बीर ।
श्रीवषतावरसिंह नृप जैतवार गम्भीर ॥ २१ ॥
मुकुटराव तिनके भये फतेसिंह बलवान ।
जा कृपान खल दलन के किये रुधिर बर पान ॥
मण्डित नृप तिनके भये दलगञ्जनसिंह बेस ।
गञ्जन कीने अरिनमद बनि पुहमी अमरेस ॥ २३ ॥
बिजैसिंह भूपालमनि तिनके भये कुमार ।
जैतवार जस जा बढ्यौ सातौ सागर पार ॥ २४ ॥
समरजीत अहलादसिंह तिनके भये प्रचण्ड ।
तिन कीने अरिदलन को एक बार सतखण्ड ॥२५॥
कलि सुभोज तिनके भये हिम्मतिसिंह नरेस ।
अरजुन सौं रनरङ्ग मै अरि हति करत प्रवेस ॥२६॥
कीरतिकर तिनके भये कीरतिसिंह महीप ।
दानि कबिन हित कलपतरु रैकबारकुलदीप ॥ २७ ॥
समर अछैवट तासु सुत साहसदम मृगराज ।
श्रीशिवबकस नरेस को मान्यौ सब सिरताज ॥२८॥
माधवसिंह भूपालमनि ताके तनय सुबेस ।
जाहि सराहत है सदा हिंदुआन सब देस ॥ २९ ॥
दानिसिरोमनि ता तनय श्रीशिवसिंह सुबीर ।
अरि-गजराजन पै सदा मृगपति बल गंभीर ॥३०॥
बिरद बेस भूषन सुअन तासु तनय बलवान ।

श्रीगुमानसिंह भूप भो कलस देस हिंदुआन ॥३१॥
सुत सु जुगल तिनके भये जैतवार संग्राम ।
कबिकोबिदकुलकलपतरु जस प्रताप बल धाम ॥३२॥
समरसिंह अरि द्विरद पर बिरद साज मृगराज ।
श्री प्रताप जा रुद्र सम श्रीप्रताप महराज ॥ ३३ ॥
अनुज तासु आनँदकरन अचल अवनि अमरेस ।
नृपति महेश्वरबकस को बर दिय मनहु महेस ॥३४॥
श्रीपरताप महीप दिय राज काज कुल भार ।
सुभग महेश्वरबकस सिर राजश्री सिङ्गार ॥ ३५ ॥
कीरति जाकी भुवन मै गङ्गतरङ्ग समान ।
हिन्दुआन मै और नृप तुलत न यौ उपमान ॥३६॥
कीनो तिन लछिराम सो परम प्रीति दै लाष ।
जस प्रताप बगरायवे नवल ग्रन्थ अभिलाष ॥३७॥

छप्पै ।

द्विजबर सन्तन पूजि करत सनमान प्रीति नित।
सुबरनमय गोदान मुकुत मनि हरषवान चित ॥
बुधवर सङ्गम सुभग सुनत सतकबि कबित्त बर।
ध्यान धरत हर गौरि मानि मङ्गल महान घर ॥
जिमि नाम राम पुर ग्राम को तैसो रामसनेह मन।
लछिराम महेश्वरबकस नृप औढर ढरन कृपालतन ॥

करत जज्ञ अनुमान बेद बिधिवत बिचार बर। अट्ठारहो पुरान सुनत पण्डित सु पूजि कर॥ रामायन को पढ़त मढ़त आनद अमन्द उर। परमहंस

पर प्रीति बचन परमान मानि गुर ॥ लछिराम परषि पालत प्रजा राजनीति अवतंस मनु । बरदान महेश्वरबकस को जन दीयहु सम्भु कृपाल तनु ॥

सुन्दर सील समुद्र दानधारा कर बरखत । रैकवार कुलकलस हेरि गुनिगन हियहरखत ॥ बुधवर संत कबीस देत आसीस उच्चकर । मंगलीक तव चरन रहैं अरि सेन सीस पर ॥ लछिराम राजधानी अचल नाम रामपुर मानिये । सिरमौर महेश्वरबकस को सफल मनोथ जानिये ॥ भाल वलित गरल सतमाल चंदन बिभूतिवर । कलित कुसासन बीच अङ्ग परमित पीताम्बर ॥ कमलासन धरि ध्यान गौरिसङ्कर सनेह मन । जयमाली कर कलित जपत गुरु मन्त्र प्रेम घन ॥ लछिराम जोगबलरासि मनु अमर रामपुर मानिये । सिरमौर महेश्वरबकस को देवरूप परमानिये ॥४०॥

कवित्त ।

बैरिन के भाल फोरिवे को भुजदण्ड दोऊ फरके रहत बलवान जङ्ग जोरे सों । लछिराम दारिद बिदारिवे कमल कर खरकत आठौ जाम नौरतन झोरे सों ॥ रैकवार चक्वै महेश्वरबकस तोपै वारों उपमान दान हरष हलोरे सों । हिंदुआन भान तेरो जस हिंदुआन छोरैं छलक्यौ परत भन्यौ छीरके कटोरे सों ॥

दारुन दवा सी बन मन्दर लपट बाज ख्याली खल दलन के ख्याल अनरथ पै । लछिराम परम प्रभाली

मै अतङ्क राजै गहर गुलाली राजबंसिन के पथ पै॥ मण्डन भुवन श्रीमहेश्वरबकस भूप साली सङ्क बैरिन के सान समरथ पै। भोर साँझवाली है न लाली दिगन्त चढ़ी रावरे प्रताप की बहाली गजरथ पै॥ ४२॥

सुरतरु साखैं रचे भूपर बिरञ्चि कैधौं कीबे हेत सफल मनोरथ महान के। लछिराम कैधौं बैरि बदन बिदारिबे को अमर प्रचण्ड दण्ड बिरद बितान के॥ ठाड़े बलवान भीमसेन के गदा द्वै कैधौं साहब समर ये सतून हिंदुआन के। भुज फरकीले हैं महेश्वरबकस तेरे कैधौं खम्भ जुगल जसीले असमान के॥ ४३॥

बेनु बलि बिक्रम दधीच की कहानी सुनै तैसो जस रावरो है जगर मगर सों। लछिराम फरके रहत भुजदण्ड दोऊ मण्डित सु मौज बीरताई की रगर सों॥ रैकवार चक्कवै महेश्वरबकस तेरो जस हिंदुआन फैलो मानो या बगर सों। चन्द्रमा मरीची सम रामपुर बीच आवै सम्पति उलीची अलकेस के नगर सों॥

मौज मुद मण्डित महान गजरथ साखैं पुलकित कलपलतान आनुमानो मैं। पालिबे प्रजान लछिराम कबि कोबिद को अजब अछैवट दूहूं को सनमानो मैं॥ सामुहे समर भीमसेन के गदा से भारी जुगल जसीले कालदण्ड परमानो मैं। रैकवार कलस महेश्वरबकस भूप कौन रूप तेरे भुजदण्डन को मानों मैं॥ ४५॥

बन धन बैरिन मै अजब अतङ्क बाज क्रुद्धवान ज्वालामुखी ज्वाला सों हिलत है । देवराज बंस मै प्रकासमान मारतण्ड हित कोस कञ्ज कर झाला सो झिलत है ॥ लछिराम कोबिद कबिंद प्रजा सों हैं ऐसो रंग रचि नाग रनसाला मै पिलत है । रावरो प्रताप श्रीमहेश्वरबकस आला मालाकार मंजु गुललाला सो खिलत है ॥ ४६ ॥

उन्नत अजब हिमालय के सिखरहू तै सीरो सम सरद मयङ्कभू थिरत है । लछिराम धूमधाम सङ्कर-सदन रूप मङ्गलीक रदन गनेस तैं भिरत है ॥ तरल तरङ्ग छीर सागर सो सङ्ग धीर बैरिन के भाल पै गजब सो गिरत है । सङ्गमी सु मौज श्रीमहेश्वर बकस भूप जैतवार जङ्ग जम्बूदीप मै फिरत है ॥४७॥

समर-समथ्थ बाहुबल को सराहै कौन बैरीतम दल पर दारुन दिनेस हौ । परम प्रजान मित्र नागर नषत हेत बखतबुलन्द बीर नषतनरेस हौ ॥ लछिराम कोबिद कबिंद सनमान सङ्ग मौज मुद मण्डित अचल अलकेस हौ । रैकवारकलस महेश्वरबकस भूप राजबंसमुकुट हमारे अमरेस हौ ॥ ४८ ॥

सुभट-सिरोमनि महेश्वरबकस तेरे कर मै कृपान कला कोटिन करति है । लछिराम जङ्ग ज्वाल माला सी लपट अरिदल पै अवाजबाली गाजलों परति है ॥ परम प्रचण्ड भुजदण्डन पै रावरे के जैतवार जौहर

बहाली को भराति है। क्रुद्धवान काली तै रुधिर पान कीवे हेत वार मै तिरीछी तेज पार उतराति है ॥४९॥

दोहा।

सुभग महेश्वरबकस बर रैकवार भूपाल।
दान हेत भुवअमर मनु दूजो करन बिसाल ॥५०॥
बिरद रामपुर को अमल चहुँदिसि मङ्गलरूप।
सुभग महेश्वरबकस नृप अवढर ढरन अनूप ॥५१॥

सिद्धि श्रीरामपुराधीश रैकवारवंसावतंस नृपगुमानसिंहात्मज श्री राजेन्द्रमणिमहेन्द्र महेश्वरबकससिंहजूदेव आज्ञानुसार श्रीअवधनगर निवासी लछिरामबिरचिते महेश्वरबिलासकाव्ये मंगलाचरणराजबंसवर्णनोनाम प्रथमोबिलास: ॥ १ ॥

अथ ग्रन्थभूमिकावर्णनम्—बरवै।

बिहरत सब रस भीतर बर शृङ्गार।
बरनत प्रथमहि तातें सुमति उदार ॥ १ ॥
तिय पिय आलंबन मै होत सभाग।
रचना बचन बिलासक उर अनुराग ॥ २ ॥
अब तिय ताहि बखानों जा लखि भाव।
जिनहि नायका बरनत नृप कबिराव ॥ ३ ॥
नखसिख सुखमा रसमय सील सरूप।
मधुर हाँस मृदु बोलनि तिय सु अनूप ॥ ४ ॥

नायिकावर्णन—कवित्त।

सारी स्वेत गङ्ग छूटे जमुना तरङ्ग बार कंचुकी सुरङ्ग सारदा सी बिलसति है। आनँद अछैवट परोहित अनंग जोति भूषन मुनीन मण्डली लों हुलस-

ति है ॥ जोग लछिराम कुञ्ज मकर अमावस मै कामना लपेटी फेंटी चार्‍यौ फलसति है। माधव मिलो तो जग्यौ जोबन प्रयाग नव सुन्दरी सोहाग मै त्रिबेणी सी लसति है ॥ ५ ॥

सारी स्वेत कंचुकी सँवारी तास बादले की सौरभ तरङ्ग सङ्ग मानो गङ्गधारा सी। भासमान भूषन बिराजैं बार हीरन के बेसरि बहर बेस ब्रह्म सुख सारासी ॥ कबि लछिराम स्यामसुन्दर तिहारी सौंह सहज समीर लागें थरकति पारा सी। थारा लै मुकुत वारों छबि को न वारापार आई वह दारा साँझ सुभग सितारा सी ॥ ६ ॥

सारी चारु चम्पई बदन पर छूटे बार बेसरि बहार लूटै जीति नभ तारे सों। कबि लछिराम स्याम सुन्दर सरद चन्द मन्द पर्‍यौ सामुहें बिरद हेरि वारे सों ॥ राम की दोहाई हरें सुन्दरी हँसति ऐसी उमड़ी परति छबि घूघूट किनारें सों। स्याम घन अङ्क मै प्रकास वगरावै मानो आवै कढ़ी दामिनी सुमेर के दरारे सों ॥ ७ ॥

कातिकी के पूनो की परब सुनि आई मुख सामुहें निसाकर नमूनो सो लखात है। चाल मतवाली स्यामसुन्दर सोहागिनि की लछिराम चाननी प्रकास मै लजात है ॥ मृदु मुसकानि प्रतिबिम्ब लै अधर परें पगन की लाली पै प्रभा यों लहरात है। कोकनद

कल तैं बिछलि भूमि राती पर हीरा लाल माल मानो बिथुरत जात है ॥ ८ ॥

लाल पट भीतर मसाल सी प्रकासमान सङ्ग मै सहेलिन के आई सांझ सुख तैं। बिहँस्यौ बदन बर बलित प्रस्वेद कन खुल्यौ घेर घूँघट समीर सोहैं रुख तैं ॥ भाँवरै भरत मन लोभी लछिराम हेरे समता न आवै सारदाहूँ के पुरुष तैं । फन्दबस दामिनी बि-रादर के मानो कढ्यौ सादर सरद चन्द बादर सुरुष तैं॥

उरज उठान कैसी भीतरै सु अञ्चल के औरै छटा बूटेदार कंचुकी सोहाती मै । कबि लछिराम छबि छलकि परति मानो सहज सिंगारहूं सुगन्ध मुदमाती मै ॥ मग मचलाती मड़राती भौंर भीरन सों जौन हाल पालकी के पट मों छपाती मै । नवरङ्ग राती पै बहार हेरि जोबन की राखो सूम थाती सौ छपाय छैल छाती मै ॥ १० ॥

हीतल तिहारे हाल सीतल परैंगे लाल हीरालाल मालसी महल हुलसाति है । लछिराम सौरभ तरङ्गन के धूमधाम आँगन कढ़े ते भौंर भीर मै फसाति है ॥ बरसाति सामुहें अनङ्ग रङ्ग मानो जब अञ्चल के ओट छूटी कंचुकी कसाति है । फूटी परै जोति कासमीरी साल बूटी पर नवल बधूटी जोगबूटी सी लसाति है ॥

थोरी बैस बोरी सीलसागर तरङ्ग सुकुमारि वा समीर तैं डगर डरि जाति है। लछिराम लोभी भौंर

भाँवरै भरत सङ्ग समुहे मनोरथ लतासी फरि जाति है॥ माधुरी हँसाति सम सरद मयङ्क जोति मदन मसाल सौहैं मन्द परि जाति है। अजब अनूठी की छलासी छामलङ्क लाल मूठी मे न भाषति मुठी मे भरि जाति है॥ १२॥

विकसे बदन छूटे बङ्कवार मानो बेलि रङ्गदार जोबन बहार सरसाने की। घाँघरे सुरङ्ग पै कलित काकरेजी कोर माधुरी हसनि तनमन तरसाने की॥ लछिराम छाम लङ्क लचकै समीर लागें साँचे की ढरी है किन्नरी कै दरसाने की। चम्पक छरी है पोखराज की लरी है देवराजकी परी है कै परी है बरसाने की॥

औचक अकेली पाय सराबोर स्वेद झाऱ्यौ आपने बसन या चरन अरुनारे कों। लछिराम लोभी घेर घूँघर सवारि बझी बेसरि छोड़ायौ छैल बार कजरारे कों॥ आँगुरी नषन चूमि चखन लगाय चारुपाऱ्यौ धरी चारिक सु नौरतन थारे कों। राती मेहदी न सूमथाती के सुभाय राख्यौ छाती मै छपाय मेरे हाथ गजरारे कों॥ १४॥

मरम नयो लै मढ्यौ मदन मरोर मानो हीतल सँवारि हार चम्पक हजारे को। लछिराम लोभी या नगर गुजरेटिन की डगर बचावै तगातोरि नेहवारे को॥ चारु चतुराई थोरी बैस की लुनाई पर वारि हैं मिलत मुकताहल के थारे को। बरबस जादूभरी

नजरि तिरीछिन तें परखि परी तूँ करि परबस प्यारे को॥

आई बरसाने सों अकेली यों डगर भूलि मोको मिली साँझ सारदा सी भरी ख्याल सों । जोबन बहार झनकार पैंजनी की तिमि सराबोर काकरेजी स्वेदकन जाल सों ॥ लछिराम तापैं कलकौतुक बिलोको लाल माधुरी हँसनि बीजुरी की जोति माल सों। जौलों हाल दीपक सवारो मैं महल तौलों मुख महरेठी खुल्यो मदन मसाल सों ॥ १६ ॥

बेनी गून्हि सोहैं पीछे कर सों करति झुकि बिहँसि बसीकरन मंत्र सों पढ़ति है। लछिराम धूमधाम चौक बाहिरी लों चारु जगमग जोबन के जौहरैं मढ़ति है ॥ छिगुनी अँगूठी पै छलान की चमक हेरि उपमा अनूठी मेरे मुख सों कढ़ति है । काली नौल नागिनि फनाली चंपई की मानो चहचही चंपा के धनुष पै चढ़ति है ॥ १७ ॥

साझी सैल गैल मधुबन की लचत लङ्क बिहरै नबेली संग प्रीतम के सुख तें। सोसनी बसन कोरैं चंपई सबुज राती भौंहैं लछिराम चढ़ी चारु बंकरुष तें ॥ बून्दै सिरसावनी ढरै ते घेर घूंघट सो समता न ताकी मिलै बानी के पुरुष तें । पीरे हरे लाल घनजाल के जँजीरे गिरैं मानो कनहीरे देवराज के धनुष तें ॥ १८ ॥

सैलबन सावनी घटा के बरसत आई सराबोर

सांझ गौन गज मतवारे सों । कवि लछिराम चारु नौरतन चौकी पर बैठी अलबेली ओट अभिरि के बारे सों ॥ करन मुठी मैं कैसे छोरै अलकन भीजे उन्नत उरोज बारिकन के तरारे सों। पोखराजी थल पै जुगल मुनिवारे मानो मंजन करत नल चंपई हजारे सों॥

पीरी पाट ओढ़नी अबीरी आबदार आंगी बीरी बिधुबदन लखे न थरकत को । सावनी सिंगार त्यौं हिंडोरे की बहार उड़ै संग पट बार हारि हीन धरकत को ॥ लछिराम रूप अलबेली पै अमान मानि दीबे हेत समता न मन फरकत को । पीछे फहरात आसमान लौं परी के मानो मिल्यो रंग चंपई निसान मरकत को ॥ २० ॥

झूलत नबेली घन बरसै अखगडधार बदन बिराज्यो रंगदार बृज मेले मै। केसरि कपोल भाल रोरी मृगमद बिंदु ढरत मलैज मोती लट फहरेले मै ॥ ठोढ़ी मग परत प्रबाह उरजन पर लछिराम वारों सम गन अलबेले मै । एक बिधु बेले हेरि मानो लहरेले करैं मंजन महेस पंचनद के झमेले मै ॥२१॥

सवैया ।

भार तैं ऊँचे उरोजन के चली चंपई कंचुकी बीच दरार है। त्यों लछिराम गोराई की जोति पैं वारतही बनै बिज्जु बिहार है ॥ रूप छटा नख ते सिख लों उमड़ी परै जोबन जादू बहार है। जाति जितै जितै

प्यारी तितै तितै होत मनो बिधु को अवतार है ॥२२॥

लालिमा औरै चढ़ी चख बंक पैं लंक लचै त्यों मुरार के तारसी। गोल कपोल पै केस खुले लसैं बेसरि त्यों सुखमा के सिंगार सी ॥ ओचकही लखो यौं लछिराम कछू बिहँसे बनै गंग की धार सी । या वृज की अलबेली मै चारु नवेली बिराजै चमेली के हार सी ॥ २३॥

दोहा ।

घूघट पट मै जब कहूं बिहसति वा सुकुमारि ।
महल मनहुं विधिचंद की देत मरीचिनि टारि ॥२४॥

अथ त्रिविधि नायकालक्षणम्—बरवै ।

त्रिबिधि नायका तिहि गनि सीआबेस ।
परकीया सामान्या ग्रन्थन देस ॥ २५ ॥

स्वकीयालक्षण बरवै ।

प्रतिछन पति अनुरागहिं जा मनलीन ।
धर्म स्वकीया मानाति परम प्रवीन ॥ २६ ॥

यथा—सवैया ।

सारद सी मणि मन्दिर मै नखतें सिखलों सुखमा रही फेलि है। मन्द हँसी लछिराम सु ओठ लों रोष न सापनेहू मन मेलिहै ॥ प्रीतम के रुख राखिवे कों गिरजा सों लई बरदान सकेलि है। भागभरी अनु-रागढरी पटभीतर मानो सोहाग की बेलि है ॥

तूँ सिरमौर सोहाग की बेलि सी कीरति राजै दि-गन्तन छाई । साहिबी सौरभ सील सुभाव सरूप की रासि भरी चतुराई । गङ्गसी पावन गौरि गुनै वृजमै

लछिराम लकीर खचाई। पूरुब पुन्य सों प्रीतम मानो पतिव्रता देवन पूजिकै पाई ॥ २८ ॥

बरवै ।

त्रिबिधि स्वकीया बरनत मति गम्भीर ।
मुग्धा मध्या प्रौढ़ा रसमति धीर ॥ २९ ॥

मुग्धा बर्णनम् - बरवै ।

सैसव सहित सु जोवन अंकुर अङ्ग ।
मुग्धा तिअ तेहि बरनत बुध बहुरङ्ग ॥

यथा कवित ।

कोकनद बदन मलिन्द घुघुरारे बार रदन सु हार मुकतावली के लर सों। लछिराम लोचन जुगल मीन चाहैं प्रेम दीपति प्रकास पय वयसन्धि वर सों ॥ भाँवैरै भरत राजहंस बृजराज बृज भूपर भन्यौ है आज आनंद अमर सों। सौरभ तरङ्ग सङ्ग मङ्गलीक रङ्ग जादू अंकुरित जोवन अनङ्ग मानसर सों ॥३१॥

बार सरकत रेजे रङ्ग पोखराज मुकुतावली रदन ओठ लाल अनुमाने को। हीरा हास रतनडवा सी कुच कोरैं कछू रोमलता नीलम चुनीन परमाने को ॥ जगमग्यो जोबन को अंकुर न अङ्ग लखो लछिराम राई लोन वारि सनमाने को। राख्यौ चहै तियतन जादू के नगर खोलि मदन जवाहिरी जवाहिर खजाने को ॥ ३२ ॥

लोचन चपल खञ्जरीट के कुमार चढ़ीं कोरैं कान छोर लों अमन्द अरुनाई सी। स्वच्छ सरितासी छबि रोमरोम जागी परै सकुचित मन्द लरिकाई बृन्द

काई सी ॥ लछिराम चन्दमुख बिकसत औरै आब हसनि कछूक चाननी की रुचिराई सी । चहके चकोर आज येहो बृजराज लसै बैस नवला की साँझ सरद सोहाई सी ॥ ३३ ॥

बानी कछू कोकिलअलापसी लगत मीठी बार घुँघरारे भौंरभीर की लगन सों । अंकुर उरोज कलिका से मौज राते स्वास दक्षिन समीर सुभ सीरी एक छन सों ॥ मकरंद खेदबुंद लछिराम कंजमुख विकसत आवै सिसुताई के समन सों। सौरभतरङ्ग सङ्ग तियतनवन राज्यौ रङ्गदार जोबन वसन्त आगमन सों ॥३४॥

कैधौ रङ्ग बारुनी को सीसी मै झलकदार कैधों बारि भीतर सरोज ओज घन मै । बारिद के बीच कैधौं बिज्जुकी अजब जोति चम्पकलता है कैधों बंजुलित बन मै ॥ धार सारदाकी लछिराम जमुना मै कैधों कैधों ब्रह्मरूप जीव जगमग तन मै। जगत बसीकरन मार बिधि कैधों जादू जोबन को अंकुर सवाऱ्यो सिसुपन मै ॥ ३५ ॥

दोहा ।

लखति आपनो बदन बलि मुकुर महल मैं जाय ।
घन चपला लों चपल तन मनही मन बतराय ॥३६॥

अथ अज्ञातजीवनालक्षणं—बरवै

जोबन अंकुर अँग जब जानि न जाय ।
तिय अज्ञात सराहत सुकबि सुभाय ॥३७॥

तथा सवैया ।

थरी द्वैक सों दीपति औरै भई चकचौधें न अङ्ग सँभारति है । अलकावली तें लछिराम डरै भ्रमरावली सौंहैं बिडारति है ॥ कछू अञ्चल ऊँचो सराहि सखी हँसि दै गलबाही निहारति है । हलि कोठरी मै हिय हेरिबे कों मुकतावली माल उतारति है ॥ ३८ ॥

बबा सामुहे मै चुप साधे रहैं भलो भाई को सङ्ग निहोरत हैं । लछिराम सुरङ्ग सजे पटुका सिरपेच को बाँधत छोरत हैं ॥ चलैं सङ्ग हमारे न खेलिवे को कर को छुयें भौंहे मरोरत हैं । ए कहाँ रहैं भाभी बताय दै तूँ जो हमै लखि यौं मुख मोरत हैं ॥ ३९ ॥

चोरमिहीचनी मै तिय के चख मूँदे हथेरिन मै न अमाने । चौंकि रही नव सारदी सी सिगरे तन पारद लों थहराने ॥ भाल तें खेद के बुन्द ढरे लछिराम कपोल छटा दृग माने । आठै को इन्दु मनो बरसै दरमीनहि ते मुकतावली दाने ॥ ४० ॥

नवला करि मज्जन सागर मै भभरी कुच कोरें निहारति है । जल मै मुखमण्डल को प्रतिबिम्ब प्रकास तें औरै बिचारति है ॥ लछिराम मसूसन तें मनके मनु मौज मनोज की ढारति है । रुचि रोमलता अलकावली सङ्ग सेवार कै अङ्ग सों झारति है ॥४१॥

दोहा ।

बरसति आँसू अलक उर तिरछी भौंहन हेरि ।
मरम न खोलति हरख हरि परति साकरे फेरि ॥४२॥

अथ ज्ञातजोवनालक्षणं—बरवै ।

जोबन आगम जानै जब जिय बाम ।
ज्ञातयौबना तिय तेहि बरनि ललाम ॥४३॥

यथा कवित्त ।

औरैं अंग ऊपर प्रकास भोरही तैं सांझ दामिनी दबकि जैहै रंगति गुलाबी तै । कंचुकी सँवारिबे को चरचै सुमन हेरि ओढ़नी के भीतर हरष लट लाबी तै ॥ लछिराम लाली कोरैं लोचन चपल जादू जगमग्यो जोबन को अंकुर सितावी तैं । मुसकानि माधुरी कछूक अधरान फैलि फावी परै बदन मदन महतावी तैं ॥

भावरैं भरत भौंर मानि कोकनद मुख उकसे उरोज ओज अंचल की चोरी पैं । कवि लछिराम अरुनापन अनङ्ग रंग औरैं मङ्गलीकभाल भूधनु मरोरीपैं ॥ तारिका सी वृज मैं कुमारिका लजीली जाग्यो जोबन को अंकुर सुगन्ध सरवोरी पैं । नवल सोहाग स्यामसुन्दर सरस भोर बरसत मानो भाग नवलकिसोरी पैं ॥

दोहा ।

सुमनहार हित सुन्दरी मालिनि सों मुसकाति ।
अंचल ऊँचो अलक तैं छुपवति ललकि लजाति ॥४६॥

अथ नवोढ़ालक्षणम्--बरवै ।

डर सकोच-बस पिय सों करति न प्रेम ।
कहत नवोढ़ा कविगन मत करि नेम ॥४७॥

कवित्त ।

सोई रंगरावटी मे नवलकिसोरी भोरी कीनी बरजोरी स्यामसुन्दर सुगोने मै। मसकत आंगी मंजु मचलि मरोरि भौहैं छवि लछिराम कैसी पोखराज सोने मै ॥ छूटे बार टूटे हार सराबोर खेदमुख हीरा लाल मोतीलर बिथुरे बिछोने मै । बिछलि कबूतरी लों कर पकरत परी पारद की पूतरी लों थरकति कोने मै ॥४८॥

राती रंगरावटी मै नवरँगराती लसै भूषन बसन राते जगर मगर मै। प्रथम समागम सनेह बस लछिराम कीनी बरजोरी कछू आनँद बगर मै॥ कर पकरत परजङ्क तै बिछलि फेरि अङ्क सों उछलि परी चौकठ कगर मै । कामनट रंग मै कबूतरी कलान संग मानो हल्यो मानिक नगीने के नगर मै ॥४९॥

दोहा ।

छरकीली छबि चलत मग मिलत छैल की छाह ।
खिलत कमलमुख अलिन को नवल छटा उतसाह ॥

अथ बिश्रब्धनवोढा लक्षणं बरवै

डर सकोच बस मन कछु प्रीतम चाह ।
गनि बिश्रब्धनवोढा कबि नरनाह ॥ ५१ ॥

सवैया ।

परजङ्क धरै पग सङ्कभरी बगरी मनो बीरबहूटी परै । मुख मोरि उरोज दुरै भुज सों जब नाह की चाह चहूटी परै ॥ लछिराम गोराई की पुञ्ज प्रभा

पट पै जऊ जोति सी फूटी परै। सिसकीन की सोर मै वा नवला कर सों तऊ छैल के छूटी परै ॥५२॥

रुख सावरे को लखि सामुहे मै दबिकै दुख मै मुख मोरति है। धरें ओछे उरोजन पैं कर कों लछिराम त्यौं भौंहैं मरोरति है ॥ सिसकीन की सोर मै नाही किये रद सों छबि दामिनी छोरति है। रँगरावटी मै भली भाँतिन सो मुकतावली मानो बिथोरति है ॥ ५३ ॥

दोहा।

ससकि धराति परजङ्क पग पट घूँघट करि ओट ।
भरति मोहनी लाल-उर मनहु मदन की चोट ॥५४॥

अथ मध्यालक्षणं बरवै।

मदन काम जा तिय तन एकै तूल ।
मध्या तिय तेहि बरनत सुमति अतूल ॥५५॥

यथा कवित्त।

घूँघुट के ओट मै कमान सी चढ़ति भौंहैं बिकसैं कपोल मुसकानि रदपट मै । लछिराम लोभी की झलक सो पलक मूँदै उघरै न केहूँ मनकामना कपट मै ॥ हेरि हेरि झाझरी सों कौतुक सुरङ्ग भरो फेरि फेरि आवै प्यारो प्रेम की झपट मै। बन्द कोठरी मै कामनट की कबूतरी त्यौं खुलत किवारी लाजपूतरी लों पट मै ॥ ५६ ॥

भोरे आज खोरि खिरकी मै भटभेरो भयौ कढ़त किवारी मन मुरक्यो सहेली को। लछिराम लोभी

की ललक लोटपोट पर पुलकि पसीज्यौ गात गरब गहेली को ॥ फैली पट ऊपर अजब जोति जोबन की छैल छरकीलो छक्यौ पाग अलबेली को। राई लोन वारे घेरि घातन घरीक हारे उघर्‌यौ न केहू घेर घूघट नबेली को ॥ ५७ ॥

दोहा ।

करति चाह पियमिलन को बूड़ति फिरि उतराति ।
सकुच कामसर नवल तिय मनही मन अकुलाति ॥

अथ प्रौढ़ालक्षणं- बरवै ।

केलिकला मै कोबिद पिय सँग रङ्ग ।
प्रौढ़ा परम सोहागिनि मदन उमङ्ग ॥ ५९ ॥

यथा कवित्त ।

मनमथरङ्ग मै लपटि अङ्ग सांवरे के जङ्ग बिपरीति मै जसीली उमचति है। बारबङ्क छूटे टूटे हार हीरा मोतिन के सराबोर स्वेदन सुरङ्ग बिरचति है॥ लछिराम छकत छकावति कलानि सङ्ग कलित कसौटी पै लकीर सी खचति है। भौंहन मरोरि फरकाय पूतरीन मानो कामनट—छाती पै कबूतरी नचति है ॥ ६० ॥

बिपरीति रंग मै बिलास बड़भागिनी को परम प्रकासमान रोमरोम छायगो । छूटे बार टूटे हार हीरा लाल मोतिन के औरै ओज मदन बदन छहरायगो ॥ लछिराम उपमा अनूठी दौरि दीबे हेत अभिराम सारद सुमन तिरछायगो । कोकनद घन

मै अमन्द सांझबेले हेरि मानो यौं सरद चंद चाननी बिछायगो ॥ ६१ ॥

रति बिपरीति के उमङ्गन मै रंगभरी खुले खूब अंगन खजाने वेछतन के। बिथुरी अलक भाल बेंदी सों लपटि सनी स्वेद रूप राचे नैन ऊपर जतन के॥ लछिराम सारदा अनूठे उपमान छ्वै छ्वै राई लोन संग वारैं बीच मै ललन के। मीन मानसर में फसाये मीनकेत मानो डोरैं बनसीन डारे चारे नौरतन के ॥६२॥

रंग बिपरीति मै सुरंगमुख चुम्बन की चोखी चाह लफि लफि अङ्क मै भरति है। धारे स्वेद चरचित चंदन छलकि बलि कुण्डलित कुचन के मूल तें ढरति है॥ उपमान दीबे में न मन ठहरात केहूं त्रिभुवन सुन्दरी सोहाग निदरति है। सूछम तरंग संग सौरभित गंग मानो जुगल गिरीस की प्रदच्छिना कराति है ॥६३॥

जोबन-बहार के उमङ्ग अलबेली आज रंग बिपरीति संग प्यारे तरपत की। भूषन झनक लछिराम त्यों खनक चुरी धूमधाम अधर कपोलन के छत की॥ ढऱ्यो सीसफूल टूटे हार मुकुतावली मै भावरैं उरोज भरे सीमा छावे रत की। परम परब मानो सूरज सितारे मिलि करत प्रदच्छिना सुमेर परवत की ॥६४॥

जंग बिपरीति मै नवेली के बदन पर औरै धूमधाम लाली दृगन सुबेस की। छूटे अंग रंग टूटे हार हीरा मोतिन के लछिराम घेरे बङ्क बिलुलित केस

की ॥ सराबोर स्वेद ढर्‍यो भाल तै दिठौना कुचमूल कुण्डलित हेरि मोहै मति सेस की । अङ्ग रङ्ग हेत मानो आतुर अनङ्ग देव गङ्ग मिलि करत प्रदच्छिना महेस की ॥ ६५ ॥

रङ्गरावटी मे रङ्ग रति विपिरीति रांची प्यारो छकि अधर कपोल परसत है। बदन बलित स्वेद सराबोर बङ्क लट कंचुकी फटीतैं उरजन सरसत है ॥ कवि लछिराम धूमधाम की छटा पै सम दीबे हेत मन सारदा को तरसत है । दीपति अमन्द हेरि मठ भाभरी मै चन्द मानो चन्द्रचूड़ पै त्रिवेणी बरसत है ॥ ६६ ॥

दोहा ।

लपटि साँवरे अङ्ग मै बिरचति कला अनङ्ग ।
मनहु बिज्जु घनदाम संग सरसति आनँद रङ्ग ॥

प्रौढ़ासुरतान्त यथा —कवित्त ।

जङ्ग बिपरीति जीति बैठी परजङ्क पर वदन सवाराति मनोरथ सफल पै । लछिराम लट भाल भूधन मरोर नैन बिकसे कपोल नासा मौज परिमल पै ॥ छलकि दिठौना छूट्यौ पुलकि पसीजे लस्यौ मेहदी बलित बेस कर भलाभल पै । मानो मन मौज मै सिंहासन सरोज बीच बैठ्यौ बीर आसन मनोज मखमल पै ॥ ६८ ॥

सराबोर स्वेद रङ्ग बदन अनङ्ग सेज सुरति-समर जीति बैठी बनमाली तैं। सीसफूल पाँखुरी भरत ब-

ङ्कवारन पै भिरत बहार सङ्ग उरज बहाली तैं ॥ झूठे परे सुमन अनूठे उपमान हेरि लछिराम सारद की मौज मतवाली तैं । व्यालीमगमण्डित कपाली के सिखर मानो बरसै मरीची मंजु सूरज की लाली तैं ॥६९॥

रङ्गभरी भामिनी रतन रङ्गरावटी मै रङ्ग बिपरीति रच्यौ आनँद अपारा मै । लछिराम छैल को छकाय छकि बैठी सेज मण्डित मजेज मुख तेज जनु तारा मै ॥ मरगजो सीसफल लरकि उरज लस्यौ सराबोर बदन प्रस्वेद के पनारा मै । मानो हेरि सूरजै श्रमित श्रीफलासन पै सींचै अरबिन्द मकरन्द बुन्द धारा मै ॥७०॥

रङ्ग रचि फाग सङ्ग सांवरे के सोई मुख मण्डित गुलाल मै प्रस्वेद कन घोरिगो । मरगजी चूनर सुरङ्ग पै सोहाग औरै सौरभ तरङ्ग त्रिभुवन को बटोरिगो॥ बरषि सुमन लछिराम सारदा को मन समन मरोरि छविसर मै सु बोरिगो । मेलि मुकता मै मानो मानिक चुनील हार जादूगर मार आरसीन पै थिथोरिगो ॥७१॥

रास करि पाछिले पहर कातिकी की रैनि सोई सेज वारों परी परमा परम सो । अङ्गते महल परिमल के तरङ्ग फैले जगमगै जोबन गोराई चमा चम सो ॥ बङ्क लट सूछम ललाटपर बेंड़ी लसी लछिराम समता बिचारै कौन क्रम सो । मरकती मीना रच्यौ मानो केसरित भूमि कारीगर काम कलपद्रुमी कलम सो ॥

सवैया ।

बिपरीति कै सेज मजेज भरी घरी आरस मैं दृग मीचति है । अलकावली तें कन स्वेदन के करसों कुंच ऊपर खीचति है ॥ लछिराम अनूठी कहै उपमा थकै सांवरे के मनै सीचति है । तिय शम्भुके सीस मनो मुकता भरि अंजुली मानो उलीचति है ॥ ७३ ॥

बिपरीति कै बैठी बिनोदभरी प्रभा पुञ्ज प्रकास बिथोरति है । मुख सो ढरैं स्वेद उरोजन पै छन दामिनी की छटा छोरति है ॥ समता लछिराम सवारत मैं छकि सारदाऊ त्रिन तोरति है । करी-कुंभन को नलिनी सु मनो मकरन्द के बुन्द मै बोरत है ॥

दोहा ।

अरसीलो परजङ्क तिअ बैठी बिथुरे बार ।
मनहु कोकनद भोर पैं लसत भ्रमर बर हार ॥७५॥

बरवै ।

प्रौढ़ादि बिधि बखानत रतिप्रिय एक ।
पुनि आनदसंमोहा सुरतिबिवेक ॥ ७६ ॥

अथ रतिप्रिया यथा सवैया ।

सांझही सो बिपरीति कला रची पाछिले जाम लों आनद छावै । त्यौं लछिराम छकाय छकी श्रमसीकर मै सराबोर सुहावै ॥ यों रुख फेरति है दुख मै जब वा मुख झांझरी ओर चलावै । सुन्दरी भोर भये लों गोबिंद को बार बगारि अंधेरी बतावै ॥७७॥

दोहा ।

ज्यौं ज्यौं फेरि उमाह करि नागर गर लपटात ।
त्यौं त्यौं उडुगन भोर लौं नागरि मन मुरझात ॥७८॥

अथ आनदसंमोहा यथा सवैया ।

सांवरे सङ्ग मैं वा रँगराती रची बिपरीति सु रङ्ग अटा मै । त्यौं लछिराम खुले सब अङ्ग तरङ्ग सुगन्ध सुरूप छटा मै ॥ बेलि सोहाग सी भागभरी श्रम-स्वेद सवारी सनेह सटा मै । कामना पूरी भई मन-की लपटी मनो दामिनी स्याम घटा मै ॥ ७९ ॥

दोहा ।

करि बिहार अति श्रमसनी परी सेज बिन तेज ।
मनहु चन्द भू पर गिर्‌यौ त्रिभुवन लूटि मजेज ॥८०॥

अथ धीरादिभेदलक्षणं—बरवै

करि मन मध्या धीरा मान गँभीर ।
धीरा अपर अधीरा धीरा धीर ॥ ८१ ॥

मध्याधीरालक्षणं—बरवै ।

मध्या धीरा राखै पिय पर रोष ।
रचना बचन बिसेषक व्यङ्ग प्रतोष ॥ ८२ ॥

यथा सवैया ।

भाल पै ओज अमात न भावते चाल पै वारों मनोज मतङ्ग है । त्यौं बिथुरी जुलफैं मुख पै छटा छायो कपोल पै औरै उमङ्ग है ॥ स्वेद के बुन्द बहार भरे झलकैं रुख सामुहे मौज अनङ्ग है । टूटी परै प्रभा लोचन पैं छलकै मनो बीरबहूटी को रङ्ग है ॥

आरसी मंदिर मै अवलोकिये सारस लालिम कि मद गारे । त्यौं झपकी पलकैं लछिराम सु भौंह मरोर के भीतर ठारे ॥ आरस भूषन को पहिरै खरे खञ्जन के उपमान बिडारे । वारों कहा मन सङ्ग लै लाल बिराजत लोचन बङ्क तिहारे ॥ ८४ ॥

कवित्त ।

अधर बहाली भरे माधुरी हँसनि सङ्ग बरसत रङ्ग मानो सुमन हरीरे पर । कबि लछिराम धूम-धाम रङ्ग औरै ढङ्ग भाँवरै भरत भौंर सौरभ गभीरे पर ॥ बिकसे कपोल भाल भूधन मरोर वङ्क सराबोर स्वेदकन सिरपेच पीरे पर । नीरे सो निहारि हारि बार तै बनत हीरे सीरे होत नैन जादू जुलुफ जँजीरे पर ॥

लाली भरे लोचन बहाली बरसत बङ्क भौंहन म-रोर पै छटा त्यौं छलकायौ है । बिकसे कपोलन पै सीकर प्रस्वेद सोहैं जुलफैं बिथोरि तापै छबि छहरायौ है ॥ राई लोन वारों हेरि बदन प्रकासमान लछि-राम कैसो त्रिभुवन छेम छायौ है। नवरङ्ग जादू लिखि पारसी अनङ्ग फेरि आरसी पै मानो मुकुताहल बि-छायौ है ॥ ८६ ॥

दोहा ।

आवत हौ कितसों महल भरे नवलरँग लाल ।
वारौं मदनमतङ्गमद निरखि अनोखी चाल ॥ ८७ ॥

अथ मध्याअधीरालक्षणं बरवै।

प्रगट कोप सो मध्या, जब करि मान।
मध्या मिलत अधीरा, गति मति मान ॥८८॥

यथा सवैया।

भाँवरै दीवे को साँझही तै नाहि भूलत भोर लों मानि घरी है। कैसे परै कल या छल मै लछिराम हिये मति जानि थरी है॥ आरसी लोचन रङ्ग भरे नवलालिमा की मनु खानि हरी है। औरन के पहि-चानिवे को मनमोहन रावरी बानि परी है॥ ८६॥

सागर कुञ्ज कदम्ब तरें बिहरो बनसीबट प्रेम के टारे। आरस अङ्ग भरे इतै आवत छावत मोह कला मन हारे॥ मैन मरोर की बेदन सों लछिराम हियौ थहरात समारे। रैन बिहार सों रावरे के मद लाली भरे दृग बङ्क हमारे॥ ६०॥

दोहा।

करत साँझही सो लला औरन सङ्ग बिहार।
भोर इतै आवत भरे आरस मङ्गलचार ॥ ६१॥

मध्याधीरा धीरालक्षणम् – बरवै।

मन्द बचन मुख भाषै, बलित बिलाप।
मध्याधीरा धीरा, ग्रन्थन छाप ॥ ६२॥

सवैया।

लखि सांवरे की परभात छटा कहीं कीने बिहार कहावनि कै। लछिराम हमै बिसरे मन सो रचे भाग

बिरंचि इते ठनिकै। ढरे नैन सों आंसू कपोलन पै उपमा परमानी हिये धनिकै । अरबिंदधनी बिधुमण्डल पै धरै थाती मनो मुकतागनि कै ॥ ६३ ॥

कितै आये हो भोरभरे रंग मै मन कौन पै प्रेम पसारत है । चलै सीतलमन्द सुगन्ध समीर सरीर छ्वै धीर बिदारत है ॥ इतो बोलतहीं अँसुआ बरसे कुच पैं समता यों सवारत है । मकरंद के बुन्दन को अरबिंद मनो शिवसीस पै ढारत है ॥ ६४ ॥

दोहा ।

बिलखि बचन बोली कितै रहे रसीले लाल ।
बरसत खञ्जन मुकुरपर मनु मुकता की माल ॥९५॥

अथ प्रौढ़ाधीरा लक्षणम् — बरवै ।

उदासीन रतिबतिआँ, पतिहि सुनाय ।
प्रौढ़ाधीरा बरनत, बुध कविराय ॥ ६६ ॥

कवित्त ।

पागे हैं न प्रेम के न जागे रैनि बीच केहूँ लागे हैं न अनत न रोषरस भीनो है । लछिराम लोभी ये न ललके बियोग मेरे सुभग सँजोगहू न हरष नबीनो है ॥ फीके लालरंग हेरि ब्यौत करि सांझहीं सों अद्भुत रचना बिरंचि बनि कीनो है । मानो मुकताहल बिथोरि कै बदन नैन रंगसाज मदन मजीठ बोर दीनो है ॥ ६७ ॥

आये भोर अंकभरि बैठी परजङ्क पर संग राग रस को बिनोद बलक्यौ परै। अञ्चल सों बदन पर स्वेद पोछिबे कों हरि प्रेम को तरङ्ग रोमरोम छलक्यौ परै॥ लछिराम सकुच्यौ बिलोकि मंद बोली बाल क्यों न लाल सबको सुमन ललक्यौ परै। प्रतिबिम्ब लोचन हमारे को सुरङ्ग आज स्याम अंग रंग आरसी मै झलक्यौ परै॥ ९८॥

दोहा।

अञ्चल सों पोछन लगी बदन स्वेद सुकुमारि।
सुघर स्याम सङ्कोचबस करी निचौंही नारि॥९९॥

प्रौढ़ाधीर लक्षणम् - बरवै।

तरजन ताड़न संगम, जब रचि रोष।
प्रौढ़ अधीरा बरनत, कवि निरदोष॥१००॥

सवैया।

आये कहूं करिकै यों बिहार निहारिकै आँगन आई परी तैं। रोषभरी लछिराम यों आखैं ढरैं अँसुआ मुकतान लरीतैं॥ अंत न पावत जाको महेस सुन्यो करैं देवन की नगरीतैं। ता नँदलाल को या वृजबाल सरोष ह्वै मारै गुलाबछरी तैं॥ १०१॥

दोहा।

निरखि बिहारीलाल को भोर बदन वृजबाल।
बिलखौंही औगुन गनति हनति फूल की माल॥

प्रौढाधीरा धीरालक्षणम् - बरवै।

रूषो रति मै मन करि, भय दरसाय।
प्रौढ़ा धीराधीरा, कहि कविराय॥१०३॥

यथा कवित्त ।

आये कहूँ अनत बिहार करि मंदिर मै सामुहे झमकि छबि दामिनी की छोरे है । आरस बलित बागो मरगजी ढीली पाग बदन प्रस्वेद भाल भौंहन के कोरे है ॥ मरम खुल्यौ न अङ्ग परसत मोहनी को लछिराम सान सङ्ग भौहन मरोरे है। लोचन सुरङ्ग हेरि बालके सुरोष मानो रङ्गसाज मदन मजीठ रङ्ग बोरे है॥

बदन बिलोकि बनमाली को प्रभात औरे बानक बहाली बढ़ी मङ्गलीक मद पैं । कबि लछिराम जुल-फन के जँजीरे लसै कलित कपोलन के ऊपर बिहद पैं ॥ कंचुकी छुअत लाली उमड़ी दृगन ऐसी भूधन मरोर सङ्ग स्वेदकन कद पैं। रोषमान मण्डित मुकुत भासमान कोरैं मानो चढ़ी जुगल कमान कोकनद पैं ॥

दोहा ।

लखि बनमाली मुख चढ़ी लोचन लाली बाल ।
मनहु मार बिधु पींजरे पाल्यौ खञ्जन लाल ॥१०६॥

ज्येष्ठाकनिष्ठालक्षणं - बरवै ।

जुग व्याही तिअ जेष्ठा, जापर प्रेम ।
लघु प्यारी सु कनिष्ठा, बुध कबि नेम ॥

यथा सवैया ।

बैठी दोऊ सँग मंदिर मै तितै आयौ सुजान स-नेहन बोरो । व्यौंत रच्यौ मिलिबे को अचानक सा-मुहें हास बिलास बिथोरो ॥ एक की आँखिन पै पट

ओढ़ कै यौं लछिराम गयो बनि भोरो। एक के भाल कपोलन छ्वै कर मौज मै मंजु उरोज मरोरो ॥१०८॥

दोहा।

खेलत होरी महल मै जुगल नारि को नाह ।
इक अँखियान गुलाल भरि इक मुख चुम्बन चाह॥

अथ परकीयालक्षणं—बरवै।

रचै प्रेम परपति सों बुधिबल सङ्ग ।
बरनत तेहि परकीया रसिक प्रसङ्ग ॥
जुगल भेद प्रथमहि गनि ऊढ़ा बाम ।
दूजी बरनि अनूढ़ा रसिकललाम ॥१११॥

अथ ऊढ़ालक्षणं बरवै।

ब्याही अपर पुरुष सों, अपर बिहार।
ऊढ़ा तिय तेंहि बरनत, बुद्धिउदार ॥ ११२ ॥

कवित्त।

बासर सों गौन के न देखी देहरी मै द्वार बिधि-बस मग मै अकेली मधुबन की। जाकी डर सासु लै लै ऊरध उसास रही कहत कहानी तन मन के ठगन की॥ लछिराम जादूगर औचक मिल्यौ सो हर्‍यौ सरबस माई प्रभुताई मै लगन की। लोक लाज भूली हरि माधुरी हँसनि हमै भूली वृजराज कों स-माज गोपगन की ॥ ११३ ॥

गुञ्जत मलिन्द मतवारे कुञ्ज बावरी मै मण्डित सुमन लै मरन्द सुख भारी को। कबि लछिराम कल कोकिल कुहूक तैसी लहक समीर बेलि बनक सवारी

को ॥ सकल समाज सङ्ग लोक लाज वारि आज परसन चाहैं पीत बसन किनारी को। बिहरत वृज बन बागन बसन्त बीच औरै मन होत हेरि बदन बिहारी को॥

देख्यो मैं न अबलों त्रिभंगरूप साँवरे को सुनत रहीहौं रंग बन बिरचत है। नीर भरिबे को सासु हठ मै पठाई ह्न्यौ हिलिमिलि मानस लकीर यों खचत है॥ लछिराम कीने उपचार सों कढ़ै न पीर दूनी काम कैला सों करेज परचत है। लोकलाज वारो प्रेम परखि हमारो प्यारो पीतपटवारो पूतरीन मै नचत है ११५॥

दोहा।

मनमोहन ससिबदन को मम चख चारु चकोर।
दृग अरबिंदन पै बसत मन सरूप रचि भौंर॥११६॥

अथ अनूढ़ालक्षणम् बरवै।

बिनहि व्याह जो बिरचै परपति प्रेम।
बाम अनूठा बरनत कवि करि नेम॥११७॥

यथा सवैया।

गौरि सों गोपकुमारी कहै वृजलोग न केहूं कलंक लगावैं। बासर व्याह लुगाई सबै मिलि कै लछिराम सुमङ्गल गावैं॥ भोरही त्यों दुलही बनि कै हरा हीरक मोतिन के पहिरावैं। या बर दीजियै सांवरे संग मै रावरे के पग पूजन आवैं॥ ११८॥

लूटतो तो मनमोद बिसाल औ छूटतो भाल कलङ्क को भारो। लोगलुगाइन की चरचा मै चहूंदिसि

फैलतो नाम सँवारो ॥ तो भरि तौलि कै तौ मुकता लछिराम मै देती जो ठ्यौत बिचारो ॥ यों दुलही करिकै बनतो कहूँ दूलह जो बृजराज हमारो ॥११६॥

दोहा ।

यौं बर दै शिवसुन्दरी या फागुन के मास ।
स्याम संग होरी सजौं बिन कलङ्क परिहास ॥१२०॥

अथ षट्विधि परकीयालक्षणम्—बरवै ।

षट्विधि सो परकीया, बरनत बेस ।
गुप्ता अपर बिदग्धा, ग्रन्थन देस ॥१२१॥
बहुरि लच्छिता कुलटा, मुदिता मानि ।
अनुसैना फिरि बरनत, कवि सुखदानि ॥१२२॥

अथ गुप्तालक्षणम्—बरवै ।

गुप्ता प्रथम बखानत, बुध बिन खेद ।
भूत सुरत संगोपन, सुमति सुभेद ॥१२३॥

कवित्त ।

फेटा बंक चूनर कछोटा घाघरो को लङ्क काखा-सोती चादरा अतंक भो संवारे सो । भूषन उतारि भरि भाजन मै गोरस के अंगराग अंजन दुराई दृग तारे सो ॥ बेग मै कपोल कुच कंटक लगे है बन लछिराम सांची मानि सीख लै हमारे सो । हौं तो बचि आई बनि छोहरा छबीलो वीर कैसै तू बचैगी मग जुलफनवारे सो ॥ १२४ ॥

बछरा हमारो बजमारो वा बिछलि भाज्यौ घनबन बीथिन मै आतुरी परम सो । पीछे भरी भरम प्रकास

फन हेरि हाय छपी कुञ्ज केतकी मै दूने अकरम सो ॥ लछिराम चोली चार चूनर फटी है बिधे उरज कपोल कैसे खोलों मै समर सो । बिधि नै बचाई दुखदाई व्याल बावरे तैं राम की दोहाई देवि रावरे धरम सो ॥ १२५ ॥

दोहा ।

भारी गागर लै चली सनी सेदकन बीर ।
सराबोर चूनर भई बिथुरी अलक जँजीर ॥१२६॥

वर्तमानसुरतसंगोपना बरवै ।

बर्तमान रतिगोपन, जब करि बाम ।
दूजो भेद सुगुप्ता, बरनि ललाम ॥ १२७ ॥

कवित्त ।

आयौ भोर भूलि काहू और की भरम छाँह निरख हमारी यौं लकीर सों खचै गयौ । हरबर कीने बन्द खिरकी किवारे छूटे बार टूटे हार तन थरक रचै गयौ ॥ लछिराम लोगतऊ करत चवाब जऊ मोको वह कहल कलङ्क सो बचैगयो । काहल परी हौं या कोलाहाल मै राम घरीं घोरिकै हलाहल जलाहल मचै गयौ ॥ १२८ ॥

नाथ्यौ कुलकालिआ सक्रोध चन्द्र भालिआ सो ख्यालिआ खलक जैत जौहर जमाको है । आलिआ न सङ्ग हेरि डालिआ कदम्ब नाचि अजब उतालिआ उमाही अरमा को है ॥ लछिराम लोभी तन हालिआ त्रिभङ्ग चढ़ी लालीआँ चखन इंद्रजालिआ जहाँको है ।

बालिश्राकरन बनमालिश्रा बजरमारो चूमिगो हमारो मुख चालिश्रा कहांको है ॥ १२६ ॥

काछनी कमर पीरी पाग अलबेली सीस जुलुफ जजीरे मै हमारो मन हलिगो। कवि लछिराम काम नट सों लपटि कण्ठ भाल भुज मूलन पै केसरि मसलिगो॥ होहूँ घेर घूँघट उलटि चटकीनी दाबि फेरि छरकीलो छैल रोरी मुख मलिगो। जौलों बरजोरी मै मरोरी बनमाल माय तौलों मतवारो मेरे हाथ सों बिछलिगो ॥ १३० ॥

दोहा।

औचक आवतही मिल्यौ मधुबन मै मृगराज ।
या अहीर को छोहरा राख्यौ तन अरु लाज ॥१३१॥

भविष्य सुरतिसङ्गोपनालक्षणं—बरवै।

होनहार रति गोपन, बिरचै रीति।
भबिष सुरति संगोपन, सुमति सप्रीति ॥१३२॥

सवैया।

भोरही मोर चकोर बली मुखपान करैं जल घाटन घेरे। भीतर भाँवरे देत मलिन्द सकण्टक नाल निकुञ्जल फेरे॥ कंचुकी सारी कपोल उरोज बिधैं लछिराम न मानिहैं टेरे। बावरी के अरबिन्दन हेत न जायहों माय मै आज सबेरे ॥ १३३ ॥

साँकरी खोरि मै छोहरे वै बरजोरी करैं कहि होरी को नामै। डारत रङ्ग को चूनर पै रचैं ऊधम औचक आठऊ जामै॥ ये बचि आयहैं तो लछिराम कहैं

बिन कालि करौं सब कामै। भाभी को आज पठाय दै माय तू गोरस बेचन कों मथुरा मै ॥ १३४ ॥

दोहा।

देवि सुमन हित जाँउगी वा मधुबन की गैल ।
मारत मूठि गुलाल हठि वा अहीर को छैल ॥

बचनविदग्धालक्षणं – बरवै।

बचनरचन मै जाके, रति रस रङ्ग।
बचनविदग्धा बरनत, बुधिबल सङ्ग ॥ १३६ ॥

यथा सवैया।

सहज सिँगार भाल लङ्क ना सहत केहूँ लचकी परत हार पैजनी उतारे सों। कवि लछिराम सराबोर कोर कंचुकी त्यौं मसकी परति कुचकोर के किनारे सों ॥ मानि बिनती को गैल छैल छरकीले छाप छूटि जैहै केसरि कपोल सजवारे सों। मेरे कर कमल बझे हैं सुरझावों कैसे मेहदी बचैगी बार बेसरि सँवारे सों ॥

नैहर गई हों भोर भाव मै बलाई भले भाभी रच्यौ रङ्ग नखसिख सानि हीरे सों। औचक अकेली खोलि खिरकी किवारे चलीं सराबोर सेद भार जोबन गभीरे सों। भाँवरै भरत भोरैं लोभी लछिराम नेक दूरि करि दै तूँ फहराय पटपीरे सों। हायल घरी सो हेरि जुलफन वारे ग्वाल झारिदै गुलाल बङ्क अलक जजीर सों ॥ १३८ ॥

सवैया।

भाभी नै भोरै लई बड़ी जानिकै दीनी कुभाँरिनि

वा बजमारी। तार सी लङ्क लचै कुच भार तै हायल पैजनी हार उतारी ॥ यौं लछिराम उठैगी न मोसों परी है भरी जल भीतर भारी । नागर हे बिनती करों तोसौं उठाय दे गागर यार हमारी ॥ १३९ ॥

दोहा।

बरसत बारिद बारि बर डरति अकेली आय ।
छैल कामरी सों तनक चूनर लै तु बचाय ॥ १४० ॥

अथ क्रियाविदग्धालक्षणम् बरवै।

बुधि बल करै क्रिया सों, व्याज सुरूप ।
क्रियाविदग्धा बरनत, कबिकुल भूप ॥ १४१ ॥

सवैया।

टेरत है मन फेर की तान मै औरन को बलि व्यौंत बिचारो । भावरैं दै लछिराम घनेरी न घात लगे अबलों मन हारो ॥ साकर मोही सों होत है बंदन दूसरे को मिलै फंद किवारो। जादूभरो खिरकी मग ह्वै कहूँ आवे न भीतर बाँसुरीवारो ॥ १४२ ॥

बैठी तिआ गुरलोगन मै जहां जूह चवायनै घेरि रही है । आयौ तितै मनमोहन मौज मै आली भले सुख टेरि रही है ॥ चातुरी मै लछिराम सोहागिनि सानही मै रुष फेरि रही है । पीठि कै प्यारे की ओर यौं सामुहे आरसी मै मुख हेरि रही है ॥

दोहा।

पीछे आलिन के खड़ी आयौ मदनगोपाल ।
घूँघट झीने चीर मग लखति अनोखी चाल ॥ १४४ ॥

अथ लक्षिता लक्षणम् — बरवै ।

जासु प्रीति को परखै, दूजो बाम ।
ललित लच्छिता बरनत, तेहि लछिराम ॥१४५॥

कवित्त ।

पुलकि पसीजे गत अंजन अधर पर भाल छबि छोरे लेत मदन मसाल की । लछिराम छूटी अलकन मै अबीर कन बिकसे कपोलन पै रेखै रदहाल की ॥ आनँद अनंग अंग दुरत न बाल केहूं आँगुरी अनूठी मैं अँगूठी यह लाल की । मरगजे अंचल पै उपटी परत आभा फैली फटी कंचुकी पै गरद गुलाल की॥१४६॥

मरगजी चूनर चटक स्वेद रंगन मै सराबोर आँगी फटी लट बिथुराई है । टूटे बनमाल छूटे अंगराग अंगन तैं लूटे सुख रोम रोम छबि छलकाई है ॥ कबि लछिराम कित बिकसे उरोजन पै नील नख जालन की रेखैं सरसाई है । कौन के अधर पै बगारि बङ्क लोचन कों अङ्कभरि काजर कलङ्क धरिआई है ॥१४७॥

सौरभ तरंग छाये छलकि समीर संग बागबन बीथिन मलिंद अटके फिरै । ठौर ठौर भूतल प्रकास जरतारिन मै साझही सो चाहकि चकोर खटके फिरै॥ लछिराम स्याम घन दामिनी सँजोगही मै कालिह सों मयूर मतवारे भटके फिरैं । मंगलीक टूटे लर मोतिन के हेरि मंजु मौजमान माहिर मराल मटके फिरैं ॥ १४८ ॥

बेसरि बहाली बर बदन अमंद बीच मुकुत प्रभाली तैं लोनाई ललकति है । कबि लछिराम लूटे मोद से उरज नख छूटे बंकवार मैं लवाई बलकति है ॥ जोबन तरंगन अनंग रंग संग चढ़ी लोचन मरोर मैं ललाई छलकति है । अंगन सो उपटि सुरंग साल चादरे पै कुंदन तबक लों गुराई झलकति है॥१४९॥

दोहा ।

कलस उरोजन पै लसी नवल नखन की रेख ।
मनहु सिखर पै संभुके प्रथम कला ससि बेख॥१५०॥

अथ कुलटालक्षणम्—बरवै ।

बहुत पुरुष सो चाहै स्वबस बिहार ।
कुलटा तिय तेहि बरनत बुद्धिउदार ॥ १५१॥

कवित्त ।

छूटे बंक बार खुले घूघट मरोरदार जोबन बहाली मैं न आँगी पहिरति है । फहरात अंचल दृगंचल चपल आखैं लोगन की भीर मैं अनोखी अभिरति है ॥ लछिराम छायो अंग ऊपर अनंग रंग सौरभ तरंग भौर मंडली घिरति है। बदन प्रभाली बेस बसन गुलाली मंदचाल मतवाली मतनाली सी फिरति है॥

छूटे केस भार सारी सराबोर केसरि मैं बेसरि मरोरी कोन केहू दरसति है । जोबन बहार मैं अनंग रंग रोम रोम छलक्यौ परत मानो छबि परसति है॥ लछिराम संक लाज दूरिकरि लोगन मैं अंकभरि भाल

भूकपोल परसति है । चाल मतवाली मै निहाल गु-
जेरटी हाल ग्वालन पै झपटि गुलाल बरसति है ॥

दोहा ।

सबही सों बोलति हँसति बसति सबन के संग ।
बिहरति मन मौजनि भर्‍यो मानहु मदनमतंग ॥

अथ मुदितालक्षणम् — बरवै ।

मनचाह्यौ फल प्रगटै आनंद संग ।
मुदिता तिय तेहि बरनत कबि नवरंग ॥१५५॥

कवित्त ।

ऊधम धमारि के मनोरथ मै आई कुंज मंद मंद खिरकी किवारे खोलिडारिकै । लछिराम छाम लंक बंक बार भारन तैं लचकत केहूँ भौर भीर मै सँभारिकै ॥ बैठी दुरि हायल उतारि हार पैजनी को जोबन बहार फैली बाहिरैं सँभारिकै । जौ लों बाल ख्याल पै सरसरंग फाग तौलों मारी लाल भाल पै गुलाल मूठि भरिकै ॥ १५६ ॥

सहज सिंगार साज सावनी सुमन हेत आई मनु मधुबन दरसन लागे हैं । कबि लछिराम लोट पोट त्यों लटू भो लाल हाल बाल मन तैसे तरसन लागे हैं ॥ भारी भीर लोगन की साँझी मै भभरि चली रोम रोम जौ लों प्रेम परसन लागे हैं । गरजि गरजि बृजमंडल अँधेरी छाय तौलों मेघ मंद मंद बरसन लागे हैं ॥ १५७ ॥

दोहा ।

नागरि नागर मिलन हित आई सागरतीर ।
तौलों कढ़्यो बितान सों फहरत पीरो चीर ॥१५८॥

अथ अनुसयनालक्षणम् बरवै ।

थल बिहार के बिघटत लखि उर पीर ।
प्रथम कहत अनुसैना तहँ मति धीर ॥१५९॥

कवित्त ।

संग निज पीतम के बैठी रंगरावटी मै भरमत भौंर छाये आँगन हरीरे सो । लछिराम रतन दरीचो खोलि मुरझानी लहके निकुंज भरे ज्वालके जर्जीरे सो ॥ साँकरे परी है कछू मरम न खोलै बोलै तपन लगे हैं तन बिरह गभीरे सो । सीरे पौन परस न मन बरमासे हेरि पीरे होत बदन बसंत बन पीरे सो ॥

सावन के पांचै की परब सुनि आई सांझ रह्यौ मग अजब उमाह ललना को है । कबि लछिराम लोग ललके तमासे छोड़ि छलक्यो सरूप रंग जोबन अदा को है ॥ मरम न जान्यौ घेर घूघट खुलत कैसो ह्वै रह्यो बदन पीरो सरम सनाको है । थहराति पारद की पूतरी लों तीर प्यारी हेरि भौर भारी मै प्रवाह जमुनाको है ॥ १६१ ॥

दोहा ।

बरसत घन बन बारि बर पङ्क सु पाईबाग ।
नागरि मालिनि सो कहति पावस तैं भल फाग ॥१६२॥

द्वितीय अनुसयनालक्षणम् — बरवै ।

ह्वैबे हित संकेतहि जो रुष ठानि ।
अनुसयना सो दूजी कवि सनमानि ॥१६३॥

यथा सवैया ।

सासुरे तेरे निकुञ्ज घने तरु तीर मै फूलि रहे लफवारे। बारहो मास बसन्त मनो भरैं भांवरैं भौंर सरोज सँवारे ॥ लोग सुखी बसैं त्यों लछिराम जे बासरहूं करै बन्द किवारे । त्यों मतवारे मरालिनी संग मराल चुनै मुकुतावली चारे ॥ १६४ ॥

सुन्दरी सोच करै मति सासुरे की वै सहेली सुजान घनेरी । तीर नदी के निकुञ्ज सोहावने गुञ्जत भौंर लतान घनेरी ॥ मन्दिर मै खिरकी कई ओर कियो लछिराम सनेह नयेरी। भाग भरी धनी बागन मै रहै बासर सावन मास अँधेरी ॥ १६५ ॥

तीसरी अनुसयनालक्षणम बरवै ।

थल बिहार तैं फिरिबो पिय को जानि ।
तीजी अनुसयना सो दुख की खानि ॥१६६॥

कवित्त ।

खिली चारु चौसर अकेली रंग रावटी मै मुख पर वारों चन्द्रमण्डल मरीची मै । बासुरी खरज टेऱ्यो पीतपटवारो उठी सासुहें झमकि हाथ नरद उलीची मै ॥ कवि लछिराम तऊ पलक न खोली जऊ घन सार बरफ गुलाब जल सींची मै । चौलरो चमेली

कौन बेली गरे हेरि परी पारद की पूतरी लौं थरकि दरीची मै ॥ १६७ ॥

बिरचत बेनी रही बन्द कोठरी मै बैठी जोंबन बहार जागी जोति अवली की है। सहज सिंगार मै झमकि चली जौलों तौलों बांसुरी मधुर सुर बाजी हरि जी की है ॥ लछिराम स्यामकर सुमन छरी की छटा परखि परी की परी मति गति फीकी है। ओढ़ झाझरी की भरी स्वेदन सचोट मानो लोटत मही मै मारी मीन बनसी की है ॥ १६८ ॥

दोहा।

लखी अटा तें बाल गर बनमाली बनमाल।
मुरझि सेज पै थरहरी भरी बिरह कत हाल ॥१६९॥

अथ सामान्य लक्षणम्—बरवै।

प्रीति जाहि धनही की सहित सिंगार।
सामान्या तेहि बरनत राग बिहार ॥१७०॥

कवित्त।

नख सिख भूषन सँवारे लाल हीरन के बसन सुरंग हरी कंचुकी सजाय कै। राजै रंग रावटी के भीतर उमङ्ग भरी अरगजा चंदन गुलाब छिरकाय कै॥ सींकजुत नासा भाल नौरतन बेदां पर सरब सँवाऱ्यो लछिराम ललचाय कै। बिहँसि गोपाल के गरे सों लई माल बाल गजमुकता की गुञ्जमाल पहिराय कै ॥१७१॥

सरसत सौरभ तरङ्ग रंगमन्दिर मै मङ्गलीक मुख छबि अलक जजीरे की। चंपई बसन बूटेदार कंचुकी

सुरंग जगमग जोति फैली लगन गँभीरे की॥ मन्द हांस भूधनु मरोर संग लछिराम राग माधुरी त्यों फन्द चितवनि धीरे की। प्यारो मन ललकै बहार पर जोबन के प्यारी मन ललकै अँगूठी हेरि हीरे की ॥ १७२॥

दोहा।

करि सिंगार नव सुन्दरी सहर बीच सुभ रंग।
तन मन धन हित नागरन उघटति तान तरंग ॥१७३॥

अथ अन्य सुरत दुखितालक्षणम् – बरवै।

और तरुनितन हेरै पियरतिदाग ।
अन्यसुरतदुखिता सो दुखित बिराग ॥ १७४ ॥

यथा सवैया।

बीर तुमै कहां बेर भई बलबीर फँसे बनसीबट ख्याल मै। सारी कितै सराबोर प्रस्वेद खुली अलकैं अबै आतुरी चाल मै ॥ राग उरोज कपोलन पै लछिराम सुकेतकी कण्टक जाल मै। मेरे बियोग मै तो पर मानो सँजोग सुरूप रच्यो ततकाल मै ॥१७५॥

दाग परे कहां ओठन पै अनुराग मलिंदन जाल कियो है। स्वेदसनी कहां बेनी छुटी छली मोर मनै घनमाल छियो है ॥ या गरे मै लछिराम कहा भयो रावरी प्रीति सराहि लियो है। प्यारी तिहारी प्रतीति के हेत गोपाल हमै बनमाल दियो है ॥ १७६ ॥

दोहा।

फटी कंचुकी छत उरज सनी स्वेद अलि हाल ।
तुअ दरसन की चाह बन कही बेग नँदलाल ॥१७७॥

अथ मानिनीलक्षणं—बरवै ।

मान करै जो पिय सों कछु हट ठानि ।
कहत मानि नीतिय तेहि कबि सुख दानि ॥

कवित्त ।

बेसरि उतारि बैठी रतन चऊतरे पै जगमग्यौ बदन सरूप सजवारे सो । लछिराम छाई भाल भूपर चमक औरै हेरि लाल तनमन थरकत पारे सो ॥ परम प्रकासमान भूधन मरोर बीच लोचन सुरङ्ग रोषमान मद ढारे सो । ओजमान अजब तरङ्ग सारदा मैं खिले कोकनद मानो मार धनुष सँवारे सो ॥

बीरी बिन अधर बहाली पै अजब लाली लोचन गुलाली भरैं सुखमा झपटि कै । लछिराम नासिका अमोल बिन बेसरि त्यौं सरसे कपोल कोकनद श्रीरपटि कै ॥ फूटी परे जोति अङ्गराग बिन अङ्गन की बसन सुरङ्ग पर दामिनी दपटि कै । मानिनी को बदन बिलोकि बृजराज आज बिक्यौ बिन दामन सुदामन लपटि कै ॥ १८० ॥

रोष सुनि पारे लो थरकि रहे रोम रोम हारे से बिचारे अङ्ग धीरज रितै रहे । ओट मैं सहेलिन के लछिराम केहूँ करि सामुहे सरस बिथा-बृन्दनि बितै रहे ॥ बारि तन मन दूरिही सो बृजचन्द और मान करिवे के हेत हरष हितै रहे । अरुन अमन्द बिन बेसरि बदन हेरि चित्रके लिखे से घरी चारि लों चितै रहे ॥

कुन्दनतबक सी गोराई की भभक फैली औरै आबदारी अङ्ग मरगजी सारी तें । लछिराम छूटे बङ्कवार भार लङ्क पर भाल मै छटा त्यों न बेसरि सवारी तें ॥ अब पहिरैगी कैसे पहिरन देहैनाहि मानको सुखद बूझै रसिकबिहारी तें । चाहक भयौ है रूप गाहक बदन हेरि नाहक हठीली हाय बेसरि उतारी तें ॥

दोहा ।

लखि सरोष मुख बालको मान मनोहर संग ।
मनहु अंग छबिदेन को बैठ्यो भाल अनंग ॥१८३॥

अथ वक्रोक्तिगर्विताललक्षणम् — बरवै ।

द्वै बक्रोक्ति गर्विता गनिक बिदेस ।
प्रेमरूप के गर्वहि मानि सुवेस ॥ १८४ ॥

अथ प्रेमगर्विताललक्षणम् बरवै ।

गर्व प्रेम को जहँ लखि सहित उछाह ।
प्रेमगर्विता बरनत तहँ कबिनाह ॥ १८५ ॥

कवित्त ।

बुन्द मेहदीके बैठी धोवत रही मै भोर सामनो पऱ्यौ त्यों जादू जुलफन वारे को । लछिराम लोभी लँगराई मै लपटि वाऱ्यो सराबोर स्वेदकन नौरतन थारे को ॥ राम की दोहाई मोसो बोलत बन्यौ न माई थरक्यौ मुकुट मङ्गलीक मतवारे को । चखन लगाय चूम्यौ थाती लौं कृपिन राख्यौ छाती मै छपाय मेरे हाथ गजरारे को ॥ १८६ ॥

चंपई बसन कोरैं सबुज सुरंग पर सुरधनु रंग को बिनोद बिरचत है। झनकार पैजनी पै गरजनि माधुरी पै मन्द करि भू पर लकीर सों खचत है ॥ लछिराम लोचन तिरीछे की लखानि छेम छाती मै लगायबे को प्रेम उमचत है । गोहन हमारे छूटे बार घन छोहन मै पीछे मनमोहन मयूर सो नचत है ॥

सहज सिंगार साजि आई मधुबन सुनि झनकार पैजनी की पीछे तें रपटि गो। राई लोन वारि सुघराई मै सराहि लछिराम त्यों लजीलो लाजपट को कपटि गो ॥ छाई भौंर भीर मग राम की दोहाई लागे सहज समीर घेर घूंघट दुपटि गो। पोखराज मोगरा गोराई पर वारि माई लोभी लँगराई करि मोगरे लपटि गो ॥ १८८ ॥

सामुहे सुमन बरसाई सुघराई संग लछिराम रंग सारदाहू को रितै रहे । छाती मै लगाय सूमथाती सो कमल कर सुकुमारताई को सराहि दुचितै रहे ॥ अलक लवाई चारु चख चपलाई अधरान की ललाई पर हरष हितै रहे ॥ माई मनमोहन गोराई मुखमण्डल पै राई लोन वारि घरी चारि लौं चितै रहे ॥

घर सों चली मै घरी द्वैक दिन बाकी रह्यो भौंर बन घेर्‌यो घूमि चारिहू तरफ के । कवि लछिराम कुञ्ज बिकल बिलोकि बस बोल्यो बैन मानो मन्त्र मोहन हरफ के॥ चंदन गुलाब घनसार जऊ घोर्‌यो

बोन्यो बीर बलबीर हमै नीर मो बरफ के । भूधनु कपोल भाल पलक अलक तऊ सूखे न प्रस्वेद जो प्रकासे रवि रफ के ॥ १६० ॥

दोहा ।

निरखि स्वेद मुख सेज पै बिकल होत बलबीर ।
छिरकत मोलि उसीर मै घन गुलाब के नीर ॥

अथ रूपगर्विता लक्षणम् - बरवै ।

गर्व रूप को जहँ तिय बिरचति बेस ।
रूपगर्विता तहँ कहि सुकवि नरेस ॥ १६१ ॥

यथा सवैया ।

मोगरा चंपा चमेली को हार गरे पहिरायो प्रकास प्रभाली । आपने हाथन राती कलीन लै बेनी रच्यो सुभ सौरभवाली ॥ भाल के बीच दिठोना के देत भई लछिराम छटा सम साली । लाल कह्यो बिधुमण्डल सो मुखमण्डल पै चढ़ी बाल के लाली ॥१६२॥

चारेहू ओरते चोथैं चकोर यौं भौंरकी भीर कहाँ मडरैहों । भौर त्यों मोर मराल की पीछे तिरीछे निहारतही थकि जै हों ॥ तापर लोगन को उपमान सुने लछिराम कहाँ लों बचैहों । बासर मज्जन हेत मै बीर न आज तें सागर तीर मै ऐहों ॥ १६३ ॥

दोहा ।

होरी मै बृजलोग जब कहत बिज्जु सी बाल ।
मानस मो तब जगत है मानहु मदन मसाल ॥

अथ दसनायकालक्षणं—बरवै।

प्रोषितपतिका बरनत प्रथम प्रबीन।
बहुरि खण्डिता मानत जे रसलीन ॥ १९५ ॥
कलहंतरिता पुनि बिप्रलब्धा बाम।
उतका बासकसज्जा कहत ललाम ॥ १९६ ॥
स्वाधिनपतिका पुनि कहि ग्रन्थन देस।
अभिसारिका प्रवस्यत प्रेयसि बेस ॥ १९७ ॥
आगतपतिका संजुत ए दस बाम।
प्राचीनन मत बरनत यह लछिराम ॥ १९८ ॥

अथ प्रोषितपतिकालक्षणं—बरवै।

जा पिय बसि परदेसै व्याकुल बाम।
प्रोषितपतिका मानै बिरह सकाम ॥ १९९ ॥

मुग्धा प्रोषितपतिका—यथा सवैया।

भोरही वे तो गये कहि काल्हि को आजके बासरहीं तरसै है। खोलै न घूघट को लछिराम कपोलन आसुन सों सरसै है॥ बीतिहै कैसे बियोग मैं रैनि मनो करकी चिनगी बरसै है। साझ तें बीर निसाकर या दुलही को दिवाकर सो दरसै है ॥ २०० ॥

कछु खोलै न आपने जी की कथा न प्रसङ्ग रचै अलि भीरन की। लछिराम त्यों साज्यौ सिंगार न चाहै लरै मुकता मनि हीरन की॥ मनही के मसूसन मैं मसकै कसकै मढ़ी मन्द समीरन की। नवला नवबेलि सरीर कहाँ कहाँ पीर मनोज के तीरन की॥

अथ मध्याप्रोषितपतिका—सवैया ।

बन सों न गये पहिलें हठमै न भये बरजोरी के सङ्गन मे । धरे सीस पै बासर औधिके त्यों परे हाय ठगोरी प्रसङ्गन मे ॥ लछिराम कहाँ रचौ ऊबिकै यों मचो ऊधम गोरी के ढङ्गन मे । तब तो मन पापी न सँग चले मचलो कत होरी के रङ्गन मे ॥ २०२ ॥

पूस के पाले सहे बड़े धीर मै रैनि बिताई महा-तमवाली । होन लगो बन भौंरँ के झौंरँ कुहूकति कैलिया त्यों मतवाली ॥ सङ्ग तजे को यही फल है लछिराम लखो किन रङ्ग प्रभाली । कादर कैसे परो मन सामुहे किंसुक औ कचनार की लाली ॥२०३॥

जब वे भये बाहिरे मंदिर के न गही बहियाँ तुम प्रानन की । चल्यौ औसर आहि मै ऊवत हौं रही आस अकेली जवानन की ॥ लछिराम महां मचलो हमसो मन सूरति मै हरि आननकी । अब ओट गहो क्यों सँदेसन की सहो चोट मनोज के बानन की ॥

दोहा ।

पाती रँगराती लखति छाती मै लपटाइ ।
बरनति बिरह बितान सब मनु मन मनहि मिलाइ॥

अथ प्रौढ़ाप्रोषित पतिक सवैया ।

पाती लिखी पहिलेही तुमै तब सो इतै औरैं छटा दरसैं लगीं । त्यों लछिराम कदम्ब के पातन जीगन

की चिनगी सरसैं लगीं ॥ भूमि हरी लता फूली फली लहराय तमालन को परसै लगीं। नीर के व्याज मनोज के तीरन सांवनी स्याम घटा बरसै लगीं ॥२०६॥

अब दामिनी नीरदमान समय निसिवासरैं आनँद फेटति हैं। बृजकामिनी क्यों लछिराम रहै तम जामिनी तेजनै मेटति हैं ॥ परवाह मै अंग सभारैं न त्यों रज तीखे तरंग लपेटाति हैं। नवनागरी सांवन मै बनि कै सरिता सब सागरै भेटति हैं ॥ २०७॥

दोहा।

अब बसन्त आगमन बृज बनमाली परदेस ।
होनलग्यो बनबाग अलि कोकिल भ्रमर प्रबेस ॥२०८॥

अथ परकीया प्रोषितपतिका सवैया।

काल्हि सों दच्छिन पौन चल्यो मचले से मलिंद फिरैं मतवारे। पीरे परे बनबाग बसन्त के आवत पावड़े पुञ्ज पसारे ॥ या लछिराम बियोग लखें मन सांकरे मै सब होत बिचारे। मैं रहों याही मसोसन मै कब ऐहैं परोसिनि प्रान तिहारे ॥ २०९ ॥

रची प्रीतिकथा कुलकानि मिटै सिगरी बतिआन को जानत हैं। बृजबासर बीर बसन्त लग्यो कछू दूसरो ठान त्यों ठानत हैं ॥ जोपै ऐहै न जामिनी भीतर त्यों लछिराम यही परमानत हैं। करि दूबरी नेकही बेलि हमै अब कूबरी को पहिचानत हैं ॥ २१० ॥

दोहा।

बिरहबिथा कासों कहै नवनागर बिन बाल।
मनही मन मुरझाति है पति मिलापहू हाल ॥२११॥

अथ गनिकाप्रोषितपतिका —सवैया।

सावन बासर बीच बियोगबिथा की कथा कहो काहि सुनैहैं। कौन के सङ्ग हिंडोर के ऊपर तान तरङ्ग की धूम मचैहैं॥ साजि सिंगार सबै लछिराम हरे हँसि साझही बोलि पठैहैं। चौहरे चारु अटा चढ़ि कौन के हाथ सों चम्पई चूनर पैहैं॥ २१२॥

दोहा।

बेदन मन कासों कहौं वै सुजान परदेस।
जा मुख हेरतही मनहु मंदिर रमा प्रबेस॥ २१३॥

अथ खण्डितालक्षणं बरवै।

प्रिय सचिन्ह करि आवै अनत बिहार।
लखत खण्डिता रूसै बिबिधि प्रकार॥ २१४॥

मुग्धाखण्डिता—कवित्त।

अनत बिहार करि आये परभात घरै आरस ब-लित फहरात पट छोरै हैं। लछिराम लाल भाल जु-लफ अबीर कन हेरत नबेली दूरही सों मुख मोरै हैं॥ कोरैं बङ्क लोचन मैं लहरात लाली कछू भीतरै सु घूंघुट के भूधन मरोरै हैं। परसत अङ्क परछाहीं तें बिछलि सेज नाही करि बाहीं को झमकि झक झोरै हैं॥

दोहा ।

घूघट पट झीने लखति भाल साँवरो लाल ।
नवल बधू मुरकति मिलति मन लजारुं तरुमाल ॥

अथ मध्याप्रोषित पतिका - कबित्त ।

ऊधम धमारि को मचायो धूम औरैं सङ्ग रङ्ग भरे आये भोर सामुहे सहल मे । कबि लछिराम रोम रोम कामिनी के बरे बिरह दवा से जऊ चन्दन चहल मै ॥ डोलति न बोलति न खोलति मरम कछू वारों मार पूतरी सुरङ्ग झलाझल मै । बलबीर बदन बिलोकति अबीर वीर बरसत आँसू तसबीर सी महल मै॥

दोहा ।

भोर स्यामसिर पै लखी वा ओढ़नी सुरङ्ग ।
बरसति आँसू लाल दृग करति न सनमुख सङ्ग ॥

अथ प्रौढ़ाखण्डिता—यथा कवित ।

लाल भाल जुलुफ जजीरे पै प्रस्वेदकन लटपटी पाग लों अनङ्ग रङ्ग छाये हो । बदन बहाली बङ्क लोचन गुलाली मन्द चाल मतवाली छत बसन छपाये हो ॥ लछिराम प्राननाथ रसिक सुजान आज सान सङ्ग भान सो प्रताप सरसाये हो । सुलह भयौ न भोर गौन लों हमारे भौन मौन अब कौन सों कलह करि आये हो ॥ २१९ ॥

बदन बलित भाल मण्डित प्रस्वेदमद भावैं भरत भौंर लागे भोर सङ्ग से । छतवान मानस कपो-

ल रद पट सोहैं चाल मटकीली जगे जोबन तरङ्ग से ॥ राई लोन वारि लछिराम तू निहारि सौहैं लपटे पराग बन कुञ्जरी प्रसङ्ग से । रङ्गभरे बदन सुरङ्ग झपकीले नैन झूमत हमारे हरि मदन मतङ्ग से ॥

मन्द मन्द डोलैं मन मरम न खोलैं बोलैं कूकत कलोलैं रङ्ग मुख अरुनारे से । अजब अबीरी खेत ओढ़नी लसी है अङ्ग मानस बिराजे मुकताहल सवारे से ॥ कबि लछिराम राजनीति नीर छीर गुन बिसरि गये हैं कछू बिरह हमारे से । राजहंसिनीन के बिहार बस मानो राजैं बर बृजराज राजहंस मतवारे से ॥

मरगजे बागे लटपटी कासमीरी पाग टपक्यौ परत राग मानो मुख बर सो । कबि लछिराम अरसीले बङ्क लोचन पै मुकलित वारों कोकनद सरवरसों ॥ लाली पै अधर के लकीर कल काजर की पलकन कीने अनुराग हरबर सो । मीजे बनमाल मनभावन हमारे किते पुलकि पसीजे भीजे कम्बर अतर सों ॥

बदल्यौ बसन तो जगत बदलोई करै आरस मै होत ऐसो यामै कौन छल है । छाप है हरा की कै छपाये हो हराको छाती भीतर झगा के छाई छबि झलाझल है ॥ लछिराम होहूँ धाम रचिहों बनक ऐसो आँखिन खवाये पान जात क्यों अमल है । परम सुजान मनरञ्जन हमारे कहो अञ्जन अधर मै लगाये कौन फल है ॥ २२३ ॥

दोहा ।

लाल भाल मै राजश्री आज बसी बृजनाथ ।
मो उर सीरो होत लखि बसे रैनि किन साथ ॥२२४॥

अथ परकीया खण्डिता यथा—कवित्त ।

प्रीति रावरे सों करी परम सुजान जानि अब तो अजान बनि मिलत सेबेरे पैं । लछिराम ताहू पै सुरंग ओढ़नी लै सीस पीत पट देत गुजरेटिन के खेरे पैं ॥ सराबोर छलके प्रस्वेदकन लाल भाल मदन मसाल वारों बदन उजेरे पैं । आपने कलंक सों कलंकिनि बनी हैं लूटि औरहू को धरत कलंक सिर मेरे पैं ॥ २२५ ॥

दोहा ।

जितहिं अँधेरे आइबो तित आवत हौ भोर ।
प्रेम-डगर जानत भले नागर नंदकिशोर ॥ २२६ ॥

प्रथम गनिका खण्डिता यथा—कवित्त ।

भोर इत आये हौ सुरंग ओढ़नी लै सीस साँझही सो लोचन हमारे तरसत हैं । लछिराम रीझे कौन तान के तरंगन मै रोम रोम रंग धूम धाम दरसत हैं ॥ अजब उनींदे नैन चैन मद चाखे झूमै आवत न कर मै प्रकास परसत हैं । दीपति अपार आरसी मै हेरिये तौ यार हार बिनगुन के बहार बरसत हैं ॥

दोहा ।

रचि धमारि कित रंग मै आये इत बृजचंद ।
लाये हार नवीन हिअ धरत धरनि गति मंद ॥२२८॥

अथ कलहंतरितालक्षणम्—बरवै।

प्रथम न मानै हठ मै पिअ मुख हेरि।
गवने कलहंतरिता बिलपति फेरि ॥ २२९ ॥

अथ मुग्धा कलहंतरिता यथा – कवित्त।

खेलिवे को फाग आये नवल बधूटी संग अति अनुराग भरे अभिरि किवारे मै। कवि लछिराम के हूँ साकरै न खोली रही साकरे सरम राखि मन ह-ठवारे मै॥ नंदलाल बलित गुलाल मुख मेरे हाल झलकत माल हेरी झांझरी किनारे मै। देहरी लों फिरत परी लों परी सेज पर भभरि बरी सी जाति बिरह दवारे मै॥ २३० ॥

दोहा।

दरसत मुख वृजचंद के नवल बधू करि मान।
फिरत भई औरै दसा नख सिख बिरह बितान॥२३१॥

मध्या कलहंतरिता यथा – कवित्त।

आये रंगरावटी मै आनँद उमंग भरे मंडित प्रस्वेद चाल गज मतवारे की। परमा प्रकासमान बदन अमंद मंद माधुरी हँसनि जादू पीत पटवारे की॥ चाह मै चपल घरी चारि लों रहे वै अब लछि-राम सूरति न भूलै सजवारे की। बैरिनि हमारी लाज पलक न खोली हाय झलक न हेरी जादू जुलफन वारे की॥ २३२ ॥

दोहा।

करि सुजान सों मान हठि मै न लखी बस लाज।
सालत है नटसाल सो दवा बलित वृजराज॥२३३॥

अथ प्रौढ़ा कलहन्तरिता—यथा कवित्त ।

मान बजमारे सों कछूक न हमारी चली कीनो अपमान मानि आगमन भोरे मै । बिनती बिनीत करि फेरि वै गये हैं बन उमड़े अमन्द घन हरष ह-रोरे मै ॥ कबि लछिराम चूक हूँक नटसाल सम परत न चैन मढ्यौं मैन बरजोरे मै । भूलत न केहू माय माधुरी हँसनि मन झूलत हमारो बनमाल के हिडोरे मै॥

भूधन मरोरि लाल बदन बिलोकत मै मान हठ बीच बने कोप कलटारे से । साँझ हूँ मै अरज न मानी स्यामसुन्दर की बरजें सखीन रोष रंग मत-वारे से ॥ कबि लछिराम अब ऊधम उसासन मै खोलो न पलक लोभी सरबस हारे से । परसत अंग पापी तरसत हाय कैसे बरसत आँसू बुंद घन कज-रारे से ॥ २३५ ॥

दोहा ।

मीठो तब तुमकौ रस्यौ मान बिसासी संग ।
अब सूरति मै स्याम कत भरे बिरह नवरंग ॥२३६॥

अथ परकीया कलहन्तरिता यथा कवित्त ।

आयो परिहरि ग्वाल बाल बछरान बीच अरज करी त्यौं फेरि अरज सुनावैगो । रचि अपमानै तू न मानै मान संग मन अब पछिताने हाथ औसर न पावैगो ॥ कबि लछिराम धुनि माधुरी मरोर संग खोर खिरकी मै कैसे बांसुरी बजावैगो । काँकरी

चलाय मन्द मन्द मुसकाय हाय साँकरी गली मै कौन हार पहिरावैगो ॥ २३७ ॥

प्रथम करी ज्यों अपमान कुलकानि ही की मान मै करी त्यों प्रीति हानि सजवारे की। लछिराम कलप समान पल बीतै अब सूरति बिसूरि भाल कलगीं सवारे की ॥ कसकैं करेजे काम करद सी कोरैं वह ताकनि तिरीछी बंक नैन रतनारे की। कैसहू न भूलत भुलाय हारी भोरहीं सों माधुरी हँसनि जादू जुलफनवारे की ॥ २३८ ॥

दोहा।

जा हित हठि सिगरे तजे लोकलाज कुल सङ्ग ।
तिनहूँ को अब तू तजे बूड़त बिरह तरङ्ग ॥ २३९ ॥

अथ गनिका कलहंतरिता यथा -- कवित्त ।

मान मै हमारे तू न राखी बरजोरी उन्है जान दीन्ही मन व्यौत दूसरो बिचारैगो । परत न चैन मैन मानस मरोरैं देत बरबस बिरह दवा मै तन बारैगो ॥ ऊरध उसास मै मसोस मन याही भरे लछिराम कैसे अब सरबस वारैगो। बरषि सुमन हीरा लाल माल सङ्ग भाल नौरतन बेंदा कौन हरषि सँवारैगो॥

दोहा।

मान बिसासी तैं करी यों अपमान अनीति ।
पहिरैहै को हर्षि मन भूषन रतन सप्रीति ॥ २४१ ॥

अथ विप्रलब्धालक्षणम् -- बरवै ।

केलिभवन पिय बिन लषि अति अकुलाय ।
बिप्रलब्धा तिय बरनत कवि समुदाय ॥२४२॥

मुग्धा विप्रलब्धा यथा — सवैया।

साँझही आँखिमिचोली के ब्याज सहेलिन सङ्ग गयें सकुचाति है। कुंज थली मै न पायो गोपालै बिसाल मरोर भरी पछिताति है॥ सुन्दरी की समता लछिराम निहारत सारदाऊ थहराति है। झार मैदीह दवा के मही पर चम्पकबेलि मनो फहराति है॥

रङ्ग मै आई सखीन के संग भरी मन मौज उमाह लहे वर। सूनो सँकेत निहारतही थहराय रही दुख त्यों उमहे वर॥ सारी सुरङ्ग मै अङ्ग प्रभा मुरझानी परै पल बीच रहे थर। झार मै जात बरी बिरहा के नवेली कदम्ब की डार गहे कर॥ २४४॥

दोहा।

नवलाकिशोरी केलिथल लख्यौ न नवलकिशोर।
बिकल बिरह रजनी अचल ज्यों बिन चन्द चकोर॥

मध्या विप्रलब्धा यथा - सवैया।

मौज मै आई इतै लछिराम लग्यौ मन सांवरो आनद कन्द मै। सूनो संकेत निहारतही पर्यो साकरे आनन घूघट बन्द मै॥ बोलिवे को अभिलाष रचै पै न बोलै कछू दुष रासि दुचन्द मै। ह्वै रही रैनि सरोज सी प्यारी परी मनो लाज मनोज के फन्द मै॥

कवित्त।

सौरभ तरंग संग सहज सिंगार साजि लहक्यौ अनंग रंग गरब गहेली को। कवि लछिराम घेर घूँघट खुल्यो न तऊ ललक्यौ सुमन जऊ लाज पटझेली

को ॥ कुंज की कुटी मै निरखत सेज सूनी रुख सा-
मुहे हलाहल यौं ह्वै रह्यौ सहेली को। सांझ अरविं-
द सो मलीन मग चंद अब सांझ अरबिंद सों बदन
अलबेली को ॥ २४७ ॥

दोहा।

सूनी सेज बिलोकि दृग बिकल सकुच रत बाल।
मनहुँ बसन भीतर बरै मनिमथ मदन मसाल ॥२४८॥

प्रौढ़ा विप्रलब्धा यथा—कवित्त।

चटपटी चाह अंग उपटे अनंग कटी रंगरावटी ते कामनट की कुमारी सी। कबि लछिराम राज हंसिनी सो मंद मंद परम प्रकासमान चाननी सँवारी सी ॥ नागरि निकुंज मै न हेऱ्यौ वृजचंद मुख रूख पै सहेली भई आषैं रतनारी सी। मौहन मरोरति बिथोरति मुकुतहार छोरति छरा के बंद रोष मद ढारी सी ॥ २४६ ॥

परम उमाह भरी संग मै सहेलिन के अंग अंग जोबन बहार सरसत है। माधुरी हँसहि मंद चाननी प्रकास करि रसफंद फेटी पै सोहाग दरतस है ॥ कबि लछिराम स्याम सुंदरैं न पायौं कुंज बिरह दवा सों रोम रोम झरसत है। छन मै निसाकर दिवाकर सुरूप रचि कर मिस आकर अगाँरे बरसत है ॥२५०॥

दोहा।

जोबन मदमाती चली सजि सब अङ्ग सिंगार।
सूनो थल बिष सों लग्यौ बिरह अनल की झार ॥

अथ परकीयाविप्रलब्धा यथा—कवित्त ।

सोवत मै सब के किवारे खिरकी के खोलि डगरी निकुञ्ज मै मनोरथ सवारी सी । कबि लछिराम चुप ह्वै रही सहेली सङ्ग रङ्ग भरी मारग प्रकास त्यौं पसारी सी ॥ हलति निकुञ्ज मै न हेर्‌यौ प्राननाथ मुख थरहरी दीपकसिषा लो हिय हारी सी । सराबोर स्वेद मच्यौ मदन मरोर मन मुरझि बिचारी गिरी गजब की मारी सी ॥ २५२ ॥

दोहा ।

सजि सिंगार चुप ह्वै चली अजब अनोखी बाम ।
लखि सँकेत सूनो भई मनहु दवा बन दाम ॥२५३॥

अथ गनिकाविप्रलब्धा यथा · कवित्त ।

भूषन बसन साजि नषसिष हीरन के गजमुकता की चाह बीच मन फहरे । जरकसी कंचुकी कुचन पर बूटेदार छूटे बार सौरभ तरङ्ग बर बहरे । कबि लछिराम स्यामसुन्दर मिल्यौ न कुञ्ज बिरह बिथा के सङ्ग रोम रोम कहरे । मंजु मुख बीरी अङ्ग जोबन भभीरी भाल ओढ़नी अबीरी पर पीरे रङ्ग छहरे ॥

भूषन सँवारे अङ्ग सिगरे जवाहिर के चम्पई बसन गोरे गात सजवारे मै । कबि लछिराम खौर केसरि बिसाल भाल मङ्गलीक मुख जोति जगमगै तारे मै ॥ छैल छरकीलो मालमण्डित मिल्यौ न कुञ्ज बूझत

सखी सौं बरी बिरह दवारे मै। लोटत मही पै मारी मीन बनसी की मानो छूटत न केहूँ फस्यौ चाह मन चारे मै॥

दोहा ।

सजि सिंगार सौरभ सदन भरी हार की चाह ।
कुञ्जभवन सूनो चितै बरी बिरह की आह ॥ १५६ ॥

अथ उत्कण्ठितालक्षणम् — बरवै ।

केलि भवन प्रिय आगम सोचै बाम ।
उत्कण्ठिता तर्क मय कहि रस धाम ॥ २५७ ॥

अथ मुग्धा उत्कण्ठितालक्षणम् — कवित्त ।

सांझही तै बैठी रंग संग रंगरावटी मै रतनदरी-चिन की सांकरे मलति है। कवि लछिराम डरि बूझै न सहेलिन मै चितवनि चारु झाझरीन मै चलति है॥ रजनी बिचारी बीती राखै न प्रतीति मन सुमन छरी लौं लचकीली मिचलति है। पौन की परी पै हाल गौन की सलोनी बाल ख्यालभरी जाल की मृगीलौं मचलति है ॥ २५८ ॥

मानिकहवेली मै नवेली बनि बैठी सांझ संग मो सहेलिन के जोति मै जगी सी है। लछिराम छूटे बंक वार छामलङ्क पर समता बिचारत मै सारदा भगी सी है ॥ जामिनी सिरानी जुग जाम लौं न आये लाल करवट लै लै मंजु मचलै ठगी सी है। लहलहे जोबन की पौढ़ी पलका पै पट ओढ़ करि लोटति सचोट पन्नगी सी है ॥ २५६ ॥

दोहा ।

नवल बधू सोचति परी आगम नवलकिसोर ।
होत निरास न लखि जऊ पूरब लाली भोर ॥२६०॥

अथ मध्या उत्कण्ठिता यथा – कवित्त ।

सहज सिंगार जादू जोबन बहार बीच बैठी अलबेली सेज सुमन सवारी मै । कबि लछिराम अधरात लों उँनींदे गात मसकै मसोसन मनोज मद भारी मै ॥ बोलै न कछूक हेरि बदन सहेलिन को मरम न खोलै मन अभिरि किवारी मै । आवै चढ्यौ चन्द ज्यौं ज्यौं ऊपर अटा के त्यौं त्यौं आंखै अरबिन्द मुखचन्द की उज्यारी मै ॥ २६१ ॥

सामुहे दरीची खोलि बैठी रङ्गरावटी मै जोबन की जोति उपटी सी उफनाति है। लछिराम चम्पई बसन घेर घूँघट मै बदन बिकासि बूझिवे को रहि जाति है ॥ मदन मरोर भरे मानस उनींदे नैन करवोट करवट लैलै थहराति है । मरगजे होत ज्यौं ज्यौं सेज के सुमन त्यौं त्यौं सुन्दरी सुमन की छरी लों मुरझाति है ॥ २६२ ॥

दोहा ।

सोचत मनही मन भटू आये क्यों न गोबिन्द ।
चटकाली बोलन लगे बिकसत सर अरबिन्द ॥२६३॥

अथ प्रौढाउत्कण्ठिता यथा—कवित्त ।

सङ्ग मै सहेलिन के सांझहीं सिंगार साजि बैठी अलबेली रङ्ग मुख पर छाये से। कबि लछिराम झां-

झरीन मै झमकि झाँकि बूझै कहूँ अनत बहार ब-
रसाये से ॥ डोरवारे लोचन चपल बरुनीन बीच
ललके उझकि पलकन थरकाये से । फांदे रेसमी मै
फँसे फरकैं जुगल मानो खञ्जरीट मार चिरीमार के
फँसाये से ॥ २६४ ॥

कैधों अंधकार मै अकेले ह्वै डगर भूले झूले बा-
रुनी मै कै सुमति अरसाति है । लछिराम कैधों गु-
जरेटी के परे हैं फन्द भेटी लै हिंडोरे पै कपोल प-
रसाति है ॥ रैनि बिरचे धों रासमण्डल रसिक लाल
कैधों ग्वालबाल रागरीति सरसति है । कैधों रचे
और की अटान पै छटान छेम कैधों उत सावनी
घटान बरसति है ॥ ५ ॥

दोहा ।

बनमाली आये नहीं लाली दिग दस कोर ।
बरबस काहू कर गह्यौ मण्डल माखन चोर ॥२६५॥

अथ परकीया उत्कण्ठिता यथा कवित्त ।

कैधों आज औसर मिल्यौ न उन्है सांझही सों
कैधों फँसें काहू महरेठी की झगर मै । कैधों गुरुजन
पै सुने हैं लोक लाज सांझ कैधौं बसे बीर ग्वालबाल
की बगर मै ॥ लछिराम कैधों कछू करत बिचार
मन बीती जात रैनि घनबन की डगर मै । आली
बनमाली मै दिगन्तन मै लाली हेरि कैधौं रचे रङ्ग
नथवाली के नगर मै ॥ २६७ ॥

सांझही सों हेरी यों किवारे खिरकी के खोलि जकि रहे लोचन हमारे हिय हारे से। कबि लछिराम काम कैबर कसमकस कूकि उठे बनके बिहङ्ग चाखि चारे से ॥ आये स्यामसुन्दर न अनत गँवाये रैनि बन्द होत हरष हमारे घन तारे से। आरस बलित अरबिन्द मकरन्दन पै मन्द मन्द डोलत मलिन्द मतवारे से ॥ २६८ ॥

दोहा।

प्रीति करी कहुँ अनत कै रहे संग मै ग्वाल।
अबलों इत आये न वै सुघर बिहारीलाल ॥ २६९ ॥

अथ गनिका उत्कण्ठिता यथा– सवैया।

सांझही कौन की राती अटा चढ़ि रंग सुकेसरि के बरसाये। रोरी कपोलन पै मलिकै लछिराम छटा छबि की सरसाये ॥ जागि यों बानक संग बहार मै हार सुहीरन के पहिराये। आये न लाल गोपाल इतै किन भाल मै लाल गुलाल लगाये ॥ २७० ॥

राह निहारति हौं भरी चाह मै सांझ सो फूलन सेज बिछाय कै। त्यों लछिराम अनङ्ग मरोर की जागी बिथा परै अङ्ग मै आय कै ॥ राती गई जुगजाम लौं बीति प्रतीति यही मन मै पछिताय कै। चूमत कौन के चारु कपोलहि चम्पई चूनर कों पहिराय कै ॥ २७१ ॥

दोहा।

अनत गँवाये रैनि कत वै सुजान बृजचन्द।
मनहुँ आज कहुँ और बस परे तान के फन्द ॥ २७२ ॥

अथ बासकसज्जा लक्षणम् —बरवै ।

पिय मिलिबे हित साजे सेज सिंगार ।
बासकसज्जा बरनत रसिक उदार ॥ २७३ ॥

मुग्धा बासकसज्जा यथा कवित्त ।

औरै छबि सहज सिंगार मै सोहागिनि की उमड़ी परत आसपास परखीरी तैं । कबि लछिराम काम कनक-छरी सी छाम लचकत लङ्क परसत पौन सीरी तैं ॥ सारी स्वेत भीतर प्रकाश अधखुल्यौ मुख बेसरि बहार सोहै सुखमा गभीरी तैं । सादर बिरादर बलित बाल चन्द मानो बिकसत मन्द गति बादर अबीरी तैं ॥ २७४ ॥

चौहरे अटा पै चढ़ी बिलुलित छूटे बार बदन दुराय छबि छाये सु घरीन मै । कबि लछिराम चारु चपल तिरीछे नैन करत बहार बङ्क लट झँझरीन मै ॥ राम की दोहाई स्यामसुन्दर सरस रङ्ग समता मिलै न सारदा को नगरीन मै । बिहरत इन्दु अरबिन्द लै जुगल मानो मन्दमन्द मरकत मन्दर दरीन मै ॥ २७५ ॥

भांवरै भरत भौंर भरे चौक बाहिरे लों भीर त्यों चकोरन को दूरि करि आई मै । कबि लछिराम काम सुन्दरी तुलै न तिल मचि गो सनाका सारदा की प्रभुताई मै ॥ ह्वै रही बिसाल विज्जु मालिका नवल बाल दौरि जाऊँ कोठरी के भीतर दुराई मै । घूघट

की ओटैं फोरि कोटैं लाल चादरे की तऊ छबि छ-
लकी परति अँगनाई मै ॥ २७६ ॥

घाघरो सुरंग सारी सबुज किनारीदार जरकसी कंचुकी जड़ित लाल हीरे सों । भूधनु मरोर भाल चपला तिरीछे नैन मण्डित कपोल गोल अलक जजीरे सों ॥ लछिराम अधखुले घूघट के भीतर यों बिहस्यौ बदन भऱ्यो भावन गभीरे सों । बरबस दामिनि बहार बिगरावै चंद विकसत आवै मानो बादर हरीरे सों ॥ ७७ ॥

दोहा।

संग सहेलिन के सजे नख सिख सकल सिंगार।
घूघट पट की ओट मै निरखति मारग द्वार ॥२७८॥

अथ मध्याबासकसज्जा यथा—कवित्त।

बूटेदार घाघरे पै सोभित सुरंग सारी सबुज कि-नारीदार कंचुकी बिराजमान । बेसरि बुलाक बेंदी बंदन बिचित्र बाग बिहरत कलित कलीन के बि-कासमान ॥ कबि लछिराम हार हीरालाल मोतिन के उन्नत उरोज पै नखत से भासमान । मानो चारु चंद ब्रज भूपर मुदितमन मंदमंद डोलत अमंद छोड़ि आसमान ॥ २७९ ॥

सबुज सुरंग स्वेत कलिन सँवाऱ्यो केस बंदन भरी त्यों मांग अनुराग भीने पै । तापर सोहायौ सीस-फूल सरसायौ सौज मौज बरसायौ मै न काहू मन

दीने पै ॥ कवि लछिराम स्यामसुन्दर तिहारी सौंह सामुहे तुलै न सम गन मन कीने पै। हीरालाल हरित मनीन हार मेलि चौक बैठ्यो मारतण्ड मानो मानिक नगीने पै ॥ २८० ॥

बैठी रंगरावटी की रतनदरीची खोलि चारु मुख चंद की मरीची झलाझल मै। फोरि साल चादरै गोराई की भभक जोर फैली फिरै जाल बीजुरी लौं थलथल मै ॥ कवि लछिराम स्यामसुन्दर तिहारी सौंह उपमा अनूठी यों न आवत अकल मै। ज्वालामुखी ज्वाल मंजु मदन मसाल कैधों लालमाल कैधों बाल मानिकमहल मै ॥ २८१ ॥

दोहा।

सजि सिंगार रँगरावटी सकति न सकुचनि बोलि।
बसन ओढ़ करि लखति है बार झांझरी खोलि ॥२८२॥

अथ प्रौढ़ा वासकसज्जा यथा – कवित्त।

सहज सिंगार छूटे बंक बार भार छाम लङ्क लचकेहू औरै दीपति बढ़ति है। राजै लछिराम कामनट की नटी लौं नवजोबन बहार कोक कारिका पढ़ति है ॥ कीरतिकिसोरी स्यामसुन्दर तिहारे हेत अलिन अटा सो छटा ह्वै करि कढ़ति है। कोठरी तें चौक अँगनाई मै उचकि आवै चौक अगनाई तें अटारी पै चढ़ति है ॥ २८३ ॥

खड़ी चौक बाहिरी के रतन-चऊतरे पै उमड़ी दिपति दामिनी लौं दरदर पै। बंदन बलित मांग

पाटी के पटल बीच मृगमद बिंदु भाल भूधन कगर पै ॥ कवि लछिराम समता न स्याम ताकी मिलै भारती भरमि रही त्रिभुअन थर पै। मानो काम कातिल कतल करि बीर जग राख्यो भरी श्रोनित सिरोही को सिपर पै ॥ २८४ ॥

सहज सिंगार जादू जोबन बहार हार हीरा दै सहेलिन को अंक मै भरति है । सौरभतरंग सेजसुमन मजेजदार दीपगन मोतिन के थार मै धरति है ॥ लछिराम चौक अँगना तैं रंगरावटी लों मानो धूमधाम काम रंग मै करति है । कोठरी तैं चटकि कबूतरी लों चौंकि झूमि झाँझरी सों झमकि परी लों उतरति है ॥ २८५ ॥

बाँधनू अबीरी घेर घाघरे सुरंग पर बूटेदार कासमीरी कंचुकी सजाई मै । लछिराम छाम लङ्क किंकिनी मधुर धुनि झनकार पैजनी पगन सुखदाई मै ॥ बार घुघरारे छूटे हीरा मोती हारन पै बेसरि बहार ब्रह्म सुख तैं सवाई मै । हेरि हेरि फेरि फेरि खोरि खिरकी की झाँकि थिरकी फिरति फिरकी लों अँगनाई मैं ॥ २८६ ॥

दोहा ।

जोबन मद मै मोहिनी नखसिख साजि सिंगार ।
केलि भवन के द्वार बर बाँधति बन्दनवार ॥२८७॥

अथ परकीयाबासकसज्जायथा– सवैया ।

कंचुकी राती उरोजन पै बिध्यौ राती कली लट-

बंक छुटी मै। त्यौं लछिराम सुगंध सने नख तें सिख लौं मन मौज लुटी मै॥ सारी मै अंग अमात न साँवरे जोति लसै मनो संभु बुटी मैं। दामिनी लौं दिपै साजे सिंगार बिराजत कामिनी कुंजकुटी मै॥

दोहा।

करि सिंगार सब ससिमुखी लखति सांकरी खोरि।
मंद मंद भूपर धरति पगन फंदं रस बोरि॥ २८९॥

अथ गनिकावासकसज्जा यथा – सवैया।

सोसनी सारी पै अंगप्रभा उपटी परै जाहिरैं बीजुरीजाल सी। त्यौं लछिराम रचे नख ते सिख भूषन चंपक चंपकमाल सी॥ सेज सँवारे सुगंध मै साँझही चाहभरी हिय हीरक हालसी। बारवधू छबि कैसे छिपै दिपै द्वार किवारे मनोज मसाल सी॥

दोहा।

सजि सिंगार सब सौरभित उघटति तान तरंग।
खोलि झांझरी लखति है मन मन भरी उमंग॥

अथ स्वाधीनपतिका लक्षणम् – बरवै।

प्रीतम जाके बस मै आठोजाम।
स्वाधिनपतिका तिय तिहिं वरनि ललाम॥२९२॥

अथ मुग्धास्वाधीनपतिका यथा – कवित्त।

घूघट के घेर पै बिकान्यौ बिन दामनही दामन लपटि यौं उमाह उमचत है। दामन सों बदन वसीकरन मन्त्र पर सीकरन सुनि कै बिनोद बिरचत है॥ लछिराम सीकरन मंत्र सो कपोल मग नैन मोर

ऊपर लकीर सोचत है । बीध्यौ नैन बानन की कोर मैं हमारो मन मचल्यौ सुभ्रूधनु मरोर मैं नचत है ॥

दोहा ।

छूटे घन बन बार लखि मो मन होत मयूर ।
तूं थिर रहति न सामुहे करति बिज्जु चकचूर ॥२९४॥

अथ मध्यास्वाधीनपतिका—यथा कवित्त ।

परखि पसीजे रंग आनद मैं भीजे मीजे आँगुरी सरस पाखुरिन पै लुभाय कै । कीने मौज मानिक मुकुत हीरा लाल माल चूमे कर चम्पई बसन पहिराय कै ॥ केसरित कंचुकी सुगन्ध सो बलित बूझि लछिराम लपटे परम फल पाय कै । नवरँग राती हार चम्पक तिहारो छैल छाती बीच राख्यौ सूम थाती सों छपाय कै ॥ २९५ ॥

तार सी लचत कुच—भारन सो लङ्क तैसी कलित कपोलन घिरति बङ्क लट की। कवि लछिराम हिलि मिलि त्यों बिराजे कुञ्ज गुञ्जरत भौर सीमा सौरभ लपट की ॥ बेलि झाझरी सों कण्ठे रवि की मरीची होत हायल परिखि सरसाय कला नट की। स्वेदकन छलक छबीली के बदन पर छैल छरकीलो करै छांह पीतपट की ॥ २९६ ॥

बगरै बहार झनकार पैजनी तैं जब राजहंसिनी सी अँगनाई में फिरति है। लछिराम त्रिबली तरंग छवि दीबे हेत सबुज किनारीदार कंचुकी भिरति है॥

ढारीं काम कैबर सी आंखैं अलबेली बङ्क लखनि तिरीछी पल केहू न थिरति है। सारी तैं सरद भयौ सावरों मरद प्यारी कापै कोरवारी काकरेजी पहिरति है ॥

दोहा ।

प्यारी जब तूं करति है बदनचंद पटओट ।
मो चख जुगुल चकोर पै लगत कुलिस की चोट ॥२९८॥

अथ प्रौढ़ा स्वाधीनपतिका यथा - सवैया ।

बार सजो मुकुतावली सो फिरि त्यों हरी कंचुकी बंद बँधैहों । भाल बिसाल पै बेंदी प्रभा भरि बंदन केसरि आड़ खचैहों ॥ भूखन सौरभ संग सबै पहिरावत प्यारे न मै मचलैहों । रावरे हाथन सो बलबीर महावर या पग मैं न रचैहों ॥ २९९ ॥

बेसरि की मुकतावली पै लट भोरही भूले असाहस लेखैं । त्यों लछिराम सने कनस्वेद के ओरई ओर बने मुख बेखैं ॥ भौंर लों भावरें देत बिनोद मैं कौतुक प्रेमकलानि को पेखैं । रावरे सों घनस्याम सुनो रचवैहों न मैं कर मेंहदी रेखैं ॥ ३०० ॥

दोहा ।

रचि नखसिख छबि मोहनी जोबन मद बिधि ढारि ।
मो दृग मीनन को मनहु सरबर सुखद सँवारि ॥३०१॥

अथ परकीया स्वाधीनपतिकायथा - कवित्त ।

लाली तरवन मैं लपटि रह्यौ लोभी मन लोट पोट पैजनी पगन झनकार पर । झनकार पैजनी

तैं जंघन छटा पै छक्यो जंघन तैं नाभी ह्वै नच्यौ है लङ्क तार पर ॥ लछिराम लङ्क तैं बिछुलि छूटे बार हार हार तैं बिछलिगो बदन रंगदार पर । रंगदार बदन बिलोकि मतवारो मन बरबस हारो जादू जोबन बहार पर ॥ ३०२ ॥

काकरेजी ऊपर अबीरी चादरे को घेर घूघट सराहि सामुहे मै हरषत है। तामै हेरि छूटे बार ह्वै कर छबीलो छैल तन मन वारि बैस वार्‍यौ हरषत है॥ लछिराम सारद सुरूप त्रिभुवन ढारि सुरी सुरमण्डल सुमन बरषत है । साल के सहर हाल सुन्दरी सिंगार हेत मानो मार मरकत रेजा परखत है॥३०३॥

काश्मीरी कंचुकी अबीरी अंगराग पर मान मोहनीन को मरोर्‍यौ मसकत है । झनकार पैजनी बहार हेरि जोबन की लछिराम सान सारदा को खसकत है॥ घायल घरी सों पर्‍यौ हायल हवेली तऊ रावरे मजेजही की चोप चसकत है। मनमथनेजा लों करेजा बर बेधि अब करि मन रेजा काकरेजा कसकत है ॥ ३०४ ॥

आई है कहां तें कौन जाई गुजरोटी तोहि फेटी रसफन्द मन्द हँसनि मजेजे मै । कवि लछिराम काम सांचे की ढरी है किन्नरी कै तूं परी है भरी भाव रंग तेजे मै ॥ भूधनु मरोरैं मोरैं लोचन सु ऐसी कढ़ी कोरैं कब लूटे मन मनमथ नेजे मै। छूटे बार

बदन बहूटेदार बाहे पर बूटेदार काकरेजी कसकै करेजे मै ॥ ३०५ ॥

दोहा ।

तो मुख हेरन को हरषि फिरत साँकरी गैल ।
तूँ पट घूघट ओढ करि करत सिकारिन सैल ॥३०६॥

अथ गनिकास्वाधीनपतिका यथा—कवित्त ।

सौरभित माधुरी हसानि सङ्ग तीखी तान सुनि अनुमान कोकिलान को करत है । बिकसे कपोलन पै सरबस वारि मन आरसी अमन्दन की आभा निदरत है ॥ कबि लछिराम सांझ होत यौं सरद चन्द रैनि सोहैं चहकि चकोर सो अरत है । रावरो बदन अरबिंन्द मानि भोरही सो बासर मलिंन्द बनि भावैं भरत है ॥ ३०७ ॥

दोहा ।

तेरे तान तरङ्ग की लगति करेजें चोट ।
मनिगन बारतहीं बनै लुटत सखन की मोट ॥३०८॥

अथ अभिसारिका लक्षणम्—बरवै ।

करि सिंगार पिअ मिलिवे हित रतिधाम ।
अभिसारिका सराहत रसिक ललाम ॥३०९॥

अथ मुग्धाअभिसारिका यथा—सवैया ।

आपने पायल की झनकार सुने झझकै सिसकीन के सोर मै। आपनेही रद सों अधरान दबाय करै छद सङ्क मरोर मै ॥ यौं लछिराम प्रस्वेदसनी नवला

चढ़ी सी लफै लाज हिडोर मै। आवति मानो सोहाग की बेलि सुभाग जगी परै नन्दकिसोर मै॥

बालै सिंगारि सहेलिनि लै चली बंजुल बेलिन की जहाँ पाति है। त्यौं लछिराम सुगन्ध की धूम चहूँदिसि कीनी बसन्त जमाति है॥ पैजनी कङ्कन की झनकार सो यों मचलै सुखमा सरसाति है। चौंकै कबूतरी लौं मग मै मनो पूतरी पारद लौं थहराति है॥ ३११॥

तोरिवो हरा को छपै छोरिवो छरा को बन्द मुकुत बिथोरिवो त्यौं भूधनु मरोरी को। लछिराम छाम लङ्क चम्पक लतालौं लफै गमन अडैल गैल गजवर जोरी को॥ खरकत बेलि बन पातन के पारद लौं थरकत गात यौं सुगन्ध सरबोरी को। सी करत सामुहे सोहाग बरसत मुख अधखुल्यो घूँघट मै नवलकिसोरी को॥ ३१२॥

सहज सिंगार साजि सङ्ग वै सहेली चली खेल को बहानो कै हवेली के बगर मै। कबि लछिराम कामकनकछरी लौं छाम लचकत लङ्क सङ्क मेली की नगर मै॥ सराबोर स्वेदन भरमि भारती लौं अड़ै हारतीं खवासिनै अकली की रगर मै। सोर सी मचावति दृगन फरकावति सु फैली छबि आवति नवेली की डगर मै॥ ३१३॥

दोहा।

खरकत पातन के लली थरकत छूटे बार ।
मनहु चलत कन्दर्पगज झूमत मदन बहार ॥३१४॥

अथ मध्याभिसारिका सवैया।

सारी सुरङ्ग त्यों सोसनी कंचुकी चम्पई चादर घेर करी है। घूघट के पट सों मुखजोति कढ़ी परै सोंहै सुगन्ध ढरी है॥ चाल पै वारों मतङ्गमनोज मनो मग लाज मनोज-परी है। भागभरे ब्रजसुंदर पै वह सुन्दरी जाति सोहागभरी है॥ ३१५॥

पैजनी कङ्कन की झनकार सों नासिका मोरि मरोरति भौंहैं। ठाढ़ी रहै पग द्वैक चलै सने सेद कपोल कछू उघरौंहैं॥ यों लछिराम सनेह के संगन साकरे मै परी प्यारी लजौंहैं। छाकि रह्यौ रसरंग अमी मनमोहन ताकि रह्यौ तिरछौंहैं॥ ३१६॥

दोहा।

सकुच कामबस कामिनी गति ठमकीली जाति।
बिकसत मुख पट ओट मैं खोल खिनक रहि जाति॥

अथ प्रौढ़ा अभिसारिका यथा—कवित्त।

नखसिख भूषन जवाहिर बिराजमान चूनर सुरंग चोली चम्पई सुफाब की। कवि लछिराम रोम २ त्यों हरष छायौ माधुरी हँसनि सम सालिका सिताब की॥ कौतुक अमन्द हेरि मग मै पलक बीच सारदा न पायौ सोध समता किताब की। फैली फिरै आब

दाबि दामिनी की ताब मानो मखमली भू पर म-
नोज-महताब की ॥ ३१८ ॥

नौसत सिंगार साजि कीनी अभिसार जादू जो-
बन बहार रोमरोम सरसत जात। लछिराम तैसी
झनकार पैजनी की कर कंकन खनक चूरी चारु पर-
सत जात ॥ झरत प्रस्वेद मुख चूनर सुरंग बीच
बिहँसत मन सारदा को तरसत जात। दामिनी अ-
मन्द सौहैं बस रस फन्द चन्द मानो लाल बादर
मै मोती बरसत जात ॥ ३१९ ॥

दोहा।

संग सहेलिन मै सजी अलबेली नवरंग।
बिहँसति मारग मै लसति मानहु मदनमतङ्ग ॥३२०॥

अथ परकीयाभिसारिका—सवैया।

बंजुल बेलिनि कुञ्ज मै साँवरो सांझहि सेज सँ-
वारि झपैगो। राह मै कोऊ न हेरिहै तोहि जु हेरिहै
दामिनी मानि थपैगो ॥ नाहक तूं लछिराम मसोस
मै सौतिन को तन जानि कंपैगो। तो अभिसार ब-
हार मै यों कला सोरहो लै कलानाथ छपैगो ॥३२१॥

दोहा।

दुरति जाति मनमोहनी बन बितान की छांह।
तऊ मनहुं भूपर चलत बिज्जुबलित निसि नाह ॥३२२॥

अथ गनिका अभिसारिका यथा सवैया

सांझही कापर कीने सिंगार सँभारे न अञ्चल के
फहरात मै। नासिका सीक जड़ाऊ लसी कसी कंचुकी

राती छटा छहरात मै। त्यों लछिराम कपोल पै केसरि छाप की औरै अदा लहरात मै। मारमतङ्ग सी मारग मैं ठनकारत नेपुर को ठहरात मैं ॥ ३२३ ॥

दोहा ।

सजि सिंगार सुभ सांझही चली मिलन बन यार ।
बिहँसति मनही मन समुझि गर गजगोहर हार ॥

अथ दियाअभिसारिका यथा— कवित्त ।

सजि कै सिंगार मंद खिरकी किवारे खोलि फेटी रस फन्द सारदा लों समता न मै। लछिराम धाम चाननी लों भासमान बन छाई सीतलाई त्यों छपाकर की भान मै ॥ मानि बनदेवी सुरी बरषैं सुमन घन फैली फिरैं जोति सोहैं रूप के बितान मै। चाल मतवाली चली चम्पई बसनवाली चम्पकलता सी चारु चम्पकलतान मै ॥ ३२५ ॥

लाली भरे पगन प्रभाली धूमधामही मो सांझ ही मैं सौतिन को हालभाल फूटैगो। लछिराम लोभी स्यामसुन्दर फँसैगो हाथ आजुही तैं वाको सब छल छंद छूटैगो ॥ बासर बहाली हेरि थिर न रहैगो नभ नाम आज ब्रज अनरथ लूटैगो। मनमथ माती नथ बदन खुले ते पथ रबिरथ सारथीसमेत भूमि टूटैगो ॥

दोहा ।

नवल बधू करिकै चली वासर सुभग सिंगार ।
मनहु लियो बृजभूमि पर कामकला अवतार ॥३२७॥

अथ कृष्णाभिसारिका—कवित्त ।

येन मद अंगराग सारी नील छूटे बार कैधों वा सिंगार तैं परी है छवि ढेरी मै । कवि लछिराम कै सुरूप जमुना को स्याम नीलम छरी धों लफै फन्द पट फेरी मै ॥ कुहू की कुमारी ढारी मनमथ साँचे कैधों देहधारी दामिनी धौं घटन घनेरी मै। पावनँ परों मै मनभावन मिलो जो मग आवै चली सुन्दरी धौं सावन अँधेरी मै ॥ ३२८ ॥

सारी सिर बैजनी सुयेन मद अंगराग बिथुरी अलक अलबेली तम आला मै। नील चादरे के घेर घूंघट दुराय मुख मुखन सँवारे मंजु मरकत माला मै ॥ झंझरित पौन घटा झूमती सुभूमि चूमि लछिराम गौन कीनी बेलिबन झाला मै । दमकि दुरति जामिनी मै दामिनी लौं चौंकि चली जाति कामिनी फनीन-फनमाला मै ॥ ३२९ ॥

दोहा ।

करि सिंगार सब स्याम अँग घन बन छूटे बार ।
चली जाति कण्टकित मग सुमिरत नन्दकुमार ॥

अथ शुक्लाभिसारिका यथा—कवित ।

भासमान भूषन अमोल अङ्ग हीरन के अङ्गराग चन्दन कपूर प्रभावर मै ।लछिराम सारी स्वेत सौरभित गोरे गात कंचुकी कुचन तास मोतिन के लर मै ॥ मुकुरहवेली सों कढ़त अलबेली छबि छहरी

परति चाननी पै सरासर मै। सौरभतरङ्ग सङ्ग मङ्ग-लीक मौज हार मानो गङ्गधार मिली मंजु मानसर मै ॥

ओढ़नी उतारि नीली सारी स्वेत साजि अङ्ग मुकुत लरीन सों सवाऱ्यौ लट बङ्क है। लछिराम चाननी सरद मै सोहागभरी चरचित गोरे गात घनसार पङ्क है ॥ मन्द मन्द आवै राजहंसिनी सी मंजु मग समता अभूत मन भाषत निसङ्क है। अङ्क भरि दामिनी कलङ्कहि पखारि तीर हल्यौ जात मानो छीरसर मै मयङ्क है ॥ ३३२ ॥

कीनी अभिसार कामनट की नटी लौं थाती बिरह जमाय सब सौतिन की छाती पै। कबि लछिराम स्वेत भूषन बसन अङ्ग सौरभतरङ्ग सङ्ग चाननी सोहाती पै ॥ झरत प्रस्वेदबुन्द भोरे गोरे गातन सों परत पगन की प्रभान लहराती पै। बरसत मोती पोखराज की लरी लैं मानो मानिक चुनी ह्वै बिथुरत भूमि राती पै ॥ ३३३ ॥

अङ्ग अङ्ग भूषन सँवारे गजगौहर के हीरन के चौलरे चमक रुचिराई मै। चाल मतवाली मन्द बीच मै सहेलिन के आनन अमन्द आभा ह्वै रही जोन्हाई मै ॥ कबि लछिराम स्यामसुन्दर सुरूप हेरि भूपर तुलै को सुन्दरी की समताई मै। सोरहो सिंगार साजि सारदा सुरीन सङ्ग बिहरति मानो हिमिगिरि की तराई मै ॥ ३३४ ॥

दोहा ।

सरद-चाननी मै चली मन्द मन्द मुसकात ।
मनु अमन्द वृजभूमि पर बिहरत चन्द लजात ॥

अथ प्रवस्यत्प्रेयसीनायकालक्षणम्—बरवै ।

गमन करै परदेसहिं जा पिय धीर ।
कहत प्रवस्यत् प्रेयसि बिरह गभीर ॥ ३३६ ॥

मुग्धाप्रवस्यत्प्रेयसी यथा—सवैया ।

भौन के भीतर सों न कढ़ै मनदाहक मन्द सुगन्ध समीरो । बेदन भार सहै लछिराम क्यों हार उतारि धऱ्यौ मनि हीरो ॥ झाँझरी सों न टरै पलकौ करि कोठरी बार को बन्द जँजीरो । जान सुजान को कान सुने मुख प्यारी को ह्वै गयौ पान लों पीरो ॥

रावरो गौन सुन्यो परसौं तबहीं लों तपी अबै कुन्दनतार सी । मौन ह्वै घूघट के पट मै अँसुआ बहै सावन गङ्ग के धार सी ॥ यों न अचानक जैहो लला लछिराम न तो फिरि वा घनसारसी । झार कहाँ बिरहानल की कहाँ हेरो नबेली चमेली के हार सी ॥

बरवै ।

नवल बाल सुनि मथुरा जैहे लाल ।
बिलखति बैठि अकेली कहति न हाल ॥३३८॥

अथ मध्याप्रोषितपतिका यथा—सवैया ।

वै परभात चले परदेस को प्यारी खड़ी भई द्वार निकेत है । बोलि सकै न गरो भरि आयौ कियौ पल मै सर मैन अचेत है ॥ आसूँ कपोल पै यौं बरसे

दृग यौं लछिराम छटा सम लेत है। बासर हेरि म-लीन कलाधरै खञ्जन मोती मनो गनि देत है॥३४०॥

भारी मसोसन मैं मसकी बनी त्यौं तसबीर लों लाज सँभारि कै। सामुहे सुन्दर को चलिवो कजरारे बहे दृग आंसू निहारि कै॥ चञ्चल चारु दृगञ्चल पै लछिराम रचे समता सुरी बारि कै। कै रहे मञ्जन यौं जमुनाजल खञ्जन जोड़े मनो पर झारि कै॥३४१॥

बरवै।

पलकन पूरे अँसुआ घूघट ओट।
लखति मयङ्कहि मानो मृगी सचोट॥३४२॥

अथ प्रौढ़ाप्रवस्यत्प्रेयसी यथा—कवित्त।

पूरब समीर सङ्ग बादर कछूक हेरि सादर सिंगार त्यौं संजोगिनीन खेरे पै। चूमिहै घटान भूमि बा-सर अँधेरी छाय जानि क्यौं परैगी मग हरिआरी हेरे पै॥ कबि लछिराम स्यामसुन्दर सुनो तो कैसी धूमधाम कहक पपीहरान टेरे पै। बाँचत बिरद मानो मदन महीपति के नाचत मयूर मानो ऊपर मुड़ेरे पै॥

नाचि उठे मोर मधुबन मैं अचानक त्यौं फहरैं बलाक स्वेत केत सजवारे से। कबि लछिराम कछू तृबिधि समीर बेलि परसै बितान तरु पात लफवारे से॥ रसिकसिरोमनि अकेली रहै कामिनी क्यौं दा-मिनी बसैंगी अङ्क नीरद सहारे से। चौंके चक्रबाक बीच बासर बिचारे चारे चुनत न मोती राजहंस मतवारे से॥ ३४४॥

बरवै।

श्री मनभावन हेरो सावन मास।

हरियारी महि मण्डित पथ न प्रकास॥ ३४५॥

अथ परकीयाप्रोषितपतिका—सवैया।

यौं मुख हेरि दुखी दिन मै हमैं याहू तै होत हहा दुख दूनो। बोलत कैलिआ बागन मै अनुरागन फूल्यौ बसन्त नमूनो॥ क्यौं बरजोरी करो लछिराम रुके भलो होयगो दै कहौं चूनो। प्रान हमारे परोसिनी के तुम जात हौ कैसे परोस कै सूनो॥ ३४६॥

बरवै।

जैहो जो बिन बूझे कबहुँ बिदेस।

फिरि न मिलैगी परोसिनि सौंह महेस॥ ३४७॥

अथ गनिकाप्रवत्स्यत्प्रेयसी—सवैया।

तूं तो चल्यो परदेस को साँवरे साँझही कौन सिंगार करैगो। या रँगरावटी मै लछिराम को रैनि बसन्त मै धीर धरैगो॥ रावरे को भला ह्वै है कहा बिरहानल गात हमारो बरैगो। या कजरारे बिलोचन आँसु तै चम्पई सारी मै दाग परैगो॥ ३४८॥

बरवै।

बरसत सावन रतिया जलधरधार।

दै को हार बचैहै प्रान हमार॥ ३४९॥

अथ आगतपतिका लक्षणम्—बरवै।

सपनो सगुन सदेसन सौंहैं हेरि।

आगतपतिका बर्णत बुध कबि टेरि॥ ३५०॥

मुग्धाआगतपतिका यथा – कवित्त।

मरम न खोलै मन मौज पूतरी लों परी नट की कबूतरी लों नेक न थिरति है । पल मै न जानो ज्वाल बिरह मरोरी किते रोम रोम आनद सु आँगी पहिरति है॥ लछिराम आगे बृजचन्द आगमन जानि अधखुले घूघट दरीची अभिरति है । नवलकिसोरी भोरी चौहरे अटा पै चढ़ी बोरी प्रेमसर मै चकोरी सी फिरति है ॥ ३५१ ॥

बीते कई बासर नगर मथुरा के बीच आये सांझ प्रेम के प्रस्वेदन मै घलिकै । कबि लछिराम धूमधाम के बधावरे मै झमकि नबेली बैठी कोठरी मै हलिकै॥ लोगन बिदा कै झांकि इत उत झांझरी मै बरबस खोले पट वानक बदलि कै । नवरङ्ग फेटी महरेटी मचलाय भलें भेंटी नंदलाल सो गुलाल मूठि मलिकै॥

बरवै ।

घूघट ओट बिलोकति फिरि फिरि द्वार ।
लौटति खिरकी थिरकी खोलि किवार ॥३५३॥

अथ मध्याप्रोषितपतिका – सवैया ।

नैहर मै सुन्यो आगम रौन बिराजी है मौन ह्वै पौन परी परै। झांझरी ओर करोट लै यों पुलके कन स्वेद की माल ढरी परै॥ आंखिन की दसा यों लछिराम मनो पट घूघट सो उभरी परै। बन्द करै जऊ लाज तऊ पलकैं भरी लालसा मै उघरी परै ॥३५४॥

गौरि के पूजत आये गोबिन्द खिले अरबिन्द से से नैन लली के। भूधनु भाल कपोल भुजा फरके जगे भाग सोहाग थली के॥ यौं फटी कंचुकी ओज उरोज सने कन स्वेद प्रभानि भली के। सुन्दरी मानो गिरीसन पै पहिराये हरा मुकुता अवली के॥३५५॥

बरवै।

सकुच-भरी रुख सौंहैं आवत हेरि।
बिहसनि अधरनही सो फिरत सुफेरि॥३५६॥

अथ प्रौढ़ाआगतपतिका यथा—कवित्त।

लोगन बिदा कै हले मानिकहबेली बीच पुलकि पसीजे रोमरोम थरकत जात। लछिराम तैसे मन-भावती के सामुहे मैं बाम भुज आँखैं भाल भौंहैं फरकत जात॥ सौरभ तरंग अंग आनद अनंग रंग बिकसत बिरह करेजे करकत जात। गुम्बज से गोरी के उरोज ऊँचे ज्यों ज्यों त्यों त्यों मरगजी कंचुकी के बंद तरकत जात॥ ३५७॥

मंगल कलस द्वार पावड़े पसारे मंजु बदन सँवारे हीरा लाल मोती लरके। कबि लछिराम करि धूम-धाम कोठरी मैं आगमन जानि चौक चौकठ कगरके॥ अंक भरि भेटत नवेली अलबेली जऊ पुलकित उरज कपोल गोल फरके। मन्द मन्द बिहँसत हाथ सो मिलत हाथ बाजूबन्द कंचुकी चुरी के बंद करके ३५८॥

बरवै ।

निरखि बदन बनमाली लाली नैन ।
थाली मानिक वारति नखसिख चैन ॥३५९॥

अथ परकीयाआगतपतिका—कवित्त ।

नागरि सुनी कि आयौ नागर परोसिनी को मानो मिल्यौ जोग मै सँजोग हरषति है । कवि लछिराम धूमधाम वोज आनद के अंग ना अमाति फैली छवि करखति है ॥ जोरि दृग सौंहैं तोरि हार गजगौहर के अंचल की वोट अलबेली बरखति है । भूपर पलक फंद प्रेम सफरी लौं परी ऊपर परी लौं वापुरी लौं परखति है ॥ ३६० ॥

बरवै ।

निरखि परोसिनि पिअ को आनँदमूल ।
झमकि झमकि झमकीली बरसति फूल ॥३६१॥

अथ गनिकाआगतपतिका यथा - कवित्त ।

बीते कई मास मथुरा मै स्यामसुन्दर को आये द्वार बाजत बधावरो बहाली को । बाहिरी के चौक पूरे चौक लर मोतिन के मङ्गलीक धरवाय कलस गुलाली को ॥ रचे धूम सौरभ तरंग रंगरावटी मै मण्डित मजेज साज्यौ सेज घरमाली को । मरगजी साल गरे मरगजी माल भाल बेंदा राखि भीतरै मिलति बनमाली को ॥ ३६२ ॥

बरवै ।

मिलति बिदेसी याराहिं नागरि चैन ।
लखति गरे मनिमालहिं पुलकित नैन ॥३६३॥

अथ उत्तमादिनायकालक्षणम् —बरवै।

प्रथम उत्तमा बरनो मध्यमा फेरि।
अधमा तीजी भाषति कविजन हेरि ॥३६४॥

अथ उत्तमानायकालक्षणम्—बरवै।

पिय औगुन लखि सपने रचइ न रोष।
सुभग उत्तमा तिय तन मन निरदोष ॥३६५॥

कवित्त।

रंग रचि फाग आये भरे अरसीले लाल औरै छटा भाल मै गुलाल झलकन की। बरफ गुलाबनीर चन्दन छिरीके स्वेज ओट करि पोंछे पीक लीक पलकन की॥ लछिराम लोभी प्रेमसागर मगनमन लोट पोट लूटत लोनाई खलकन की। मोती माल वारति सँवारति सुरंग पाग अञ्चल सो झारति अबीर अलकन की ॥ ३६६ ॥

बरत बिसासी गात बिरह दवा मै परे मानि या मसोसन मै कबहूं न माखिहै। कबि लछिराम सङ्ग ऊरध उसासन मै मन के तरङ्गहूँ को त्यों न अभिलाखिहै॥ पथिक प्रवीन या सँदेस समुझाय सबै जाय कहि दीजो तुमै सङ्कर की साखि है। दूरिही सों हेरि है सुजान सुखदान प्यारी ध्यान मै हमारो रूप हियरे न राखिहै ॥ ३६७ ॥

बरवै।

लखति बदन बनमाली बलित अबीर।
रजकन मिस कहि झारति वारति हीर ॥

अथ मध्यमानायका लक्षम् — बरवै ।

रोष आदरै पिय लखि सहित गुनाह ।
कहत मध्यमा तिय तहँ कबि नरनाह ॥३६९॥

कवित्त ।

आये भोर भूलि रैनि अनत हिंडोर झूलि झूले परे अङ्ग अङ्ग आरस के बस मै । कबि लछिराम अलबेली के बदन पर मान को बितान फैलो रङ्ग अनरस मै ॥ हराषि गोपाल वार्‍यौ गज मुकुता की माल परखि परी लों परी मानो परबस मै । अतर लपेटी फेटी अजब अनङ्ग रङ्ग भेटी गुजरेटी सरावोर सरबस मै ॥ ३७० ॥

बरवै ।

निरखि नवेली पियमुख कछु करि मान ।
भरि भुज फिरि चख चूमति समुझि सुजान ॥

अथ अधमानायका लक्षम् — बरवै ।

पति के बिन अपराधहु मान प्रसङ्ग ।
अधम तिआ तेहि बरनत कपट कुरङ्ग ॥३७२॥

यथा — कवित्त ।

रुष मुख पान रदपट फरकान पर भाल पै अमान ओज लाली लहरात है । कोमल कपोल पर गरबीले बोल पर बेसरि कलोल पै ठमकि ठहरात है ॥ कबि लछिराम दोष बिनही सुजान सोहैं त्यों बितान रोष रोम रोम छहरात है । मारू नैन बान

बङ्क भौंहन कमान पर मङ्गलीक मान को निसान फहरात है ॥ ३७३ ॥

सिद्धि श्रीरामपुराधीश रैकवारवंशावतंस नृपगुमानसिंहात्मज श्री राजेन्द्रमणिमहेन्द्र महेश्वरबक्ससिंहजूदेव आज्ञानुसार श्रीअवधनगर-निवासी लछिरामविरचिते महेश्वरविलासकाव्ये नायकावर्णनो नामद्वि-तीयोविलासः ॥ २ ॥

अथ नायकलक्षणम्—बरवै ।

सुभ सुजान गुणमंदिर सुन्दर रूप ।
नायक बरनत कबिजन जगत अनूप ॥ १ ॥

यथा—कवित्त ।

स्याम घन सरद मयङ्क आरसी लै ओज सिर-मौर सुभग सरोज सनमानो है। कबि लछिराम काम छबि धूमधाम पर दीनो हरतार करतारऊ बखानो है ॥ लूट्यौ मन लोभी मधुराई मै हँसनि हाय सामुहे बचाइवे को मरम न जानो है। राम की दोहाई स्याम सुन्दर बदन माई ब्रज मै बसीकरन मन्त्र को ख-जानो है ॥ २ ॥

खौर कासमीरी भाल भूषन बिसाल अङ्ग मंग-लीक मुख बृजमण्डल मो टीको है । कबि लछिराम तैसी चाल मटकीली मन्द गर बनमाल जेब जरद पटी को है ॥ हेरि मतवारो मन ह्वै रह्यौ हमारो कौन महर को वारो सजवारो सु घटी को है । बाँसुरी ब-जाई माई राम की दोहाई ग्वाल जादूगर जालिम जुलुफ उलटी को है ॥ ३ ॥

बान बंक लोचन कमान चारु भौंहैं चढ़ीं माधुरी हँसनि सो बहार बरसैया है। स्यामघन सजल सुमन अरसी को रंग मंगलीक मधुबन बाँसुरी बजैया है॥ कवि लछिराम धूमधाम को त्रिभंग रूप संग बाम काम नट निरतकरैया है। जुलुफ जजीरे फन्द मन को फँसैया याही जादूगर मैया जसुमति को कन्हैया है॥

भूधन मरोर कोरैं लोचन करद कटि काछनी जरद बिज्जु दाम दरसत है । लछिराम तौन धानि बाम या धरा मैं जा गोराई संग रंग सँवराई सरस है॥ राम की दुहाई मधुराई नखसिख तापै राई लोन वारि मेरो मन तरसत है। कौन है कहाँ को यार छोहरे अहीर तेरे बिहँसत सामुहें सुमन बरसत है॥५॥

बरवै ।

पीतबसन चख लाली गर बनमाल ।
बिहरत बन बनमाली खटकत ख्याल ॥ ६ ॥
तृबिधि सुनायक प्रथमहि पति अनुमानि ।
दूजो उपपति तीजो बैसिक जानि ॥ ७ ॥

अथ पतिलक्षणम्—बरवै ।

बिधिवत ब्याहो रसबस आठो जाम ।
पति कहि ताहिं बखानत सुखमाधाम ॥८॥

सवैया ।

ह्वै गये ब्याह के बासरहीं बस गौन मैं हेरत हाथ बिकाने। सौक मै वारे सुरेस महेस रमेस हूतै रस मै

परमाने॥ औरै सुप्रीति लता हरि होती है यों लछिराम सदाँ सनमाने। नागर दूलह श्रीबृजचन्द रहैं दुलहीमुखरूप लोभाने॥ ६॥

बरवै।

लखि दुलही को आनन श्रीबृजराज।
वार्यौ तृभुवन तृन सम तियन समाज॥
सु अनकूल अरु दच्छिन सठ गति तीनि।
चौथो धृष्ट बखानत मतिरसभीनि॥ ११॥

अथ अनकूल लच्छणम्—बरवै।

पर-तरुनी सो अनरस निज तिय प्रान।
यों अनकूल बखानत नृपति महान॥ १२॥

यथा—कवित्त।

अनुराग भाग सील सरम सोहाग बेलि बिरच्यौ बिरञ्चि मानो सींचिकै अतर सों। धरमनिधान बलवान तेजमान मंजु भूपर न भानबंसभूषन सुघर सों॥ कबि लछिराम तनमन को मिलाय सङ्ग एक रस रहत जुराफन के पर सों। जगत स्वकीया है न महरानी मैथिली सो अनकूल नागर न राम रघुबर सों॥

बरवै।

राजहंस हंसिनि सम बिहरत भौन।
बदन बिलोकत रस बस रगतिश्र रौन॥ १४॥

कवित्त।

चूनर सुरङ्ग सङ्ग छोरैं पीतपट तैसी लपट सुगन्ध की सवारे हैं सहल मै। कबि लछिराम घेर घू-

घट मिलित लसी पाग अलबेली मुख चुम्बन चहल मै ॥ सरबसवारे से जुगल गलबाँहीं पर कीरति किसोरी कान्ह प्रीति के पहल मै । सराबोर स्वेद मुकताहल झलक ओढ़े बिहरत राजहंस जोड़े से महल मै॥

अथ दक्षिनलक्षणम् – बरवै

परातिय निजतिय सम जेहि प्रीति ।
नागर दक्षिण नायक ग्रन्थन रीति ॥ १६ ॥

कवित्त ।

भ्राजमान रसिक सुजान रासमण्डल मै मण्डित मजेज मोद मौज लहरात है । माधुरी हँसनि मै न बात समता न तीखी झनकार नैपुर अदान यों अमात है ॥ बिकसे कपोल पूतरी सी लछिराम तऊ रोमरोम सुन्दरीन रूप न अमात है । भौंरगति भाँवरी मै झमकत फेरी झूमि सारद बदन सबही को चूमि जात है ॥ १७ ॥

बरवै ।

जलबिहार मै प्यारो डुभकी लेत ।
भीतर सब सों भेटत करि घन हेत ॥

अथ धृष्टलक्षणम् ।

बिन भय करि अपराधैं लाजन हीन ।
संग न केहू छोड़ै धृष्ट प्रबीन ॥ १८ ॥

सवैया ।

राजत है अपराध के सामुहे रोष मै ताको महा फल पावै । छोरे हरा झकझोरत बांह के चाह भरो

उर आनन्द छावै॥ बंद किवारे किये लछिराम खुले खिरकी मग मौज मै धावै। मोहनी के मन हारे जऊ तऊ वा मतवारे पै लाज न आवै ॥ १९ ॥

बरवै ।

औगुन गुनि गुन थोरो जोरत संग ।
मानत नहि झकझोरे तिन नवरंग ॥ २० ॥

अथ सठनायक लक्षणम्—बरवै ।

हँसनि बचन मुख मीठी कपट प्रबीन ।
या बिधि सठगुन बरनत मत प्राचीन ॥२१॥

सवैया ।

बंक बिलोचन लालिमा के उमड़े मदखञ्जन होम हनो है। त्यों बिन पान के ओठ लखे लछिराम सही उपमान सुनो है ॥ भूधनु भाल कपोल छटा परमा-मन होत चकोर चुनो है। रोष मै रावरे को मुख प्यारी मयङ्क सो मानो हजारगुनो है ॥ २२ ॥

बरवै ।

करति कटीली भौहैं समय सुमान ।
मनहु चढ़ावत शिवहित मदन कमान ॥ २३ ॥

अथ त्रिविधनायका लक्षणम् – बरवै ।

पति उपपति अरु बैसिक ग्रन्थ प्रमान ।
त्रिविधि सुलक्षण बरने रसिक महान ॥२४॥

अथ पतिलक्षणम् – बरवै ।

रमत न परतिय रसमय आठो जाम ।
उपपति परम रसिलो नागर नाम ॥ २५ ॥

कवित्त ।

पुलकि पसीजे काहू पगन महावर दै काहू की रचत बेनी लाजही निदरि कै। काहू के कपोलन सँवारैं छाप केसरि की बेसरि सँवारै काहू सामुहे मैं अरि कै ॥ लछिराम काहू पै लगावै अंगराग चूमै काहू के अधर लालिमा के फन्द परि कै। बन गुजरेटिन मैं भांवरै भरत भौंर चम्पकलतासी प्रानप्यारी परिहरि कै ॥ २६ ॥

बरवै ।

गुजरेटिनरस भीजो या वृजराज ।
भरम न काहू राखै बलि बिन लाज ॥ २७ ॥

अथ बैसिकलक्षणम् – बरवै ।

बारबधू-रस चाहक परम प्रवीन ।
बैसिक नायक बरने कवि प्राचीन ॥ २८ ॥

कवित्त ।

जोबन बहार पैजनी की झनकार छला छाम लंक तापर रतन मन वारे से । कंचुकी कसनि हीरा हार की लसनि पर माधुरी हँसनि पर थरकत पारे से ॥ लछिराम लोभी तीखे तान के तरङ्ग पर गोरे अङ्गरङ्ग पर हरख पसारे से । बारबधूवदन बिकास अरबिन्दन पै बिहरैं गोबिन्द ये मलिन्द मतवारे से ॥ ३० ॥

बरवै ।

झनक मनक अङ्ग भूषन सिस कीन ।
बिहसनि अजब अदाँकी लखि रसलीन ॥ ३१ ॥

अथ मानी नायक लक्षणम् - बरवै ।

कौनेहु कारन पति उर आवै मान ।
मानी नायक बरनत रसिक महान ॥ ३१ ॥

कवित्त ।

बारी बनितान को बिराजमान भूषन जो जाको बर बदन बिलास न पढ़ायो है । स्याम घन बासर मै ताको रङ्ग औरै हेरि साहस बितान पै सुमेर सो बढ़ायो है ॥ बाचैगीं बियोगिनैं सु कबि लछिराम कैसे कोरैं खून खञ्जर की भरि कैं बढ़ायो है । भासमान कैबर जुगल बीच कापैं कोटि सुमन सरासन सरासन चढ़ायो है ॥ ३२ ॥

किंसुक सघन बन दहके दवा से लोल कैलिया कुहक तैसी बागन अमाति है । लछिराम झनकार कुञ्ज तिमि भौंरन की ठौर ठौर बावरी लतान लहराति है ॥ करद करेजें मारि काम यौं कतलबाज करत परी पै मानो कतल की राति है। छैल छरकीले छोड़ो मान की मजाखैं साँझ सुमनछरी लौं वा छबीली मुरझाति है ॥ ३३ ॥

बरवै ।

गरजत घन बन बोलत बगरे मोर ।
मान समय ब्रजभूषन नन्दकिसोर ॥ ३४ ॥

अथ बचनचतुरनायक लक्षणम् बरवै

बचनचातुरी मै जब साधै काम ।
बचनचतुर तेहि नायक बरनि ललाम ॥३५॥

यथा – सवैया ।

गोरस बेचिवे जाति चली किते बेंदी रचे भली भाल-थली मे । छुटे छवा लों छबीले सु केस सु बे-सरि त्यों मुकता अवली मे ॥ कंचुकी केसरिआ ल-छिराम मनो मसकी कुचभार गली मे । बाह गहें करिहै तूँ कहा मतवारो फस्यौ मन चम्पकली मे ॥

यौ किते जाति है गागरि लै गुन-आगरि याहि धरै लै निकेत मे । भूपर फूल घने बिथुरे लछिराम तिन्हे यौ सभारें न हेत मे ॥ आवती सांझ अँधेरी चली तूँ चलै किन आतुर चाह के चेत मे । फेरि फिरै न मनो मचले वछरा हले तेरे कुसुम्भ के खेत मे ॥

बरवै ।

बलित बावरी तरु धन मन्द समीर ।
तित बिहरै तु अगैया सँगन अहीर ॥ ३८ ॥

अथ क्रियाचतुरनायक लक्षणम् – बरवै ।

साधे क्रियाचातुरी सों जब काम ।
क्रियाचतुर तेहि नायक लखि लछिराम ॥

सवैया

सुन्दरी बैठी सखीन के वीच मे सासुहे आयौ तहाँ बनमाली । ठ्यौत न बोलिबे को निरख्यो अति आतुर चातुरी सो रतिपाली ॥ चम्पकमाल सखा गरें दैं पहिर्‍यौ मन मौज सरोज गुलाली । ओट दै घूघट के पट को बिहँसी चढ़ी नैन अनङ्ग की लाली॥

बासर मै हरितालिका के सर बीच बधूटी को वृन्द सोहायौ । नागर ऊछल्यौ मज्जन हेत कलामति बालन मै बगरायौ ॥ लै डुभकी अति आतुरी मै लछिराम त्यौं चातुरी मै रंग छायौ । बारि के भीतरहीं मिलिकै मुख प्यारी को चूमि सखीन मै आयौ ॥ ४१ ॥

बरवै ।

लखि अलबेली मग मै मोहन लाल ।
बिहँसि बिथोरत भूपर मुकतामाल ॥ ४२ ॥

अथ प्रोषितनायक—बरवै ।

बसि बिदेस बस बासर बिरह मरोर ।
प्रोषित नायक बरनत कबि सिरमोर॥ ॥ ४३ ॥

कवित्त ।

पूरब समीर गौन तीर सों तिहारो तर परसत गात यों हमारो हियौ लरजो । या बिधि मिलत वाके प्रानन की दसा धों कौन आतुर न जैयौ यार मानि मेरो बरजो ॥ लछिराम दामिनी दुराइयौ दयानिधान धनुष चढ़ाइयौ न येती सुनि अरजो । अति सुकुमारी है हमारी प्रानप्यारी हाय बारिद बिराट बनि उतै जनि गरजो ॥ ४४ ॥

साझ मति कीजो यार अरज हमारी मानि अन्धकार भार को न उत बगराइयौ । कबि लछिराम छेम इत को सरीर प्रान अपर दसा की हाल नेक न बताइयौ ॥ परम सुजान प्राननाथ दामिनी के

भूलि बारिबुन्द बान सो न ध्यान मै जगाइयौ । माधुरे सुरन मै सराहि अनुराग भाग मङ्गलीक मेघ मेरी अरज सुनाइयौ ॥ ४५ ॥

सवैया ।

बूझिहै बासर बीते बिदेस के आपने भौन अँदेसन भारी । पान खवैहै कपोलन छ्वै मुख चूमि है लाज भरी मतवारी ॥ औसर वै मिलिहै बड़े भाग सों रावटी रात सुगन्ध मै ढारी । साजि सिंगार गरे कब लागिहै चम्पकमाल सी बाल हमारी ॥ ४६ ॥

बरवै ।

दामिनि सी कब लगिहै मो गर आय ।
हार मोगरा गर मै बर पहिराय ॥ ४७ ॥

अथ उपपतिप्रोषित लक्षणम् - बरवै

ये करतार करो कब वा दिन जायहैं आपने भौन सवारे । वा सुनि झांकिहै झाँझरी मै हम हूँ लखिहैं अटा बैठि के द्वारे ॥ बाँसुरी टेर सुने खिरकी मग आतुर साँझही खोलि किवारे । वा अलबेली चमेली के हार सी चाह मै लागिहै कण्ठ हमारे ॥ ४८ ॥

बरवै ।

खिरकी मग कब ऐहै आधीराति ।
मो मुख चूमि लगैहै हिय मुसकाति ॥ ४९ ॥

अथ वैशिकप्रोषित यथा—सवैया ।

पावड़े फूल पसारिहै पौरि लों पूरिहै चौक सभा

सजवाले। त्यौं लछिराम सुगन्ध संवारिहै वारिहै चौहरे दीपक आले॥ लागिहै मोगरे मो गरे माल सी तौ लछिराम सराहिहै ताले। बूझिहै मोसो मजाख मै वा कब लाये हरा गजगौहरवाले॥ ५०॥

बरवै।

कब लपटैहै गरवा गाय धमारि।
लै गरमानि कहरवा तन मन वारि॥ ५१॥

अथ अनभिज्ञनायक लक्षणम्—बरवै।

हाव भाव रस तिय को बिबिधि बिलास।
तेहि अनभिज्ञ बखानत समुझि न जास॥

यथा सवैया।

बासर गौन समागम सो पहिले जगी सुन्दरी खोलि किवारे। बेऊ कछू घरी बीते उठे भेर आरस अञ्जन सों मतवारे॥ अञ्जन ओठ कपोल की पीक खड़े अँगना लछिराम निहारे। आहट हूँ चूटकीन के बैन टरै मनो मूरख सांचे मै ढारे॥ ५३॥

बरवै।

भाव सरस करि प्यारी पिय मुख हेरि।
वै न तनक मुख फेरै चाहति बेरि॥ ५४॥

अथ आलंबनविभाव बरवै।

जबहिं जाहि आलँबि कै मन रस भाव।
उपजै ताहि कहत आलँवन बिभाव॥ ५५॥

भेद ग्रन्थ मत कहि आलँबन सिंगार।
सकल नायका नायक रस व्यवहार॥ ५६॥
आलंबन के भीतर दरसन चारि।
श्रवन स्वप्न चित्र परतछ ग्रन्थ निहारि॥५७॥

श्रवनदरसन – कवित्त।

पलकन खोलै तूँ पलक पलिका पै परी कलपि कहानी मन रोम रोम थरकै। कबि लछिराम ताकी बानी सुनि सामुहे मैं बनैगी दिवानी सङ्क मानि है न हरके॥ चम्पकलतासी मुरझाति चारु चाननी मैं वासर दसा धौं कौन लागे कामसरके। बरसत मानो बहि जैहै बृज भोरही लों लोचन जुगल रचे रूप जलधर के॥ ५८॥

बरवै।

श्रवन सुनत वन बतिआ धरकत हीअ।
मिलत होहिगे कैसौ का विधि जीअ॥ ५९॥

अथ चित्रदरसन यथा – कवित।

औचक अकेली गई सूने चित्रमंदिर मैं अङ्ग अङ्ग आनँद अनङ्ग सबिलासे मै। सामुहे बिलोकि बृजचन्द को बिचित्र चित्र चहकि चकोरी बनी अजब अवासे मै॥ पुलकि पसीजे गात सराबोर सारी कोर भोरही सों लछिराम ललक प्रकासे मै। परखि परी लों परी प्रेम साकरे मै नव सुन्दरी सु तीसरे पहर लों तमासे मै॥ ५०॥

बरवै।

रंगमहल मै हेरति लालनचित्र।
बनी बङ्क मृगलोचनि लगति बिचित्र॥ ६१॥

अथ स्वप्नदरसन यथा - कवित्त।

पाछिले पहर चारु चैत चाँदनी मै लगी नींद मतवारी कुम्भकरन कुमारी सी। लछिराम सपने मै सुन्दरी मिली त्यों मानो ढारी मैन साँच खरसान की उतारी सी॥ कर पकरत परजंक तै मचलि परी बिछलि परी लों स्वेद सीकर सँवारी सी। जौ लों फेरि अङ्क लै निसङ्क मुख चूमों तौलों खुलि गई पलकैं हमारी वजमारी सी॥ ६२॥

जागी रैनि सिगरी प्रभात नेक आई नीद सापने सँजोग भयौ जुलफ नवारे सो। लछिराम सामुहे मधुर बाँसुरी बजाय तान को तरङ्ग छाय हरष हजारे सो॥ विधि गति बाम घेर घूघट न खोलि चले हारे से मुरुकि मन्द मान मतवारे सो। फेरि पीछे टेरत जगायौ या गरजि पापी बादर बरसि बारि बुन्दन अगारे सो॥ ६३॥

बरवै।

स्वपन समय मम सौंहै नन्दकिसोर।
मै बरजी मुख चुम्बत लखत मरोर॥ ६४॥

अथ प्रत्यक्षदरसन यथा - कवित्त।

फैली जासु अकथ कहानी बृज मण्डल मै जील्यौं

बिहँसत हार हीरक चमेली को। कबि लछिराम काम कमल मयङ्कवारो आरसी अमल आब गरब गहेली को॥ जादू को बगर जुलफन पै निहारि नीके लोट मन मेरो बस्यौ ओट दै सहेली को। गैल गैल सैल मधुबन मै करत यही साँवरै सुघर छैल पाग अल-बेली को॥ ६५॥

जुलफन काली पै मुकुट मोरपंख सोहै गरब न माल राजहंस गजगतिको। कबि लछिराम तैसी भूधन मरोर भाल खौर कासमीरी सोहै तृभुवन मतिको॥ लोचन सफल मेरे लोचन बिलोके लाल दैहों जोतिसी को आज हीरा हीअरतिको। मङ्-लीक बदन त्रिभङ्ग रूपरासि मिल्यौ जदुकुलकमल कुमार जसुमति को॥ ६५॥

बरवै।

अधर बाँसुरी बिकसित गर बनमाल।
जमुनातीर बिलोक्यो मदनगुपाल॥ ६७॥

अथ उद्दीपनबिभाव - बरवै।

रस उद्दीपन हिअरें आहि निहारि।
सो बिभाव उद्दीपन कहत बिचारि॥ ६८॥

इति आलम्बनबिभाव – बरवै।

बन उपबन रागादिक षट ऋतु पौन।
सखा सखी पट दूती सौरभ भौन॥ ६९॥

उड़गन रजनि कलाधर सुर व बिहङ्ग।
इत्यादिक उद्दीपन रवनि प्रसङ्ग॥ ७० ॥
प्रथम बरनि जे नायक गुन गम्भीर।
चतुर सखा तिन मन्त्री चारि सुधीर॥ ७१ ॥
पीठिमर्द बिट चेटक परम प्रबीन।
चौथो बरनि बिदूषक सब रस लीन॥ ७२ ॥

अथ पीठिमर्द लक्षणम् – बरवै।

मान सुन्दरी को हर बचन बिलास।
पीठिमर्द गुन ग्रन्थन परम प्रकास॥ ७३ ॥

कवित्त।

मन्द मन्द गरजत मेघ मतवारे झूमि चूमत मही को मानो हरष हलोरे मैं। दामिनी दमक तैसी निरत मयूर बाल ग्वाल की बचन मानै झरनि झकोरे मैं॥ लछिराम लोभी स्यामसुन्दरै सभारै अबै सरस निहारै बर बानक बिथोरे मैं। भूलत फिरत उन्हैं हूलत मदन हूलै झूलै क्यों रसीली तै न झमकि हिंडोरे मैं॥ ७४ ॥

बरवै।

अन्तरंग हौ कान्हर आठो जाम।
सोवतहू मैं टेरत तिय तुअ नाम॥ ७५ ॥

अथ बिटलक्षणम् – बरवै।

सकल कला मैं बिटवर परम प्रबीन।
दुहुन मिलै के आतुर अनुभवलीन॥ ७६ ॥

कवित्त ।

बांसुरी बजाय बंक दृगन मरोरि भौंहैं ताकि ति-रछौंहैं फेरि साखा लै द्रुमन की । कवि लछिराम धू-मधाम को मचाय रंग गाय बरजोरी हेरि खेलि मौज मन की ॥ पीतपट प्यारे को सुरंग चूनरी मै मेलि आनन्द सकेलि करी आतुरी गमन की। मान लखि मोहनी को परम सुजान ग्वाल राख्यौ सामुहे मै माल चम्पकि सुमन की ॥ ७७ ॥

बरवै ।

मनमोहनी को लखि ग्वाल प्रवीन ।
दियौ हार दुहु गर मिलि कमल कलीन ॥७८॥

अथ चेट लक्षणम् – बरवै ।

प्यारी प्रीतम संगम हेत प्रवीन ।
चेटक सखा सराहत सब रस लीन ॥ ७९ ॥

सवैया ।

सेज सँवारि कै साँवरे सों रस राखि चल्यौ पल कै परमान मै । आय कै सुन्दरी सों यों कह्यौ इतै बैठी कहा बलि मोद महान मै ॥ गैया गई घर को लछिराम न जानों कहां बिछले वै अजान मै। सांकरी गैल सरोजमुखी बछरा हले तेरे निकुञ्ज बितान मै॥८०॥

बरवै ।

प्यारी बरनत सांची मैं बृजग्वाल ।
तब मुख हेरि सराहत मदनगोपाल ॥ ८१ ॥

अथ विदूषक लक्षणम् - बरवै ।

स्वाँग अपूरब ठानै हित परिहास ।
सखा बिदूषक बरनत गुन परकास ॥ ८२ ॥

यथा —सवैया ।

गोप सखा लखि प्यारी को मान मिलाइबे के हित स्वांग सनो फिरै । राधिका स्याम सुजान के सामुहे दूसरो स्यामसुजान बनो फिरै ॥ पीतपटी लकुटी कर कामरी त्यों लछिराम तृभंग तनो फिरै । गोरस माँगै सहेलिन सों मचलै मग त्यौं अलबेलो गनो फिरै ॥८३॥

बरवै ।

ग्वाल कि स्वाँग दसा यों लखि तिय मान ।
पाग लपेटत पायन सिर पदत्रान ॥ ८४ ॥

अथ सखी लक्षणम्—बरवै ।

अन्तरंग तिय पिय की कछुक न बीच ।
सखी सराहत कविजन जुगल नगीच ॥८५॥
चारि काज सखि मंडन सिच्छा बेस ।
उपालंभ परिहास सुग्रन्थनिदेस ॥ ८६ ॥

अथ मण्डन लक्षणम्— बरवै ।

सुभ सिंगार तिय रचिबो मण्डन बेस ।
सिच्छा बिनय बिलासक रति रस देस ॥८७॥

यथा - सवैया ।

कनकछरी है रतनाकर कलित कैधौं चाननी बलितरूप गंगलहरी को है। लछिराम सारदा सोहाग नगरी मे कैधों धूमधाम दामिनी बिलास बगरी को है ॥ हीरालाल मण्डित सँवार्यौ मार कैधों जग्यो

जौहर अजूबा पोखराज की लरी को है। ऊपर परी के पन्यो नौरतनहार कैधौं जोबन बहार पै सिंगार सुदन्री को है ॥ ८८ ॥

मण्डित महावर नखन मेंहदी के बुंद पैजनी पगन झनकार सरसत है। लछिराम लंक छाम किंकिनी मधुर तैसो उरज अमोल आभा हार परसत है ॥ छूटे बार बेसरि बदन रंगदार पर केसरि कपोल बूटेदार सरसत है । नवलकिसोरी तेरे सोरहौ सिंगार पर जगमग्यौ जोबन बहार बरसत है ॥८९॥

बरवै ।

बेसरि बदन बिराजति बेंदी भाल ।
हँसनि माधुरी मोहन मुकतामाल ॥ ९० ॥

अथ सिक्षा लक्षणम् यथा—कवित्त ।

सौरभित बारन सँवारि मुकताहल मै हार हिय हीरक संभारि त्यौं परद मै। कवि लछिराम कुच कंचुकी अबीरी हेरि हरि जैहैं सौतिन के हीतल दरद मै ॥ तेरे धूमधाम सो बिकान्यौ भोरही सों बन बावरो बिकल बिध्यौ काम की करद मै । सांवरे सरद की सरद करि छाती सांझ नवरँगराती चारु चाननी सरद मै ॥ ९१ ॥

सवैया ।

गोकुल की कुलवारी सबै कुलकानि को रूप तरंग मै बोरो। माधुरी हांस को चारो चखाय हने सर नैन

हलाहल घोरो ॥ जानती हौं लछिराम सबै गुन जा-
दूगरी को बिलास न थोरो । सांवरे के छबिजाल फँसे
मन मीन बचायबो काम न थोरो ॥ ९२ ॥

बरवै ।

मनमोहनमुख हेरत फेरत नैन ।
कुल सकोच की बातन कहत बनै न ॥ ९३ ॥

अथ उपालम्भ यथा बरवै ।

उरहन दीबो रस मे तिय पिय पास ।
उपालंभ तेहि बरनै काम प्रकास ॥ ९४ ॥

सवैया ।

तूँ नवनागरि सागर पै गई गागर लै जल हेत
सुभाय कै। वै कहूँ आये उतै लछिराम लखे यह रूप
रहे ललचाय कै ॥ नेक डरै न मरोरि कै भूधन यौं
बिसी नैन के बान चलाय कै । हायल हैं परे बेलि-
बितान मै चंपकमाल गरे मै लगाय कै ॥ ९५ ॥

चौहरे चारु अटा पै रही खड़ी यौं उमड़ी छबि
या जगवारो। ता छन तैं लछिराम कहा कहौं घायल
सी परी खोलि किवारो ॥ संग अनंग मरोर के ही
बस्यौ सांवरो रूप तृभंग तिहारो । पूतरी खोलै न
पूतरी लों कछू फेर सो जादू को नेक निहारो ॥९६॥

बरवै ।

तरुनी तुअ पग-लाली लखि वृजराज ।
वारत सोभा त्रिभुवन हायल आज ॥ ९७ ॥

अथ परिहास - बरवै।

दंपति आनँद हित अलि करि परिहास।
सपरिहांस कवि बरन्यौ सहित बिलास ॥९८॥

कवित्त।

बन बिहरत आये कुञ्ज की कुटी मै दोऊ उलटी जुलफ लट छूटी को सँभारि कै। बिरची बिचित्र परिहांस की सहेली तितै तसवीर सामुहे सुमन को सँभारि कै॥ सांवरे बदन काकरेजी को सुघर पट गेरि मुख बांसुरी बिहसि दी विचारि कै। पाग अलवेली अलवेली पै सुरंग सीसफूल अलवेलो अलवेलो पै सँवारि कै ॥ ९९ ॥

बरवै।

मधुवन दोऊ बिहरत दै गलबाँह।
लखि गुलाल सिर डारे करि उतसाह ॥१००॥

अथ दूतीलक्षणम्—बरवै।

दूतकर्म मै नागरि सब सुखदानि।
उत्तम मध्यम अधम त्रिविधि पहिचानि ॥१०१॥

उत्तम दूती लक्षणम् - बरवै।

उत्तम उत्तम दूती सुरभि समीर।
मधुर बैन सुभ संगम हर भयभीर ॥ १०२ ॥

कवित्त।

जुलफन काली पै सुरंग सिर पैंच तैसी बंक लट चूनर सोहाग नगरी सी है। कुण्डल मकर झलकत ज्यों कपोल तैसो मुख नकवेसरि बहार बगरी सी है॥

कवि लछिराम हार हीरक जुगल गलबाही मै सुरेस यों प्रकास न परी सी है । मरकत सांवरे बरन जैसे रावरे के तैसी यह प्यारी पोखराज की लरी सी है ॥

बार घुँघरारे छूटे नीलम छरी से भाल नौरतन वेंदा जग्यौ जोबन उज्यारी को । माधुरी हँसनि बंक भौहें रतनारे नैन बेसरि बहार ब्रह्मसुखद सँवारी को ॥ कवि लछिराम स्यामसुन्दर तिहारी सौंह सरबरि कीजे कौन कीरतिकुमारी को । सिन्धु मथि काढ्यौ राम चौदहो रतन काम चौदहो रतन मथि रच्यौ मुख प्यारी को ॥ १०४ ॥

बरवै ।

सजल स्यामघन तुम हौ बिज्जु सुबाम ।
बिहरत बलि बृजमगडल मनु रति काम ॥१०५॥

अथ मध्यमादूती लक्षणम् बरवै ।

कछु कठोर कछु मीठे बचनबिलास ।
मध्यम दूती बरनत सुमतिनेवास ॥ १०६ ॥

कवित्त ।

कासमीरी कुच पै अबीरी कंचुकी को साजि बीरी दै बदन ओठ लाली बितरति है । लछिराम छूटे बंक वार वै छवा लौं पग झनकार पैजनी बहार चितरति है ॥ चाल मटकीली भरी ख्याल खटकीली चटकीली तूं बिहाल मनमोहनै करति है । कीने कई रेजा कान्हि मनमथ नेजे नैन आज काकरेजा सों करेजा कतरति है ॥ १०७ ॥

बरवै ।

बान बंक जुगलोचन भौंह कमान ।
रसिकसिरोमणि हियरो करति निसान ॥१०८॥

अथ अधमादूती लक्षणम्—बरवै ।

दंपति सो नित बोलै बचन कठोर ।
अधमा दूती बरनत कवि सिरमोर ॥ १०९ ॥

सवैया ।

मान मनायबे हेत खड़े मुख मंजु प्रस्वेद के बुंद ढरैं हैं । ये वृजचन्द सुजानसिरोमनि तो पग भाल की खौर भिरैं हैं ॥ मानस क्यों मसकै न मसोस मै या लछिराम अजान घिरैं हैं । गोरस बेचिबे को नगरी तुमसी गुजरेटी गलीन फिरैं हैं ॥ ११० ॥

बरवै ।

रसिकसिरोमनि प्यारो परम सुजान ।
गोरसबेंचनहारी तिनसों मान ॥ १११ ॥
जुगल काज दूतीन के बरनि हमेस ।
बिरहनिबेदन अरु संघट्टन देस ॥ ११२ ॥
मिलिवै दुहु संघट्टन सुख सों मानि ।
बिरहनिबेदन बेदन बिरहबखानि ॥ ११३ ॥

अथ बिरहनिबेदन यथा—कवित्त ।

छाती में लगाय सूमथाती सों छपाय साँझ सँग रँगराती अङ्ग आँनद अपारे मैं । लछिराम काल्हि की अवधि सुनि फेरि हाय हायल परी त्यों सोक सरम सहारे मैं ॥ पाछिले पहर लों बिलोकि नैन

सीरे करि भोर लों मरू ह्वै बची मरम बिचारे मैं। गुञ्जमाल तेरे गरवाली जौन होती लाल हाल बरि जाती बाल बिरहदवारे मैं ॥ ११४ ॥

पुलकि पसीजी पाय प्रेम सों लगाय गर सनमानि सौरभित सानी पीत पट मैं। कबि लछिराम कीनी पलक न ओट केहूँ राखी रैनि प्रान महामीच की झपट मैं॥ बचन सुधा सों बनै सोचे बनमाली अब राम की दोहाई कछु भाषों न कपट मैं। बरफ तिहारी बनमाली मैं लपटि बाल बचि गई बिरह अँगारे की लपट मैं ॥ ११५ ॥

बरवै।

बिरहभरी की बतियाँ किमि कहों लाल।
पौन परी पै मनु बिधि मदनमसाल ॥ ११६ ॥

अथ संवट्टन लक्षण यथा—सवैया।

खेल के व्याज बुलायपनबेली को लै गई भौन सहेली सुख्याल मैं। त्यों लछिराम छके बृजचन्द लखी छबि ऐसी न मैनमसाल मैं। भीतर आवतही भऱ्यो अङ्क सु यों भरी औचक सङ्क बिसाल मैं॥ कम्पितगात प्रस्वेदसनी बलि दामिनी लों दुरी दीपकमाल मैं ॥ ११७ ॥

बरवै।

सुमन सावनी मिस छबि आलि नव बाम।
दिय मिलाय बिच बासर बलि घनस्याम ॥ ११८ ॥

अथ स्वयंदूतिका लक्षणम् – बरवै ।

निज बिहार हित दूती नागरि धीर ।
स्वयंदूतिका बरनत मतिगम्भीर ॥ ११९ ॥

यथा - कवित्त ।

परम बिचित्र बाग हेरौ अनुराग सङ्ग भागभरे सुरभि सुमन सजवारे से । कबि लछिराम त्यों बितान बृन्द बेलिन के तरुन तमाल पै घटान छबि धारे से ॥ सागर अमल फूले कमल मलिन्द जाल बिहरै बिहङ्ग लाल हरष हजारे से । डोलै तीर मंजु मुकुताहल चुनत बोलैं मन्द मन्द मौज में मराल मतवारे से ॥ १२० ॥

बरवै ।

चक्रवाक सुभ सारस बिहरत बेस ।
सर बिच सुखमा दिय मनु मदन नरेस ॥१२१॥

सिद्धि श्रीरामपुराधीश रैकवारवंसावतंस नृपगुमानसिंहात्मज श्री राजेन्द्रमणिमहेन्द्र महेश्वरवकससिंहजूदेव आज्ञानुसार श्रीअवधनगर निवासी लछिरामविरचिते महेश्वरबिलासकाव्ये नायकावर्णनो नाम तृतीयो बिलासः ॥ ३ ॥

—❁❁❁—

अथ षट्ऋतु वर्णनम्—कवित्त ।

सुभग समीर या त्रिबेनी को तरंग संग बंसीबट आनँद अछैबट सोहायो है। लछिराम राजै सुर मंगलीक भौरैंभीर कोकिल अवाजै तीर दिज गुन गायौ

है ॥ माधव दरस मंजु मनोरथ पूजै सबै चारु परिरंभन चतुर फल पायौ है। वृजबन बागन सभाग ऋतु राज नौल नागर प्रयागराज रूप रचि आयौ है ॥१॥

सौरभित पौन गंगधार लों विराजमान भ्रमर सुभूत सीमा फैलि फलकी फिरै। कवि लछिराम दिज बगरे बिहंग बोलैं सौरभ तरंग धूमधाम ललकी फिरै॥ विस्वनाथ बेष ब्रजराज अरधंग राधे छोर छिति मण्डल के छबि छलकी फिरै । बासर बसन्त मै सुवृजबन-बागन बिहार मो बनारस बहार छलकी फिरै॥

ओसकन मोती को बिलास बलक्यो है चारु चाननी प्रकास छलक्यौ है छीर बर सो । तरल तरंग पौन त्रिविधि बिराजै लता मज्जत परी वै अंग उपटे अतर सो॥ कवि लछिराम छवि छाई है अमल तट बारों अमराई को गुमान मानि तरसो । राजहंस बंस कल कोकिल समाज ब्रज बिथिन मै बगर्‍यौ बसन्त मानसर सो ॥ ३ ॥

चैत चंद चाननी प्रकास छोर छिति पर मंजुल मरीचिका तरंग रंग बर सों । कोकनद किंसुक अनार कचनार लाल बेला कुंद बकुल चमेली मोती लर सों ॥ श्रीपति सरस स्यामसुन्दरी बिहारथल लछिराम राजै दिज आनँद अमर सों । योहीं वृजबागन बिथोरत रतन फैल्यौ नागर बसन्त रतनाकर सुघर सों ॥ ४ ॥

सुमन समूह सोहैं साने मकरंद स्वेद चारन मलिंद यों बिरद बगराई है । लछिराम जमुना तरंग सरजू सो करि कामबन बिपिनि प्रमोद रुचिराई है॥ कामना सफल हेत काम रसराज सोहै कोकिल बिंदन की धुनि सरसाई है । वृजराज हेत विश्वककरमा बसन्त वृज-बीथिन मै अवध नगर छबि छाई है ॥ ५ ॥

स्वेद मकरंद अरबिंद से बदन भारैं अलकैं हँसनि मन्द सुमन बिथोर की । लालपट पीरे भागपूरित पराग बेलि निरत सपौन भांति भूधनु मरोर की ॥ बैन पिक मोहन-खलक लछिराम बौर झमक सुघूघट खुलनि मनिमोर की। झूलकै बसन्त की बहार अलबेली छबि छलकै अपार मानो जुगलकिसोर की ॥६॥

सारी चारु चम्पई पराग सौरभित स्वास दक्षिन समीर सीरो प्रेमरस पाग्यौ है। लछिराम झनक मलिंद भार भूषन की बैन कल कोकिल कलूक रंग राग्यो है ॥ सुमन सोहाग भाग भूपर बितान वृन्द स्वेद मकरंद ओज अरबिंद जाग्यो है । जादूगर नवलबधू के नवजोबन सों वृजबन-बागन बसन्त अनुराग्यौ है ॥ ७ ॥

भूपर पराग फहरात पट राते पीरे बदन सुकोकनद लाली की लमक सों । भूषन विहंग धुनि मधुर निकुञ्जन मै लछिराम छूटे बार भौंर की भ्रमक सों ॥

सराबोर स्वेद बरसत मकरंद बुन्द सौरभित स्वास पौन प्रेम की रमक सों। तरुन तमालन पै झूमत सुबेलि बृज बगर्‍यौ बसन्त विपरीति की झमक सों ॥ ८॥

दामिनी दमक बौर बारि मकरंद बुन्द सौरभित भूपर सनेह सरसत है। मोगरा बकुल कुन्द बिकसे बलाकवृन्द सीमा धनु चम्पक पलास परसत है ॥ बलित समीर बर बरही बितान झूमै महक मही पै सुरीसेन तरसत है। बृजबन बागन बसन्त अनुराग संग रंगदार सावन बहार बरसत है ॥ ९ ॥

दक्षिन समीर मारु मनमथ साली सेल्ह बौर मतवाली कैलिया त्यौं कहकति है। लछिराम ख्याली भौंर झुण्ड झमकत झूमै चांदनी चिताली चैतवाली चहकति है॥ बिन बनमाली फनमाली से सुमन सेना कोकिलकपाली की कला सी कहकति है। किंसुक बहाली या बसन्त मै न आली बन दादुर दवानल की लाली लहकति है ॥ १० ॥

अथ ग्रीषमरितु वर्णनम्।

ग्रीषम-तपनि मै निकुञ्ज भटभेरो चख चूमत चपल प्रेमरासि की लहर मै। संगम दिठौना भाल मृगमद बिंदु ढर्‍यौ पर्‍यौ संग स्वेद सेत सारी सरासर मै॥ कवि लछिराम करि समगन तेजै मन्द रेजा होत सारदसुमन हरबर मै। मानौ द्वै कलाधर करेजे ते मजेजदार बगर्‍यौ बरेजा लौं कलंक मानसर मै ॥११॥

सवैया।

बाहरी चौक नई नहरैं भरे हौज हवेली गुलाब के नीर सों। त्यों लछिराम परे पर देखत छाजी छतै घनसार उसीर सों॥ फूल की सेज सरोज के हार सजे सब द्वार दिवार गँभीर सों। जालिम जेठ की लूकैं तऊ करै हायल रंग मै संग समीर सों॥ १२॥

भोर ते सांझ लों लूकैं चलैं कहलैं वन सिंह करी मतवाले। ऐसी कला वृषादित्य की ह्वै रही बारहो भूपर जोति जमाले॥ सुन्दरी या वृज की लछिराम कहा करै कौतुक हेरि कराले। वारत हैं बिरहीन के अंग अनंग मै बासर ग्रीषमवाले॥ १३॥

बरवै।

जालिम जेठ दुपहरी पिय सँग वीर।
मनहु माह की रतिआ ज्वलित समीर॥१४॥

अथ पावसरितु वर्णनम्—कवित्त।

फहरे निसान असमान लों वलाकवृन्द दामिनी बितान त्यों घटान परसत है। कवि लछिराम सुर-धनु की छटान पर वारि तन मन मोरमाला दरसत है॥ तृविधि समीर संग थहरात बेलिकुञ्ज हरषित भूमि हरियारी सरसत है। व्याज वारि बुन्दन के बारिद गरजि मंद वृजबन बीथिन बहार बरसत है॥१५

कीच करि भूपर फुहारे बरसत मन्द झंझरित पौन गौन केहू न थिरत है। सुरधनु दामिनी दमक

भार भूषन त्यों रदन बलाकन की माल अभिरत है ॥ कवि लछिराम संग मदन महावत के रंगभरे सान मै दिगन्तन घिरत है । झूमि झूमि गुञ्जरत आसमान मण्डल मै आले स्याम घन मतवाले से फिरत है ॥ १६ ॥

रंगदार सामुहे सरस पटरी पै हेरि सराबोर स्वेदन पुलकि फूलिबो परै । लछिराम राते पीतपट फहरानि पर सब सुख मानि आनि बानि भूलिबो परै ॥ सावनी अँधेरी मनभावनी घटान घेर बरबस डोरि लै हरषि हूलिबो परै । वारि मान मुख पै अमान सनमान करि संग मै सुजान के हिंडोरा झूलिबो परै ॥

सवैया ।

मंद समीरनि कुञ्जन सो मिलि तीर सो ही मै लगै बरजोरे । त्यों लछिराम कदम्ब के फूलन पै जगै जीगन ज्वाल बिथोरे ॥ सावनी रैनि भयावनी मै मनभावन कूबरी के रँग बोरे । पौन परी पै परी कहलै हम झूलिहैं कौन के साथ हिंडोरे ॥ १८ ॥

बीच रह्यौ न कछू दिन रैनि मै या तम या छिति छोर उमाँचै । काम तुका से हिलैं तरु फूल दै सूल करेजे लकीर सों खाँचै ॥ वै लछिराम बिदेस बसे बिरही ब्रज कौन उपाय सो बाँचै । हेरि छटान घटान घनी मतवारे मयूर अटा पर नाँचै ॥ १६ ॥

बरवै ।

पौन झंझरित डोलत बोलत मोर ।
सावनहू परदेसी नन्दकिसोर ॥ २० ॥

अथ सरदवर्णनम्—कवित्त ।

भासमान रसिक रसीली रासमण्डल मै मण्डित अखण्ड आभा जोवन के मद मै । कवि लछिराम धूमधाम तें सहेलिन के फैली फिरै जोति मंगलीक यों सुखद मै ॥ निरत-करनि फन्द फेरी की फिरनि रास घेर मै घिरनि रूपरासि के बिरद मै । उडुगन बीच बृज भूपर जुगलचंद करत बिहार मानो चांदनी सरद मै ॥ २१ ॥

मदनसँवाऱ्यौ चंद पूनो सो बदन बेस दूनो रासमण्डल सिंगार साजि कीने तैं । मधुर मृदंगन खनक लछिराम तैसी नेपुर ठनक नौल नागरी प्रवीने तैं ॥ केसरित अंग टूटैं लाल पोखराज लर परसत स्वेदबुंद मिलि मुदभीने तै । सौरभ तरंग संग साँवरे मरद संग सुन्दरी सरद को बसन्त करि दीने तें ॥

छूटे बंकवार स्यामघन से बदन पर हार मुकतावली बलाक प्रभुताई मै । माधुरी हँसनि दाम दामिनी सी लछिराम भौंहैं मुरकनि सुरधनुष निकाई मै ॥ खनक मृदंग पग पैजनी झनक मंद गरजनि स्वेदबुंद झरि सुखदाई मै । राम की दोहाई रास रचि मनमोहनी तैं सावनअँधेरी करी सरदजोन्हाई मै ॥२३।

सारी स्वेत कंचुकी अजब तास बादले की अंगराग चंदन अजूबा चितचोरी को। कवि लछिराम साजे मुकुत सुबेस केस चौलरो गरे मै हार हीरक सुगोरी को॥ छलकत मानो बृजभूपर सुगंगधार चँदानी सरद मै बिहार बरजोरी को। नवलकिसोर संग परम प्रकासमान मण्डित अखंड रास नवलकिसोरी को॥ २४॥

कवित्त।

सरद चाँदनी लागत मनहु दवारि।
तन बन को छन सजनी धीरज हारि॥२५॥

अथ हिमन्तऋतु वर्णनम्--कवित्त।

धाम धाम धूपन के धूमधाम संग चाउ बीथिन त्यों सौरभ तरंग सुखदाई है। कवि लछिराम आले बसन तमोल तेल असन अमोल भांति भांति रुचिराई है॥ भीतर महल के किवारे बेस बंद करि बासर निसा न होत पलक जुदाई है। जुगल किसोरहि जुराफा सों जुरैबे हेत बृज बीच हरषि हिमन्तरितु आई है॥२६॥

बरवै।

परसति रतिआ छतिया विषम समीर।
या हिमन्त गुण बरनति मनु भय भीर॥२७॥

अथ शिसिररितु वर्णनम्।

परदे परे हैं जरीबाफ के महल मंजु बंद कोठरी त्यों डर विषम समीर के। प्याले धरे लछिराम सा-

मुहे सुआसव के परम प्रकास दीप जालन गँभीर के ॥ कीने गलबाहीं परछाहीं द्वै न होत केहूँ वारे मान मरकत कनक लकीर के । जुगल मसाल हेरि पाले पर लचत लसै आले रंग जोबन दुसाले कासमीर के ॥

बरवै ।

सिसिर समागम संगम प्रीतम रंग ।
मनहुँ सरस सुख बरसत मदनउमंग ॥२६॥

अथ अनुभव लक्षणम् – बरवै ।

अनुभव मन जाही तें रुषरति भाव ।
ते श्रिंगार के अनुभव कह कविराव ॥ ३० ॥
आनन्द अँग धृति सांतिक भाव स्वभाव ।
प्रगट होत रति भाव सुइन बिकसाव ॥३१॥

अथ अनुभव लक्षणम् – यथा कवित्त ।

भौहन मरोरैं चढ़ी लोचन चपल कोरैं तोरैं बन-माल छोरैं मुकुट प्रकासे मैं । टूटे हार छूटे बार वि-थुरे कपोल मंजु मसकी अबीरी कुच कंचुकी विकासे मैं ॥ नाही की करनि परछाही तें भिरनि लछिराम संग फिरनि अनंग रंग रासे मैं । मारै को गुलाल मूठि लाल के बदन हाल विहँसति बाल बरजोरी के तमासे मैं ॥ ३१ ॥

बरवै ।

भ्रू मरोरि दृग तोरति तोरति हार ।
बोरति मनु रस सागर नवरँगदार ॥ ३२ ॥

अथ सात्विक वर्णनम्—बरवै।

स्तंभ स्वेद रोमांचक अरु स्वरभंग।
कंप वैबरण आँसू प्रलय उमंग ॥ ३३ ॥
सात्विक आठो अन्तरगत अनुभाव।
जृंभा नवम बखानत सब कविराव ॥ ३४ ॥

स्तम्भ लक्षणम्—बरवै।

सोक हर्ष भय ते जब अँग थिर होय।
तहस्तंभ सात्विकमत ग्रन्थन जोय ॥ ३५ ॥

सवैया।

बासर बीते बिदेस उन्हैं हिय सुन्दरी के बिरहानल ठाढ़े। औचक आवतही घर को भटभेरी बरोढ़ यों आनन्द बाढ़े ॥ प्रेम उदै लछिराम इतो विधि मानो नई रचना कछु काढ़े। दै गलबाहीं मिले मुख सों मुख मानो रहे तसबीर लों ठाढ़े ॥ ३६ ॥

अथ स्वेदलक्षणम्—बरवै।

लाज हर्ष श्रम रोषहि प्रगटत अंग।
स्वेद सर्व तन सुन्दर परम प्रसंग ॥ ३७ ॥

कवित्त।

बानक बहाली बैस लोचन तिरीछे फंद मंद कर कोरे मैन बान करकस की। मृदु मुसकानि मारू भूधनु मरोरै मोर नासिका पै सीमा तिल फूल तरकस की ॥ लछिरामवारो गलबाही पै दुहूं के छबि दामिनी समेत स्यामघन सरकस की। कंचुकी सुरंग संग ब-

नमाल भीजै भाल स्वेदन पसीजै टेढ़ी पाग जर-
कस की ॥ ३८ ॥

कोरैं कान छोर लौं चपल बंक लोचन की चि-
तवनि चारु मारु भूनु मरोरे से । बिहरै बिहँसि
लचाहीं दै लतान बीच भाँवरे भरत भौंर सौरभ
झकोरे से ॥ कवि लछिराम सारी सुरँग सुपीत पट
फहरै सभाग भरे हरष हलोरे से । थोरे स्वेद बुन्द
बोरे छवि के तरङ्ग स्याम गोरे मुख मार मुकुताहल
बिथोरे से ॥ ३९ ॥

तीसरे पहर चली औचक अकेली भई हायल
नवेली रविकरन परुख तैं । सहज सिंगारन सों बंक
बार भारन सों बैठी दुरि कुञ्ज की कुटी मै डरि दुख
तैं ॥ कवि लछिराम स्यामसुन्दर सरस ढरैं स्वेदकन
आले कोर कुञ्चन पै मुख तैं । चन्द्रमौलि सिखर
अमन्द मन्द मन्द मानो बरसै मरन्दबुन्द वारिज
सुरुख तैं ॥ ४० ॥

झनक मनक बाजैं पैजनी पगन मंजु बानक बिराजै
कुञ्ज सौरभ सँवारे की । कवि लछिराम घेर घूँघट के
ओट कैसी ताकनी तिरीछी बंक नैन अरुनारे की ॥ म-
सकै मसोसन सहेलिन के सङ्ग वान कोरे मन कसकै अ-
नङ्ग बिसवारे की । साल गुज रटी स्वेद रंगन पसीजै
भीजै भाल अलबेली पाग जुलफनवारे की ॥ ४१ ॥

बरवै।

सुरँग बसन कन मुख सों स्वेद अमन्द।
मनहु अरुन भू बरसत मुकता चन्द ॥ ४२ ॥

अथ रोमांच लक्षणम् – बरवै।

परिरम्भनभय सीत न हर्ष प्रकास।
उठै रोम तन तिहि रोमांच प्रकास ॥ ४३ ॥

यथा—सवैया।

सॉंवरे सुन्दरी की मुसकानि पै बारौं लरैं मुकता अवलीन की। रावरे को मुख हेरति है पट ओट दै घूघट सङ्क अलीन की ॥ आनद अङ्ग अमात न कैसहूं चाहभरी नवकुञ्ज थलीन की। यौं पुलके तन रोम उठे विकसे मनो पाँखुरी चंपकलीन की ॥५५॥

बरवै।

निरखि सामुहे पिय को प्यारी हाल।
सुमन कदम की माला मनु बलि बाल ॥ ४५ ॥

अथ स्वरभंग वर्णनम्—बरवै।

रोष हर्ष मद भय तैं स्वर विधि ओर।
बरनि सुकवि स्वरभङ्गहि बचन मरोर ॥४६॥

यथा – सयावै।

साँझ समै रँगरावटी मै रँग साँवरे सों राचि आनन्द छायो। त्यों लछिराम स्वरूप की जोति सों क्वार कलाधरै मन्द बनायो ॥ ता समै औचकै मै लछिराम कछू चर्चा चलिबे की चलायो। खोली न

यौं मन की मरमै कछु बोली न बाल गरो भरि आयो ॥ ४७ ॥

बरवै।

सुनि बिदेस की बतियां सारसबैन।
गर गहबर भरि आयो कहत बनै न ॥ ४८ ॥

कम्प लक्षणम्।

डर भ्रम रोष हरष तें तन थहराय।
कम्प कहत कवि कोविद मति सरसाय ॥४९॥

सवैया।

कोठरी भीतर मैं नवला को गई लै सहेली सनेह गभीर है। त्यों लछिराम सुगन्धित सेज पै आसन दिनी बिदा करि भीर है ॥ बाहिरैं आई बहू लछिराम चल्यो तितको चुप ह्वै बलबीर है। यों थरकी वा परी परखे परस्यो मनो दीपसिखा मैं समीर है ॥ ५० ॥

बरवै।

लखि बनमाली आली थरक्यौ अङ्ग।
मनु काली नचि नाथन समुझि प्रसङ्ग ॥ ५१ ॥

अथ वैवर्णलक्षणम् - बरवै।

रोष मोह भय ते अँग बरन बिकार।
तहँ वैवर्ण्य बखानत कवि सरदार ॥ ५१ ॥

यथा—सवैया।

केलिकला मैं छकाय छकी छुट्यो लङ्क लों यौं

लट लोल जँजीरो। सोई सोहागभरी लपटी खस्यो भालथली सिरफूल सजीरो ॥ पाछिली जामिनी मैं लछिराम जगो लखि चन्द भयो मन धीरो। सीरो हरा मुकतान को त्यों मुख प्यारी को ह्वै गयो पान लों पीरो ॥ ५३ ॥

सुनत नवलतिय बतियां प्रीतमगौन।
जरद बदन तन औरै लखति न भौन ॥५४॥

अश्रुलक्षणम्—बरवै।

रोष हर्ष बस सोंकहि लोचननीर।
अश्रु कहत कवि कोविद मतगंभीर ॥ ५५ ॥

सवैया।

वै मथुरा को चले मनमोहन जाहि निहारिबे को तरसै हैं। बंक बिलोचन तें अँसुआन के बुंद उरोजन पै सरसैहैं ॥ भोरी भई मति सारद की लछिराम नयौ उपमा दरसैहैं। मानो गिरीस के सीसन पै पर खंजन सो मुकता बरसै हैं ॥ ५६ ॥

बरवै।

असुआ बुंद कपोलन यों छहरात।
मनहु कमलदल जलकन परसत बात ॥ ५५ ॥

अथ प्रलैलक्षणम्—बरवै।

जँह सँभार नाहि तन को तनिक निहारि।
सात्विक प्रलय कहत कविमत संचारि ॥५८॥

सवैया ।

झांझरी खोलि खड़ी रही ख्याल मै कारो कढ़ो तितै हेरि डरी मै । यों मुसकानि मै बाँसुरी तान की डारिगो मोहनी भागभरी मै ॥ ता छन तैं लछिराम कहा कहौं हायल रावटी सों उतरी मै । चारि घरी सों दवानवरी लों परी सी परी परी पौन परी मै ॥ ५६ ॥

बरवै ।

लखि पट पीरो फहरत भुअ थहराय ।
परी बिकल हा करियौ प्रलय सुभाय ॥ ६० ॥

अथ जृंभालक्षणम् बरवै ।

पतिबिछोह रतिआरस वलित जँभाय ।
जृंभा ताहि बखानत बुध कविराय ॥ ६१ ॥

सवैया ।

पीकभरी पलकैं अलकैं छुटी ओठन अंजन रेख सोहाति है । त्यों फटी कंचुकी छूटे छरा बंद लूटी मनो सुखमा की जमाति है ॥ सांवरे सों लपटाति उनीदी जबै लछिराम नबेली जँभाति है । छत्रपती बिधु पूजिकै मानो कढ़ी परै चौक नछत्र जमाति है ॥

बरवै ।

जब जँभांति वह प्यारी गर लपटाय ।
जुग सरोज बिच दामिनि मनु छवि छाय ॥६३॥
अनुभावहि अन्तरगत ये सब हाव ।
सुभ सँजोग मै बरनै बुध कविराव ॥ ६४ ॥

अथ हावलक्षणम् – बरवै।

तियन स्वभाव बिलासक हेत श्रिंगार।
हाव सुलीलादिक कहि बुद्धिउदार ॥ ६५ ॥
लीला प्रथम बिलास सुविक्षित धीर।
विभ्रम पुनि किलकिंचित सुमत गँभीर ॥६६॥
मोटाइत बिब्बोकहुं बिहृत बखानि।
बिच्छित कुटमित दस ये हाव प्रमानि ॥६७॥

लीला हाव लक्षणम् – बरवै।

तिय पिय को पिय तिय को बिरचै बेष।
लीला हाव बखानत सुमति बिसेष ॥ ६८ ॥

कवित्त।

सुन्दरी कै सुन्दर सवार्‍यो स्यामसुन्दर को भूषन रतन सारी चम्पई सुकोर की। लछिराम लोभी सुन्दरी को स्यामसुन्दर त्यों कीन्हों स्यामसुन्दर वनक बड़े डोर की ॥ घूघट घिरनि लाल बाल की फिरनि पीछे चाल मंद बिहँसनि भूधनु मरोर की। छाकी मैं निहारि विपरीति सुखमा की विधि झांकी बनी बांकी वृज जुगुलकिसोर की ॥ ६९ ॥

बरवै।

स्यामरंग पै चूनर गोरे पाग।
उलटे भूषन बिहरत बलि अनुराग ॥ ७० ॥

अथ बिलासहाव लक्षणम्—बरवै।

प्रगटि भाव गुन रिझवै तिय पिय पास।
तहां सुकविजन बरनत हाव बिलास ॥७१॥

कवित्त ।

पैंजनी झनक तैसी जोबन बनक जादू खनक चुरीन हाल ख्याल मैं खिलति है । मारत गुलाल मूठि तान के तरंग छाय रंगभरी सामुहे सुजान के पिलति है ॥ लाल पट बलित प्रस्वेद विहँसत मुख लछिराम हेरि सारदाऊ पछिलति है। चंद की बहाली सों बिछलि रसफन्द फेटी मानो विज्जु बारिद गुलाली सो मिलति है ॥ ७२ ॥

बरवै ।

निरतति नटवर सोहैं नागरि धीर ।
छकति छकावति बिहँसति गुन गंभीर ॥ ७३ ॥

अथ वीच्छितहाव लक्षणम् -- बरवै ।

अलप विभूषन सुखमा साजै अंग ।
विक्षित हाव बखानत सुमति उमंग ॥ ७४ ॥

कवित्त ।

नाहक धरै तूं रंग भूषन को भार अंग सहज सिंगार सान सौतिन को खोयौ है । भूधनु मरोर बीच केसरि तिलक बेंड़ी तनक दिठौना दै बनक जादू बोयौ है ॥ मंगलीक मुख बिन बेसरि प्रकासमान लछिराम तृभुवन रूप सो परोयौ है । सासन समर इन्दु आसन पै मानो संधि जुगल सरासन पै सुरुगुरु सोयौ है ॥ ७५ ॥

गोरे गात चंपई बसन मैं सोहात हान्यौ माधुरी

हँसनि सो सरदचंद पूनो है। लछिराम चाल तैं लजात राजहंस मान लोचन गुलाली तैं सरोजसर ऊनो है॥ बंदनबलित भाल मृगमदबिन्दु हाल मदनमसाल सो प्रकास कर दूनो है। चूनो दै कहति बिन बेसरि बिलोके बाल बदन बसीकरन मत्र को नमूनो है॥ ७६॥

बरवै।

सौति सजे तन भूषन हीरा लाल।
मरगज कीनी सब को मरगजमाल॥ ७७॥

बिभ्रमहाव लक्षणम्　बरवै।

करै अंग श्रिंगारहि जहँ बिपरीति।
बिभ्रमहाव बखानत तहँ करि प्रीति॥ ७८॥

कवित्त।

सजिबे श्रिंगार हेत बैठी रंगरावटी मै सौरभतरंग चौक बाहिरी लों भरि कै। मुरली मधुर मनमोहन बजाई तित छाई रोमरोम रति लाज धीर हरि कै॥ कवि लछिराम अलबेली के बदन राजै त्रिभुवन रूप की लोनाई यों सँभरि कै। तार सी कमर मै लपेटी हरबर हार आई दौरि द्वार किंकिनी को हार करि कै॥ ७९॥

कातिकी के बासर परब कों अन्हान हेत छाई तीर भीर बृजमण्डल महर की। दूरही सो परम प्रकासमान रूप लखि लोग चकचौंधे मानि चंचला

समर की ॥ लछिराम चंपकलता सी लचकत जान्यौ आवत परी है बृषभान के सहर की । काछनी कमर कीने हाल दुपटा की लाल कंध कांख सोती कीने काछनी कमर की ॥ ८० ॥

बरवै ।

द्वार बांसुरी को सुनि सजत सिंगार ।
बेसरि करन सँवाऱ्यौ अङ्गद हार ॥ ८१ ॥

अथ किलकिञ्चितहाव लक्षणम् -- बरवै ।

रोष त्रास रस बिहँसनि एकै बार ।
हाव कहत किलकिञ्चित कवि सरदार ॥

यथा— कवित्त ।

बङ्क नैन मोरै भाल भौंहन मरोरै छोरै झमकि छरा के बन्द दामिनी लों फिरि कै । तोरै गर हार घेर घूघट सिकोरै बकवारन बिथोरै हँसि बदन को घिरि कै ॥ रोषऊ पसारै पैजनी को झनकारै वारै लछिराम हीरो काकरेजी को पहिरि कै । सौरभ-तरंग संग आनन्द अनंगढारी रंगवारी हेरति किवारी मै अभिरि कै ॥ ८३ ॥

बरवै ।

राग रोष रस बरसति एकै बार ।
छकवति छकति नवेली नंदकुमार ॥ ८४ ॥

अथ ललितहाव लक्षणम्—बरवै ।

रूप रंग हँसि बोलनि चलनि अनूप ।
ललित हाव तहँ बरनत सुकवि सुभूप ॥८५॥

कवित्त।

रातो कोर चंपई कुचन पर कंचुकी त्यौं चौलरी बिसाल हीरा लाल हुलसन मै। लछिराम छाम लंक लचक मचक मंद चाल मटकीली बंकवार बिकसन मै॥ लोचन सुरंग राजै सौरभतरंग मुख माधुरी हँसनि भरी जोबन जसन मै। सांचे की ढरी सी परी चंपक छरी लौं पोखराज की लरी सी लसै सोसनी बसन मै॥

सोरहो सिंगार सारदा सी रचि सुन्दरी यौं आस पास लपट सुगंध वा भरति है। झनकार पैजनी तै बंस राजहंस हरिबानी तै बिहँसि कोकिला को निदरति है॥ कवि लछिराम कामसुन्दरी परी लौं जब लंक लचकीली पग भूपर धरति है। बंकबार भारन पै जोबन बहारन पै हारन पै राती प्रभा उपटी परति है॥ ८७॥

बरवै।

धरति पगन जब भूपर वा सुकुमारि।
मनु मजीठिरँग मनमथ मग महँ डारि॥ ८८॥

अथ मोट्टायतहाव – बरवै।

चरचा जहँ सुनि पिय की हिय रस भाव।
प्रगटै तहँ मोट्टाइत हाव सुभाव॥ ८९॥

यथा – सवैया।

वै बछरा मै धरे रहै ध्यान त्रिवेनी लौं वेनी बहार को टीको। या रँगरावटी मै लछिराम उमंग

रचे जुलफैं उलटी को ॥ केसरि खौर सराहतही वै सराहत सुन्दर भाल को टीको। सांवरे नैन मै चूनर को तिय नैन बस्यौ रँग पीतपटी को ॥ ९० ॥

बरवै।

पाग सुरंग सराहति वा सुकुमारि।
घूघट घेर बिचारत ये सब वारि ॥ ९१ ॥

अथ बिब्बोकहाव:—बरवै।

कपट अनादर ऊपर अन्तर प्रेम।
हाव मान बिब्बोको बुध कवि नेम ॥ ९२ ॥

यथा—सवैया।

कामरी ओढ़े रहो उतही करो चूनर मैली न मेल सोहागै। ये कर कंजहू तैं सुकमार पहार धरे तुअ हाथ के दागै॥ त्यौं लछिराम सुरूप त्रिभंग सो मो हिय राउरै खेलत फागै। कंचनगात में मेरे कहूं यह सांवरो रावरो रंग न लागै ॥ ९३ ॥

बरवै।

ग्वाल करत बरजोरी तूं रचि फाग।
कंध कामरीवारे नवल सोहाग ॥ ९४ ॥

अथ बिहृतहाव लक्षणम्—बरवै।

सकुचि न बोलै पिय सों सरस मिलाप।
हाव बिहृत तहँ बरनत जिनकी थाप ॥ ९५ ॥

कवित्त।

औंचक अकेली वा नवेली को निहारि आये हरषि हबेली मो सुगंध की लपट मै। लछिराम हेरि

दामिनी सी कोठरी मैं खड़ी उमड़ी प्रभा सों परी लाज की कपट मै॥ सोसनी बसन पर तन मन वारि वारि झमकि झमकि रहे प्रेम की झपट मै। हारे स्यामसुन्दर अरज करि सौंहैं तऊ राखे बंद बदन सुघूघट के पट मै॥ ९५॥

बरवै।

लखि बनमाली आँगन गवनी गेह।
सकुच सरस नहि बोली नवल सनेह॥९६॥

अथ कुट्टमितहाव लक्षणम्—बरवै।

कपट रोष परिरम्भन करि जब बाम।
हाव कुट्टमित बरनै बुध लछिराम॥ ९७॥

यथा—सवैया।

चुम्बन मै झकझोरति बाँह मरोरति भौंहैं जगी मतिजाल की। त्यों लछिराम उरोजन के परसे मुकतालर तोरै न हाल की॥ अंक भरे मुख नाहीं करै परछाहीं प्रभा भरी मैनमसाल की। ख्याल मै लाल को मोहति है मन बाल बसीकर मन्त्र के पाल की॥

बरवै।

परसत बदन मनोहर झारति बाँह।
नहीं नहीं सुनि रसमय अधिक उमाँह॥९९॥

अथ हेलाहाव लक्षणम्—बरवै।

अनिडर नाह सो ह्वै रचि विविधि बिलास।
हेला हाव बखानत सुमति नेवास॥ १००॥

सवैया ।

औचकहीं मनमोहन को मनमोहनी लै गई भी-
तरै भौंन के । त्यों लछिराम रच्यो तिय बेष ललाट
मैं चंदन रेखैं बिथोरि कै ॥ सोसनी सारी हरी अँगिआ
भरे भूषन भार सुभौंहैं मरोरि कै । पीतपटी अरु का-
मरी छोरि बिदा करी केसरि के रँग बोरि कै ॥१०१॥

अथ बोधकहाव लक्षणम् – बरवै ।

भाव गूढ़ को बोधक भावै और ।
बोधक हाव सराहत कवि सिरमौर ॥ १०२ ॥

कवित्त ।

मोगरा चमेलीमाल चंपक सुमन मेलि दीन्ही
लाल गून्ही जो मुकुट लरकत की । लाई हरबर मै
हवेली बीच सुन्दरी के हाथ पै धरत लीनी भौंहैं
फरकत की ॥ मरम न खोली साजि भूषन बसन
मेरे लछिराम रूठीं हैं न रोम थरकत की । अजब
अनूठी बात झूठी मै न भाषों भेजी बंद करि मूठी
मै अँगूठी मरकत की ॥ १०३ ॥

नवरँगराती मंजु मानिक महल बीच छबि छलकाती
सान सौतिन को हरि कै । खोली घेर घूँघट हमारो
लै अबीर मलै बिराचि बिचित्र बंक रेखै अंक भरि कै ॥
भेजी बन पास मै न जानी लछिराम औरै रचना
सुजान कीनी हेरत सँभरि कै । मृगमद बिंद खींची
केसरि लकीर लाल भाल खौर चंदन अबीरी कों
निदरि कै ॥ १०४ ॥

बरवै ।

दिय गुलाब की कलिका पिय तिय हेत ।
सुमन चांदनी माला अलि कर देत ॥१०५॥

अथ मदहाव लक्षणम् — बरवै ।

जोबनमद मद चाखे मद जब अंग ।
लाजहीन बरनै मदहाव प्रसंग ॥ १०६ ॥

सवैया ।

अंचल चूनरी को फरकै मसकी तिमि कंचुकी कोरैं सोहाति है । त्यों लछिराम बिलोचन बंक की औरै छटा छलकी छहराति है ॥ सामुहे सुन्दर लाल को हेरि अनंगतरंगढरी मुसकाति है । जोबन के मद मो मतवाली मरोरि कै भौंहन को अठिलाति है ॥१०७॥

सुन्दरी पीतपटी पहिरे बने साँवरे संग मै चूनर वाले । लाली चढ़ी मुखमण्डल पै लछिराम छके वर आसव प्याले ॥ झूमत हैं झमके झुकैं झोक मै ह्वै रहे ओज दुहून पै आले । दै गलबाहीं निकुंजन मैं बिहरैं मदजोबन मै मतवाले ॥ १०८ ॥

बरवै ।

बकि बकि दोउ रसबतियां छकि मदपान ।
जुगल कोकनद विकसत मनहुँ समान ॥१०९॥

अथ संचारी लक्षणम् - बरवै ।

थाई भाव न अभिमुख रहि सद साज ।
संचारी सब रस मै विहरि विराज ॥ ११० ॥

गुप्त प्रगट यों थाई भावन बीच।
ज्यों तरंग सर उठि कै आवत नीच ॥१११॥
थाई भाव सुथिर तहँ रस अवतार।
थिर न रहत संचारी रसवत चार ॥११२॥
थाई संचारिन यों भेद सुमानि।
निरवेदादिक बरनत मत अनुमानि ॥ ११३ ॥
प्रथम जानि निरवेदहिं बहुरि गलानि।
संक असूया श्रम मद धृति परमानि ॥११४॥
आलस बरनि बिषादहि मति चिंतास।
मोह स्वपन सुबिबोधहि स्मृति परकास ॥११५॥
अमरख वो उतसुकता अवहित्थासु।
दीनता सुहर्ष ब्रीड़ा गनि उग्रतासु ॥ ११६ ॥
निद्रा व्याधि मरन गनि अपस्समार।
आवेगहु पुनि त्रासोन्माद बिचारि ॥ ११७ ॥
जड़ता गनिय चपलता बितरक धीर।
संचारी त्यों तीसो गनि गम्भीर ॥ ११८ ॥

अथ निर्वेदसंचारी लक्षणम्—बरवै।

बिपति खेद लहि उपजै मानस ज्ञान।
ताते निज धिग मानव लखि परमान ॥११९॥
बिरह दसा याहू मैं होत सुजान।
संचारी निर्वेदहि या बिधि ठान ॥ १२० ॥

सवैया।

आवतहीं जग लाज फसे जस जानकीजीवन को तूं

न जाने। फन्द परे रस मै तरुनीन के लोग सखा घर के सनमाने॥ यों मन मूढ़ मतंग हठी सुनिबे परिहै जमराज के ताने। भाजन पाप के ह्वै लछिराम कलापन मै अवलोकन जाने॥ १२१॥

बरवै।

पाप करत नहिं डरपत जपत न राम।
जगत जाल नहि जानत तूं धन धाम॥१२२॥

अथ ग्लानिसंचारी लक्षणम्—बरवै।

छुधा प्यास कै रति श्रम सिथिल सरीर।
गनि गलानि संचारी बुध कवि भीर॥१२३॥

सवैया।

कामकमान सी लंक लचै मचकै अलकावली बंक छुटी तैं। त्यों लछिराम सँभारैं न अंग गोराई फबै अँगराग लुटी तैं॥ हायल सी रति रंग जऊ तऊ जोति जगै विधि जोग बुटी तैं। आरस मै उमड़ी छवि यों कढ़ी आवति कामिनि कुञ्जकुटी तैं॥१२४॥

बरवै।

अंग मरगजी सारी बिथुरे बार।
करति सँभार न केहूं उरजन भार॥ १२५॥

अथ संकासंचारी लक्षणम् बरवै।

लखि अपने अपराधहिं कै मन मंद।
सोक हिये सरसावै संका फंद॥ १२६॥

कवित्त।

पाछिले पहर लों जगी हौं अबै आई नींद सा-

मुहे किवारो खुल्यौ ख्याल सों उतरिगो। विधि गति बाम लछिराम धूमधाम छाय मरम न जानो इन्द्र-जाली सो निकरिगो ॥ काहल परी हों या मसोसन परोसिनि मै सौरभतरंग रंगरावटी मै करिगो। कौन मतवारो मारो बजर हमारे भाल गरद गुलाल मै कलंक अंक भरिगो ॥ १२७ ॥

चौसर सहेली संग सांझही सों खेली आज आ-रस कछूक भोर पलकन छायौ है। लछिराम येते मै समीर सो प्रवेस कीनो द्वार कन केसरि गुलाल बर-सायौ है॥ जागी रावरी सों झनकार पैजनी तें लखो बसन अबीरी पर मन्त्र सो जगायौ है। मरम न जानों जादूगर है कहां को माई महल हमारे हलि जादू करि आयौ है ॥ १२८ ॥

बरवै ।

मै खिरकी पट खोली लगत समीर ।
सोई बदन बिथोर्यौ कौन अबीर ॥ १२९ ॥

अथ असूया लक्षणम्—बरवै ।

परसुख लखि मन जाके इरषा रोष ।
ताहि असूया बरनै कवि निरदोष ॥ १३० ॥

कवित्त ।

पुलकि पसीजे रोम त्यों अनंग रंग अंग पीतपट फहरै मुकुट थरकीले से। लछिराम लोभी ह्वै चखत मणि माखन को हेरि बरजोरी हारि करत वसीले से॥

गोकुल समाज बोरे लाज की जहाज हाय पायन परत मानो मार मन्त्र कीले से। राज ब्रजरसिक सिरोमणि गोबिन्द आज गैल गुजरेटिन फिरत गरबीले से ॥ १३१ ॥

बरवै।

सजल रहत अँग आपै औरन ताप।
बिज्जुबलित बनमाली कहर कलाप ॥१३२॥

अथ मदसंचारी लक्षणम् बरवै।

जोबन धन रूपादिक के मद छाक।
मद संचारी बरनत जा जग साक॥ १३३ ॥

यथा कवित्त।

झपकीली पलकैं प्रस्वेदन बलित अंग गोरे स्याम रंग छबि घन छटा रदकी। कवि लछिराम कल बोलनि उमाह संग काम की कलोलनि कलानि मै बिरदकी ॥ अञ्चल खुलनि मोर चन्द्रिका हिलनि चटकीली की खिलनि बनमाली सौक सदकी। चाल मतवाली पर बदन बहाली पर आवै चढ़ी लाली जोर जोबन के मद की ॥ १३४ ॥

बरवै।

बिहरत बृज बनबीथिन जुगलकिसोर।
रँगवाले मतवाले जोबन जोर ॥ १३५ ॥

अथ श्रमसंचारी लक्षणम् बरवै।

पन्थ चलै कै अति श्रम स्वेद सरीर।
श्रम संचारी बरनै गुन गंभीर १३६ ॥

कवित्त।

रंग रचि फाग संग सांवरे के सोई मुख मण्डित गुलाल मै प्रस्वेदकन घोरिगो। मरगजी चूनर सुरंग पै सोहाग औरै सौरभतरंग त्रिभुवन को बटोरिगो॥ बरखि सुमन लछिराम सारदा को मन समन मरोरि छविसर मै सुबोरिगो। मेलि मुकता मै मानो मानिक चुनीन हार जादूगर मार आरसीन पै बिथोरिगो॥ १३६॥

बूटेदार कंचुकी फटी मै कुच कोरैं कढ़ीं अंगराग छूटे फूटे छबि छलकाने की। लछिराम तैसी लंक चम्पक सरासन सी जानी न परति कौन रीति पहिचाने की॥ सराबोर सेद बुंद बदन कलाधर पै छोरत कलान मुकता लर प्रमाने की। छूटे बार टूटे हार बिथुरे श्रिंगार सेज सोवति परी कै सुंदरी कै बरसाने की॥

बरवै।

करि बिहार बलि सोई श्रमकन अंग।
मगन छीरनिधि ससि मनु उड़गन संग॥१३८॥

अथ धृतिसंचारी लक्षणम् – बरवै।

जहँ सन्तोष प्रकास कुमानस धीर।
संचारी धृति बरनत मति गंभीर॥ १३९॥

यथा – सवैया।

ऊबे न तूं दुख द्वन्द को हेरि कछूकही मै सुख सामुहे छैहै। वा मनमोहन लै मुरली लछिराम त्यों

मोहनी राग बजैहै ॥ तान तरंग मै भूलिहै तूं फिरि या समाचार सबै बिसरैहै । रे मन साहसी आसरे मै रहु औसर वैसई सांझ लों ऐहै ॥ १४० ॥

औरहि सेवो तो सेय इन्है फल देत है पै कछु बार लगाई । ये पल को न बिलम्ब करै परमारथ स्वारथ सुन्दरताई ॥ यातें बड़ो सब सों लछिराम तिहूं पुर साहिबी औध मै छाई । राम गरीबनेवाज के हाथ परी सब देवन की प्रभुताई ॥ १४१ ॥

बरवै ।

करि सन्तोष भजन करु सीताराम ।
चारौं फल मिलि जैहै कामद नाम ॥ १४२ ॥

अथ आलससंचारी लक्षणम्—बरवै ।

अति जागे सो आवै आलस अंग ।
संचारी तहँ आलस सुखद प्रसंग ॥ १४३ ॥

कवित ।

पाछिले पहर लों हिंडोरा झूलि आई घरै अजब उनींदी बैठी सेज या सुमन मै । झपकीली पलकैं कपोल पीक लीक लस्यौ बदन सुरंग रंग सोसनी बसन मै ॥ कवि लछिराम जागे अब लों न केहूं लाल बोलति बोलाय अनखाहट रसन मै । खंजरीटवारे मतवारे बिधुमण्डल मै चारे हित झूमै मनु राते घन बन मै ॥ १४४ ॥

बरवै ।

आरसवलित बिलोकी तियमुख लाल ।
मनहुँ कोकनद बिकसै मिलित गुलाल ॥१४५॥

अथ बिषादसंचारी लक्षणम् बरवै ।

जहँ उपचार अकारथ सोक बिसाल ।
तहँ बिषाद कवि बरनत बुद्धिबिसाल ॥ १४६ ॥

कवित्त ।

गोरे अंग रंग चारु चूनर सुरंग बीच मंद बिहँसनि औरे आब उमचति है । कवि लछिराम छामलंक बंक छूटे बार उरजन भार तें कमान सी लचति है ॥ हारे उपचार नैन मनमथ नेजन तें रेजे पै करेजन लकीर सी खचति है । उतारि अटा सो परी नट की कबूतरी लों पूतरी लों प्यारी पूतरीन में नचति है ॥

भूधनु मरोर बीच केसरि तिलक बेंदी मृगमद बिन्दुभाल बदन अमेजे मै । बेसरि बहार बंकवार की फँसनि तैसी माधुरी हँसनि वार मनमथ नेजे मै ॥ टरति न केहूं उपचार कोटि हाऱ्यौ मन लछिराम डाऱ्यौ जादू रोमरोम नेजे मै । चाल मतवाली मतवाली सी फिरति चारु चम्पई बसनवाली कसकै करेजे मै ॥ १४८ ॥

बरवै ।

तकनि तिरीछी तिय की मनमथबान ।
लगत करेजे बिन छत बेदन जान ॥ १४९ ॥

अथ मतिसंचारी लक्षणम् - बरवै।

जहँ बिचार मत बेदन उपजै ज्ञान।
संचारी मति बरनत तहँ मतिमान॥१५०॥

यथा - सवैया।

दौरत स्वान लौं संग बिषै बिष हेरत ही मै न वेद-बिचार है। सारद नारद ईस के ईस असीसै सुने मुनि मंगलचार है॥ यों लछिराम कहां भटकै अटकै सुरराजहि के सरदार है। या छरभार उतारि कै सीस भजै किन श्रीदसरथ्थकुमार है॥१५१॥

बरवै।

मतबादन को परिहरि रे मन कूर।
द्रवहिं राम करुनानिधि जानि जरूर॥१५२॥

अथ चिन्तासंचारी लक्षणम्—बरवै।

जहँ चिन्ता मन आनै कौनहुँ काज।
तहँ चिन्ता संचारी कहि कविराज॥१५३॥

सवैया।

कूजत कुञ्ज मै कोकिल त्यों मतवारे मलिन्द घने अटके हैं। संक सदा गुरु लोगन की चल जूह चवायन के फटके हैं॥ ए मनभांवरी मै लछिराम भरे रंग लालच मै लटके हैं। या कुलकानि जहाज चढ़े बृजराज बिलोकिबे मै खटके हैं॥१५४॥

बरवै।

लोगन मै किमि लखिबी वलि बृजराज।
चौंचद चहकि चवाई करत दुराज॥१५५॥

अथ मोहसंचारी लक्षणम् – बरवै ।

बेदन बिरह असाहस तन बिज्ञान ।
मोहजनित संचारी मोह सुजान ॥ १५६ ॥

सवैया ।

सागर पै भटभेरो नयौ भयौ दोउन के हिय डोर भरी है। त्यों लछिराम चवायन की अवली उतै आनंद मै ठहरी है ॥ वा बिन धीर न आई घरै सिर गागर दै भू अचेत परी है । वोऊ तमाल के मूल अरे मुरली तब सों अधरा न धरी है ॥ १५७ ॥

बरवै ।

थरक्यौ बदन बिलोकत मदनगोपाल ।
धरकि परी दृग फेरति वा नवबाल ॥ १५८ ॥

अथ स्वपनसंचारी लक्षणम् - बरवै ।

स्वपन स्वपन को देखब सुख दुख साज ।
जागि परत सुनि बोधहि कहि कविराज ॥१५९॥

यथा—सवैया ।

आज सखी सपने मै सुजान सों मान करी झकझोरि कै बाहीं । त्योंही मनावत मै लछिराम कही अनखाहट मै मुख नाहीं ॥ जागि परे लों न दूसरो रंग चढ्यौ अखियान के ऊपर माहीं। पाटी न छोड़ि सकी कर सों परिपाटी रची रिस की परछाहीं ॥१६०॥

बरवै ।

मिल्यौ सहमि सपने मै गोकुलचंद ।
मान न छोड्यौ मो मन समय अनंद ॥१६१॥

अथ बिबोधसंचारी लक्षणम् — कवित्त ।

उपटै न प्यारीमुखमण्डल मजेज आज अञ्जन की रेखैं अधरन सों बिगारै ना। कलित कपोल पीक लीक पलकन वैसी कंचुकी फटी को नारि नीची कै निहारै ना॥ लछिराम लोभी स्यामसुन्दर परैगो पीछे अधखुली बेनी सीसफूल को सँवारै ना। रेजे करै सौतिन के सांकरे करेजे केहूं मरगजी तेजी काकरेजी को उतारैना ॥ १६२ ॥

प्रथम समागम सकेलि सुख आई चौंक चारु पैजनी की झनकार सरसति है। लछिराम छाम लङ्क लचकत छूटे बार टूटे हार कंचुकी फटी लों दरसति है॥ आरसबलित अंग सौरभतरंग संग रंगदार हास ओठ लाली परसति है। फूटी फैलि बसन अबीरी जोति हार बिज्जु नवलबधूटी पै बहार बरसति है॥

बरवै ।

जगि अरसीली बैठी बिथुरे बार ।
झूमि झूमि झमकीली करति बिचार ॥१६४॥

अथ स्मृति लक्षणम् - बरवै ।

बीती बातन को जहँ मन अनुमान ।
कहि असमृति संचारी बुद्धिबितान ॥१६५॥

कवित्त ।

वा दिन भरी जो ख्याल तरुन तमाल तरे लाल करि तुमहि गुलाल सुख भारे सो। कवि लछिराम

गजगौहर हरा दै आप लीन्हों बदले मै छोरि आ-
नँद अखारे सो ॥ छाती मै लगाय सूमथाती सों न छोड़ै छन नवरँगराती रंगमहल किनारे सो । पुलकि पसीजै भीजै प्रेमरस रोमरोम नंदलाल बाल बन-
माल के सहारे सो ॥ १६६ ॥

बरवै ।

वा दिन लखि बनमाली बदन मयंक ।
बिसरत बीर न अवलों लोचन बंक ॥१६७॥

अथ अमर्ष—बरवै ।

पर अभिमान बिलोकत् अमरख अंग ।
गनि अमरख संचारी सुमति उमंग ॥१६८॥

यथा—सवैया ।

चूनर पै रँग डारि चले बरजोरी मरोरि सुवेसरि खीच मै। त्यों लछिराम डरोंगी न सामुहे देखिहै या अभिमान नगीच मै ॥ छोड़ों तऊ तियवेष बनाय कै जौ ललिताऊ परै अब बीच मै । बोरिहों आजु तुमै बलबीर गुलाल घटा घिरि केसरि कीच मै ॥१६९॥

बरवै ।

करी काल्हि बरजोरी मदनगोपाल ।
लाल बदन करि दैहों बरसि गुलाल ॥१७०॥

गर्वसंचारी - बरवै ।

छबि जोबन धन गुनगन गर्व बिसाल ।
तहँ सुगर्व संचारी गनि बुधजाल ॥ १७१ ॥

सवैया।

यों मग मैं सिसकीन भरे पग लालिमा साफ सी भू पर छाई। त्यों लछिराम सरोज सुधाकर आरसी नाम धरे मचलाई॥ भौंहैं मरोरि कछू बिहँसै हरि हेरिबे लायक सुन्दरताई। सारद गौरिहूं को न गनै नवसुन्दरी गोकुलगाँव सो आई॥ १७२॥

बरवै।

सावन रजनी वा मुख मदनमसाल।
गनति न अपर सोहागिनि मदनगोपाल॥१७३॥

अथ उत्सुकतासंचारी लक्षणम्—बरवै।

मित्र मिलन की चाहक परम उमंग।
उतसुकता संचारी आनँद रंग॥ १७४॥

कवित्त।

खरकै ने केहूँ मन संग मैं सहेलिन के फरकत बाम भुज भौंहैं परसति है। हीरालाल माल त्यों मुसाहिबीनि देति सौंहैं बिहँसत चंद चांदनीहूँ तरसति है॥ लछिराम गनति न गौन मैं झकोर पौन मग मैं मनोरथलता सी सरसति है। नवलकिसोरी नवनेह मैं सघन वन प्रेम सरवोरी सी बहार बरसति है॥

बरवै।

वा अलबेली बिहरै जमुना-तीर।
मनहुँ चाह नद वोरी श्रीबलबीर॥ १७६॥

अथ अवहित्थासंचारी लक्षणम्--बरवै ।

परम चातुरी सों निज दसा दुराय ।
अवहित्था संचारी कहि कविराय ॥ १७७ ॥

यथा कवित्त ।

हठ करि भाभी ने पठाई ही कमलहेत बजमारी बावरी निकुञ्ज लफबारे मै। चाह के चकोर मोर भौंर मुखमण्डल पै बिधि गये गात फटे बसन सँभारे मै ॥ नाहर गरज सुनि लरजत आये हेरि लछिराम रूप ग्राह गज के बिचारे मै। आली मै न तोहि फिर मिलती उताली जौ न होतो बनमाली मधुबन के किनारे मै ॥ १७८ ॥

बरवै ।

औघट या जमुना मै बहती आज ।
जौ नहि औचक मिलतौ या वृजराज ॥१७९॥

अथ दीनसंचारी लक्षणम् बरवै ।

बिरहबिथा के संगम जब तन छीन ।
दीनतासु संचारी भनि परबीन ॥ १८० ॥

सवैया ।

सामुहे जात बनै नहि कैसहूँ बोल सुनी न परै वा अधीर की । रावरो नाम सुने थहराति है दीपसिखा बलि मानो समीर की ॥ वा दिन तें न मिले लछिराम फसी वह सांकरे प्रेमजँजीर की। पौन परी पै परै पहिचानि क्यों दीन परी परी हेमलकीर सी ॥

बरवै।

बिरहबिथा बस व्याकुल सब तन छीन।
नागर वाहि निहारो जल बिन मीन ॥१८२॥

अथ हर्षसंचारी लक्षणम्—बरवै।

कौनेहुँ कारन तें अति आनँद अंग।
हर्ष समुझि संचारी बुध कवि संग ॥ १८३ ॥

सवैया।

पैरत है मन प्रेम-समुद्र मै रंग-भरो न फिरै मतवारो। त्यों लछिराम सुरेसहूँ को सुख रंचक या मुसकानि पै वारो॥ आनँद अंग अमात नहीं या त्रिभंग सुरूप अनँग अखारो। वा बनमाल निहारतहीं तन होत कदंब को हार हमारो ॥ १८४ ॥

बरवै।

निरखि स्यामघन सुन्दर मो मन मोर।
त्रिभुवन सुखमा बारत सुखद हलोर ॥१८५॥

अथ ब्रीड़ा—बरवै।

जहँ कछु कारण तें अंग लाज सुरूप।
ब्रीड़ा तहँ संचारी कहि कवि भूप ॥ १८६ ॥

कवित्त।

ख्यालबस प्रथम समागम के नन्दलाल भाल की झलक पै सुमति मचलति है। लाल पट मदनमसाल सों बलित बाल बिथुरी अलक पन्नगीन भा दलति है॥ लछिराम कर सों छपाय उरजातन को

परसत गात त्यौं लजीली पछलति है । आछे द्वै गिरीस मैं लपटि वोजमाल सम ज्वालामुखी मानो तम जाल में हलति है ॥ १८७ ॥

आई वह सङ्ग मैं सहेली के हवेली बीच जाके सौंहै काम-अलवेली पछिलति है । लछिराम खनक चुरीन सुनि आयौ लाल हेरि नीलपट मैं नवेली यौं मिलति है ॥ बरजोरी घूँघट सो बदन बिकास्यो नेक नाहीं सँग सकुचि परी लों पछिलति है। राख्यो सोम संगमी चोराय साकरे मैं हारि हार विज्जु मानो काली घटा उगिलति है ॥ १८८ ॥

बरवै ।

अलबेलीछबि हेरन आयो लाल ।
दुरी अँधेरी मन्दिर मिलति न बाल ॥१८९॥

अथ उग्रतासंचारी लक्षणम् बरवै ।

निरदैपन की महिमा जा अंग हेरि ।
उग्रता सु संचारी कविगन टेरि ॥ १९० ॥

कवित ।

बासर बिरद बरहीन सो बिसाल सुनि बगरी बलाक-सेन तैसी तरजत है । सांझही सों अन्धकार भार को पसार भूमि झंझरित पवन दाहिबे को चरजत है ॥ जागैं ज्वाल जीगन कदम्ब कुसमित कुञ्ज लछिराम हेरि हाय हिय लरजत है । निरदई नीरद निसान फहराय बिज्जु बरजो न मानै बरजोरी गरजत है ॥ १९१ ॥

बरवै ।

निपट निरदई बगरै ग्रीषमज्वाल ।
उग्र दाहिबे बिरहिनि रजनि कराल ॥१६२॥

अथ निद्रा बरवै ।

जहँ स्वैबो अति सुखमै मति गति हीन ।
तहँ निद्रा संचारी मानि प्रवीन ॥ १६३ ॥

कवित्त ।

सोई रंगरावटी मै पलका रतन पर अंग अंग उफनत छबि सरबोरे से। छूटे बार टूटे हार लूटे त्रिभुवन सुख चारु चौक सौरभतरंगन झकोरे से ॥ मेंहदी-बलित हाथ उरज बिराज्यौ बेस सीकर प्रस्वेद लेत हरष हलोरे से। कोकनद अरुन पराग मै प्रकास मानो सिखर सुमेर मुकताहल बिथोरे से ॥१६४॥

सोई सीसमहल सोहागिनि सुमन-सेज तेजमान तड़िता लौं जोबन की जोती मै । लछिराम अञ्जन की रेख अधरन त्यों कपोल पलकन लीक लालिमा उदोती मै ॥ सारी संग सराबोर स्वेदकन सुन्दरी यौं जगमगै जोबन जड़ित लाल मोती मै । बिथुरे सिंगार छूटे बार हार मानो मार-मोहनी बलित रतनाकर की सोती मै ॥ १६५ ॥

बरवै ।

महल सुन्दरी सोई बिथुरे बार ।
मनहुँ त्रिजग सुख लूट्यो चंपकहार ॥१६६॥

अथ व्याधिसंचारी लक्षणम् — बरवै।

बेदन बिरह अतनज्वर तन घन ताप।
व्याधि कहत संचारी जा मति थाप ॥१९७॥

सवैया।

औचक आज बिसासिन के घरै यौं गई भोरै लखी बिन तेज मै। बोलेहू ना पहिचानि परै लछिराम लकीर सी त्यों परी सेज मै॥ छाती पै बेदन थाती जमाय फिरो अब गोकुल गैल मजेज मै। वाहि चितै हरि भाजी जऊ तऊ पारद की गति मेरे करेज मै॥

बरवै।

लखि बिरहिनि को बेदन नंदकिसोर।
अब लौं थरकत मानो तन मन मोर ॥१९९॥

अथ मरणसंचारी लक्षणम्—बरवै।

अँग परिहरिबो प्राननि मरन प्रमान।
सूर सती जग जोगी कीरतिमान ॥ २०० ॥

सवैया।

जानकी कौं जगदम्ब बिचारि हर्‍यौ हठ कै अनुराग तरंग मै। त्यों रघुनाथ-सरासन सामुहे आनि जुर्‍यौ बल बारिद जंग मै॥ बान की सेज मजेज मै बीरता त्यों लछिराम प्रताप के संग मै। लोग सराहत हैं तिहुँलोक मै रावन को मरिबो रन रंग मै॥

अथ अपस्मारसंचारी लक्षणम् — बरवै।

मृगी व्याधि लौं व्याकुल भू बिन धीर।
अपस्मार संचारी कहि कवि धीर ॥ २०२ ॥

सवैया।

कातिकी पूनो को आई अन्हान प्रभातही प्यारी कलिंदजा तीर मै। त्यों जल मै बलबीर बिलोकि बिधे अंग अंग अनंग के तीर मै॥ फेन बस्यौ मुख मोह मृगी मति यौं लछिराम न स्वास सरीर मै। लोटत भू पर नीर भरी मनो मीन फसी बनसी की जजीर मै॥ २०३॥

बरवै।

चलि बलि बेगि बिलोको व्याकुल बाल।
मृगी व्याधि लों भू पर तलफति बाल॥२०४॥

अथ वेगसंचारी लक्षणम् बरवै।

डग सप्रेमबस गति अति चपल निहारि।
संचारी आबेगहि कबिन बिचारि॥ २०५॥

यथा कवित्त।

फहराति ओढ़नी अबीरी बङ्क बारन पै हार मुकताहल बिथोरी ना थिरति है। कासमीरी कंचुकी पसीजी पुलकनि सङ्ग सौरभ-तरङ्गन मै घोरी सी घिरति है॥ भूधन मरोरि लछिराम बृजचन्द चाह तरुन तमाल बरजोरी अभिरति है। नवलकिसोरी नव नेह सरबोरी चारु चितवनि चोरी मै चकोरी सी फिरति है॥ २०६॥

बरवै।

चढ़ति अटा फिरि उतरति आँगन आय।
फिरकी लों खिरकी मग हेरन जाय॥ २०७॥

अथ त्राससंचारीलक्षणम् बरवै ।

अहित किये पै डर जब उपजै अङ्ग ।
कहत त्रास संचारी सुमति उमङ्ग ॥ २०८ ॥

यथा सवैया ।

सागर सो भरि नीर चली छली आनि मिल्यौ छलछन्द महान मै । त्यौं बरजोरी गुलाल मल्यौ मुख वा मचली कुलकानि के सान मै ॥ यौं भटभेरो भयौ लछिराम डरे नवनागरी के पहिचान मै । गागर को नटनागर फोरि दुरे बनसीबट बेलि बितान मै ॥ २०९ ॥

बरवै ।

पिअ अलबेली पागहि रँग मै बोरि ।
छपी महल के कोने बदन मरोरि ॥ २०10 ॥

अथ उन्मादसंचारीलक्षणम् बरवै ।

उचित भूलि करि अनुचित सिगरे काम ।
संचारी उन्मादहि कहि मतिधाम ॥ २११ ॥

यथा सवैया ।

भोर तैं और दसा लछिराम यौं बैठति है न कहूँ इक ठौरै । मानस मानसी कैधौं बिथा लगी दीठि धौं काहूँ कियौ बरजोरै ॥ मान करै बिहँसै रस मै तिरछी अँखियान कै भौंह मरोरै । छोरै छरा अनखाहट मै मुकतालरै भूतल तोरि बिथोरै ॥ २१२ ॥

बरवै।

चलति चौंकि फिरि बैठति व्याकुल बाल।
सुमन कदम्बन तोरति भेटि तमाल ॥ २१३ ॥

अथ जड़तासंचारीलक्षणम् बरवै।

जबहि चित्रवत रचना अचल सरीर।
तहँ संचारी जड़ता भनि कबि धीर ॥ २१४ ॥

यथा कबित्त।

पावन परब कातिकी को सुनि आई भोर नवल-किसोरी भोरी जमुना अन्हैबे को। कबि लछिराम रूप रासि की चमक पर चहके चकोर भौंर भूमि फल पैबे को ॥ मचि गो सनाका वारपार ग्वाल गोपिन मैं कौन है कहाँ की औतरी या छबि छैबे को। हेरत बदन तसबीर लों भई है भीर आयौ बृजचन्द मानो मनहि चोरैबे को ॥ २१५ ॥

बरवै।

लखति सावनी बानक बृज नव बाल।
भई चित्र लों भूपर मिलति गोपाल ॥ २१६ ॥

अथ चपलतासंचारीलक्षणम् बरवै।

प्रेम-बिबस अति आतुर थिरताहीन।
चपल चपलता बरनत परम प्रबीन ॥ २१७ ॥

यथा—कवित्त।

नवलकिसोरी नव नागर तिहारे हेत नट के बटा सी चौक बाहिरी कढ़ति है। आवै चौक बाहिरी

सो चपल बरोठे बीच चपल बरोठे तैं दरीची लौं चढ़ति है ॥ झाँकि त्यौं दरीची दामिनी लौं दर दर दौरै लछिराम कोठरी तैं छटा त्यौं मढ़ति है । कोठरी तै आँगन किवारे खिरकी के खोलि आँगन तै झमकि अटारी पै चढ़ति है ॥ २१८ ॥

बरवै ।

नवल बधू नव दूलह नेह उमङ्ग ।
दौरि दौरि दुरि हेरति आलिन सङ्ग ॥ २१९ ॥

अथ बितर्कसंचारीलक्षणम् बरवै ।

जहँ अचरज अवलोकन मन सन्देह ।
तहँ बितर्क संचारी कहि मति गेह ॥ २२० ॥

कवित्त ।

लाली तरवान पै बिकान्यौ बिन दामन सु कैधों बह्यौ जावक जजीरे की नहर मै । जावक जजीरे तें जुगल जंघ हेरि कैधौं फेरि पर्‌यौ त्रिवली तरङ्गन गहर मै ॥ लछिराम त्रिवली तैं घाघरे के दामन पै बिध्यौ नोक मनमथ नेजन कहर मै। घाघरे की कोर तै मजेजन हमारो मन रेजा भयो कैधों काकरेजा की लहर मै ॥ २२१ ॥

खड़ी रङ्गरावटी मै रतन-दरीची खोलि बरसै मरीची मुखचन्द सो बगर मै । कबि लछिराम हेरि लोग चकचौंधे सब करत बिचार चार जगर मगर मै ॥ ज्वालामुखी ज्वाल धौं मसाल मीनकेत मंजु

दामिनी बिसाल माला फैली चौ डगर मै । लाल की लरी-धौं मंत्र मोहन परी धौं इन्द्रजाल की छरी धौं नवनागरी नगर मै ॥ २२२ ॥

जोबन बहाली ओठ लाली की लपट कैसी जाली सी परत चारु चूनर मै सरद की। चमक अजूबा तिमि चञ्चला की फैली फिरै चाल मतवाली राजहंसन द्विरद की॥ किन्नरी नरी है कै परी है लछिराम पोखराज की लरी कै ढरी सांच मैनमद की। कौन के तिरीछे नैन ओछे अवतार पीछे अन्धकार सोहै मानो चांदनी सरद की ॥ २२३ ॥

पूतरीन बीच पोखराज पूतरी लौं परी हीतल मै बरफ के साला सी धसति है। बदन सरोज बिहँसति लछिराम मानो दामिनी दमक ओज आला उमसति है॥ रस फंद फेटी कौन अतर लपेटी जा प्रभाली पग भूमि गुललाला सी फसति है। बैजनी बसन जादू जोबन बिथोरे बार मंगलीक मरकत माला सी लसति है॥

राज हंस बाला सी बिराजै मंद चाल माल हीरा लाल भाल बेड़ी तिलक बरेजा सी। लछिराम छाम लंक लचकै उरोज भार माधुरी हँसनि बीजुरीन के लरेजा सी ॥ भूधनु मरोर कोरैं करद जुगल चारु चपल तिरीछी आखैं मनमथ नेजा सी। कतरै करेजा काकरेजा की बहार बंक अलक मजेजदार मरकत रेजा सी॥ २२५ ॥

बरवै।

मंद मंद मग बिहँसति लचकति लंक।
कौन परी या वृज मै लोचन बंक ॥ २२६ ॥

इति संचारी।

—❁❁❁—

अथ स्थाईभाव लच्छणम् - बरवै।

रस अनकूल बिकार जु उपजै हीअ।
थाई ताहि बखानत जे रस-जीअ ॥ २२७ ॥

बरवै।

सब भावन मै अधिपति तजत न संग।
परिपूरन ह्वै रस करि थाई रंग ॥ २२८ ॥

अथ थाईनाम कथनम् - बरवै।

रति सुहास गनि सोकहि क्रोधुतसाह।
भय गलानि अचरज निरवेद सुचाह ॥२२९॥
नव थाई नव रस के बरनि प्रवीन।
प्रथक रीति सो बरनौं मत प्राचीन ॥ २३० ॥

रतिस्थाई लच्छणम्—बरवै।

पति-संगम की मानस प्रीति नवीन।
रति संचारी या बिधि मत प्राचीन ॥ २३१ ॥

कवित्त।

औरै छबि होन लागी बदन-सुधाकर की मधुराई बिहँसनिहूँ मै त्यों भिरति है। लाली चढ़ी चारु बंक लोचन की कोरैं कछू भूधनु मरोर चमकीली त्यों फिरति है ॥ लछिराम लोभी स्यामसुन्दरै निहारिबे

कों काल्हि तें अटान की दरीची अभिरति है। रेजेदार कंचुकी पै अलक लरेजै खोलि दिन द्वैकही तें काकरेजा पहिरति है ॥ २३२ ॥

बरवै।

नवला बिहँसन लागी सहज सिँगार।
चहत बिलोकन पियमुख आज सवार ॥२३३॥

अथ हासस्थाई—बरवै।

बचन-रचन मै तन मन बलित बिलास ।
हासस्थाई बरनत सुमतिनेत्रास ॥ २३४ ॥

कवित्त।

ऊधम धमारि मै अकेलो करि पायो कहूँ राख्यो गहि स्यामै झुंड झमकि सहेली को। लछिराम आतुर सिंगार सुन्दरी को रचि बोलत कछू न छैल छबि लहेरली को ॥ बूटेदार सारी छूटे अलक झलक मोती सांवरी बधूटी नाम गरब गहेली को। अधखुले घूंघट पै बिहँसि बिकानी राधे बदन बिलोकि नंदगांव की नवेली को ॥ २३५ ॥

बरवै।

बनि मालिनि बनमालीहि अँग रच हार।
समुझि सुमन मुसकानी परसत हार ॥ २३६ ॥

अथ सोकस्थाई बरवै।

परम मित्र को सङ्कट परषत नैन।
दुखद सिन्धु अस्थाई सोक सबैन ॥ २३७ ॥

यथा—सवैया ।

भीर मै आरत बैन कह्यौ अब टेरत बाँकुरो नाम हिये डरि । रावन माझ सभा अपमान कै लात हन्यौ गयौं मै धरनी परि ॥ चाहत रावरे पीछे परो लछिराम न दूसरो देखि परै हरि । आनन हेरि बिभीषन को रघुनाथ के नैन मै नीर गये भरि ॥ २३८ ॥

बरवै ।

चलत प्रानपति मथुरैं तिअमुख हेरि ।
गर गहबर मुख बोले जैहै फेरि ॥ २३९ ॥

अथ क्रोधस्थाई यथा—बरवै ।

अरि अपमानहि तै जब हियरे क्रोध ।
आनद बिमुख बिचारे थाई क्रोध ॥ २४० ॥

सवैया ।

बोरिहों बानन की बरखाऽज मै नाहक मै न कमान चढावों । त्यौं लछिराम निसाचर-सेन को या पल नाम निसान मिटावों ॥ जंग जुरेरथ सारथी को रिस मै रबि के रथ पास पढावों । रावन को बिन माथ करों न तो आज से मै रघुनाथ कहावों ॥

बरवै ।

कुम्भकरन रथ हेरत रोष्यौ राम ।
रद-पट फरकत सोहैं नैन ललाम ॥ २४२ ॥

अथ उत्साहस्थाई बरवै ।

अंकुर आनन्द उपजै लखि भट भीर ।
तहँ उत्साह स्थाई जा रस बीर ॥ २४३ ॥

कवित्त।

सोहैं खरदूखन की चौदहो सहस फौजैं मौजै मढ़ी रोम रोम कलह कुलेले की। कवि लछिराम धूमधाम के सुभट साँचे हुंकरत आवैं बढ़े बानि बगमेले की॥ घदन बहाली नैन भाल पर लाली चढ़ी भूधन म-रोरवाली लषन बघेले की। तरकस बान फरकीले भुज हेरनि त्यौं फेरनि कमान रामचन्द्र अलबेले की॥

बरवै।

अंकुर आनद उपज्यौ लखि बलबीर।
हेरत बिहसि गदा को हनुमत धीर॥ २४५॥

अथ भयस्थाई बरवै।

निरखि भयङ्कर जब तन मन थहराय।
अस्थाई तहँ भय कहि पण्डितराय॥ २४६॥

कवित्त।

अवध नगर बाजे बगर बधावरे के आवैं लोग डगरे सुगन्ध की चहल मै। लछिराम औध राम-चन्द्र अवतार लीनो त्रिभुअन फैलि गो प्रकास त्यौं सहल मै॥ ब्रह्मरूप चार्‌यौभुज आयुध समेत जब जोतिमान दरसाग्यौ वोजन अहल मै। पट फहरात रोम रोम थहरात सोहैं काप्यौ गात कौसिला को आनद-महल मै॥ २४७॥

बरवै।

दावानल बनमण्डित लखि बलबीर।
थर थर काँप्यौ मो तन सङ्क गभीर॥ २४८॥

अथ गलानि बरवै ।

जह घिन बस्तु बिलोके मनहि गलानि ।
हत गलानि अस्थाई दृग दुखदानि ॥ २४९ ॥

सवैया ।

सारथी बाजि कटे महि मै परे गीध चबात लै मास के कोरैं । त्यौं लछिराम न भाषतही बनै काग चुनै चरबी के हलोरैं ॥ बान बली रन रङ्ग मै रावन राम के हीतल भाल को फोरैं । धार तै श्रोनित की मचलाय कै हेरतहीं मुख देव मरोरैं ॥ २५० ॥

बरवै ।

भग्यौ बाजि रन घायल बिधि उरबान ।
रुधिर मास चरबी सो खग लपटान ॥ २५१ ॥

अथ आश्चर्य्यस्थाईलक्षणम् बरवे ।

अचरज बातै निरखें उर अनुमान ।
अचरज थाई बरनै रसिक महान ॥ २५२ ॥

कवित्त ।

काम बन बीच कल कनकलता मै लाल श्रीफल जुगल बस कीने खलकत हैं । तित अरबिन्द पै मलिन्दन की माला मंजु सौरभित मकरन्द बुन्द छलकत हैं ॥ लछिराम दामिनी बलित लर मोती सङ्ग ताहू पै सु कौतुक सुरङ्ग ललकत हैं । बाल बिधु नीरे नील नखत जजीरे पर पीरे लाल बादर मै हीरे झलकत हैं ॥ २५३ ॥

गरब गहेली फैली चाँदनी चमक पिअ केलिया असोकन प्रभा को आदरति है। लछिराम चौकं चहकेली त्यों चकोर-भीर पट फहरेली परिमल को भरति है ॥ बाग अलबेली मै नबेली तूँ बिहँसि चारु चम्पक-लतान को चमेली क्यों करति हैं। छबि लहरेली छके बदन मलिन्द हेरि आब गहरेली अरबिंदन हरति है ॥ २५४ ॥

राजहंस बाल सी अमन्द मन्द डोले लचै लङ्क तार भार बर जोबन दरब को। तीर जमुना के फैली जोति लहरेली किते लाई लूटि चादनी की चारुता सरब को ॥ कबि लछिराम अलबेली को बदन गार्‌यो अरबिंद चिन्तामणि आरसी गरब को । राका बिधु मानो बृजमंडल उदै भो सांझ सहर सनाका मच्यौ तीज को परब को ॥ २५५ ॥

तीज के परब साझ बेले मै अन्हान आई आस पास फैलिगो सुगन्ध प्रभुताई को । लछिराम गरजे घरी मै घनघेरि लोग बरजै सराहैं सान सुकमारताई को ॥ झनकार पैजनी की जोबन बहार जादू जगर मगर भाग ह्वै रह्यौ कन्हाई को ॥ जितै जितै जाति है नबेली जमुना के तीर तितै तितै होत मानो जनम जोन्हाई को ॥ २५६ ॥

बरवै ।

कौतुक मधुबन देखो श्री बलबीर ।
कनकलता पै श्रीफल पन्नग-भीर ॥ २५७ ॥

अथ निर्वेदथाईलक्षणम् बरवै ।

जगभ्रम निरफल मानै पश्चाताप ।
थाई यौं निरबेदहि करत कलाप ॥ २५८ ॥

सवैया ।

बासर आसरे पायन मे यों बितायौ बृथा जग झूठो कहाय कै । बेद पुरान प्रमान पुरातन बूझे न काहू महान सो जाय कै ॥ होत कहा पछिताने गवार कहा लों कहै लछिराम लजाय कै । गायौ न तू गुनगाथ सनेह मे नाथ बड़ो रघुनाथ सो पाय कै ॥

बरवै ।

कीने जगत अकारथ सिगरे काज ।
जपे न सीताबर कों सब सुख साज ॥ २६० ॥

अथ रसनिरूपणम् बरवै ।

थाई अचल बिभावे अरु अनुभाव ।
थाई थिर परिपूरन तहँ रसराव ॥ २६१ ॥
भावहि ते रस प्रगटैहि मन बिकार ।
पै बिकार सों आनद रस अवतार ॥ २६२ ॥
तिन रस नाम सराहत प्रथम शृँगार ।
हास्य करुन गनि रौद्रहि बीर बिचार ॥ २६३ ॥
भय बीभत्स जु अदभुत सांत सुबेस ।
नव रस नागर बरने सु कबि नरेस ॥ २६४ ॥

अथ शृङ्गाररसलक्षणम् बरवै।

थाई रति सु बिभावै अरु अनुभाव।
सङ्गम घन सञ्चारी तहँ रस राव ॥ २६५ ॥
थिर सुभाव रति पूरन तहँ शृँगार।
तिय पिय आलम्बन सुभ सुख अवतार॥२६६॥
सखी सखा बन ऋतु ग्रह बाग बिहङ्ग।
ससि आदिक उद्दीपन बरनि प्रसङ्ग ॥ २६७ ॥
हाव भाव बर बिहँसानि आनद अङ्ग।
यह अनुभाव शृँगारहि बरनि प्रसङ्ग ॥२६८॥
संचरि तै संचारी आनँद खानि।
उनमादिक यौं बरनै मंगल मानि ॥ २६९ ॥
कृष्ण देवता मङ्गल स्यामल रङ्ग।
स्वसम्भोग बिप्रलम्भाहि द्विबिधि प्रसङ्ग॥२७०॥

अथ सञोगशृङ्गरयथा – कबित्त।

अङ्क भरि प्यारी को अमोल अनुराग भीनो मंद मंद डोलत अमन्द अगनाई मै। माधुरी हँसनि अलबेली की प्रकासमान सङ्ग चौक रङ्गरावटी लौं रुचिराई मै॥ जोबन शृँगार जादू जगमग्यौ रङ्गदार लछिराम वारौं त्रिभुअन समताई मै। हार चारु हीतल चमेली को सँवारि मार बिहरत मानो उदया चलै तराई मै॥ २७१॥

माधुरी हँसनि बार बेसरि फसनि पर ह्वै रही घटान मै छटान छटा मैली सी। परत फुहारे तऊ

पुलकि पसीज्यौ लछिराम चारुता की चकचौंध चारु फैली सी ॥ गरजनि मेघ मंद सावन बहार सङ्ग झनकार भूषन करति कामछैली सी । बाहिरी की चौक मोर चन्द्रिका चमक हेरि थिरकी फिरति बीच महल मुरैली सी ॥ २७२ ॥

साँझी सैल सावनी मै सागरा हरित पर परत फुहारे गैल व्यौत अब कीजे ना । लछिराम तू तो बृजरसिकसिरोमनि है नीरद मै दामिनी बहार लखि लीजै ना ॥ छूटे बङ्क बार भार उरज सँभारो यार बूटेदार मसकीली कंचुकी पसीजै ना । पीत पटवारे छतना दै सिर पातन के रङ्गभरी चूनरि हमारी कहूँ भीजै ना ॥ २७३ ॥

बरसै अखण्ड धार चञ्चला चमक सङ्ग फैलिगो भुअन अन्धकार सरबस मै । लछिराम तैसी गरजनि मेघमण्डल की मानो चढ्यौ बृज पर पाछिले अकस मै ॥ सराबोर चम्पई बसन अलबेली पाग पातन के छतना सवारे प्रेम बस मै । बिहँसत पुलकि पसीजे कीजे कहँ फिरैं भोरही सों भीजे बन बातन के रस मै ॥ २७४ ॥

पीत प्यारो प्यारी परी चम्पई बसन छोरै फहरात सङ्गम समीर सुखदानी के। लछिराम गैल बिहरनि गलबाही लाली पगन बहाली ज्यौं तरङ्ग बरबानी के ॥ दामिनी दमक स्यामघन की घमक

बारि बुन्द मे चमक बिहँसत यौं सयानी के ॥ सागरा हरित पै कनात कासमीरी बीच मानो परैं पावड़े ब-नात सुलतानी के ॥ २७५ ॥

बरवै ।

सुरति समर मुदमण्डित दम्पति बेस ।
मनहु पठायौ रति मिलि मदन नरेस ॥२७६॥

अथ बिप्रलम्भशृङ्गारलक्षणम् बरवै ।

बिछुरें दम्पति के जहँ बिरह पसार ।
बिप्रलम्भ शृङ्गारहि कहत उदार ॥ २७७ ॥

यथा — सवैया ।

पान समै अपमान जऊ तऊ सीरी तुमै जिमि गुञ्ज की माल है । औसर लै लछिराम वही बृज फैली फिरै मिलि ग्रीषम ज्वाल है ॥ चौगुनी धूम रचे उ-पचार जगै तनजोति मनोज मसाल है। ह्वै नटसाल सी प्यारी हिये परचै वहि मानो दवानलज्वाल है ॥

लूकैं चलैं बृजमण्डल मे बिरहानल बेदन साच मे ढारी । सेज प्रसूनहू सो डरपै थरपै न रहै घनी आँच की मारी ॥ भीरतु मैन अहीरन मे लछिराम न जानत पीर परारी । जालिम जेठ की ज्वाल कहाँ कहाँ मोगरा चम्पकमाल सी प्यारी ॥ २७९ ॥

बरवै ।

बिप्रलम्भ के भीतर पूर्बनुराग ।
मान फेरि सु प्रवासैं गनि बड़ भाग ॥ २८० ॥

अथ पूर्वानुराग लक्षणम्-- बरवै।

जबहि मिलन के प्रथमहि उर अनुराग।
तेहि पूरब अनुरागहि गनत सभाग ॥ २७१ ॥

यथा कवित्त।

बूदें परैं पीत पट पाग अलबेली पर पुलक्यौ त्रिभङ्ग तन आँनद बगर को। लछिराम हेरै धूम धाम की घटान टेरै मधुर मलार अवतंस या डगर को ॥ चरचा सुनी मै काल्हि कालिया-नथैया कैधों बारो बिहरैया बन कालिंदी कगर को। माल मो गरे दै लँगराई मै लपटि ग्वाल जादूगर कौन महरेठी के नगर को ॥ २८२ ॥

छामलङ्क छूटे बार चाल मटकीली मौज लचकत हूँ मै लसै मोगरा के माल सी। लछिराम कैधों कामनट ने सवाऱ्यौ साच वाऱ्यौ त्रिभुअन थोरी बैस विधि बाल सी ॥ अवतार चारु चाननी को जा बदन सौंहैं खौर कासमीरी भाल भौंहैं नटसाल सी। कौन सिर ऊपर अबीरी ओढ़नी है जाके बिहँसत बीरी लसै मदन-मसाल सी ॥ २८३ ॥

सवैया।

चन्द्रिका मोर गरे बनमाल सुभाल मै केसरि खौर सोहाति है। त्यौं लछिराम छटा नख ते सिखलों मनो मोहनमन्त्र की पाति है ॥ आजलों या बृजमण्डल मै न लखी इमि चालिया ग्वालजमाति है। कन्धपरी जुलफैं उलटी अँग ऊपर पीतपटी फहराति है ॥

आजलौं देखी न कान सुनी कहूँ औंचकै आवत गैल निहारो । त्यौं लछिराम न जानि पर्‍यौ हमै आँखिन बीच बस्यौ कै अखारो ॥ मूरति माधुरी स्याम घटा तन पीतपटी छन जोति को चारो । हाँस की की फाँसुरी डारि गरे मन लै गयो या बन बाँसुरीवारो ॥

बरवै ।

कौन सरद राका बिधु बिहरत बाग ।
मनहु सँवार्‍यौ बृज बिधि त्रिभुअन भाग ॥

अथ मानलक्षणम् बरवै ।

सापराध पति हेरत रिसमय सान ।
लघु मध्यम गुरु बरनत त्रिबिधि सु मान ॥

अथ मानलक्षणम् - बरवै ।

परतिय-बदन बिलोकत पतिहि रिसाय ।
छूटै छनही मै फिरि आँनद पाय ॥ २८८ ॥

सवैया ।

झूलन सङ्ग मै आये दोऊ खड़े ह्वै रहे नीचे कदम्ब सुहाय कै । और भटू मुख हेरत मै लछिराम गई मुरि भौंहैं चढ़ाय कै ॥ डारि कै मोहनी राग मलार की चातुरी मै लियो मान छोड़ाय कै । लाल हिंडोरे झुलाइ चितै बनमाल गरे को गरे पहिराय कै ॥

बरवै ।

अनत लगनि दृग हेर्‍यौ पिय को बाल ॥
बिहँसि बाँसुरी टेर्‍यौ मिलि भुज भाल ॥

अथ मध्यममानलक्षणम् — बरवै ।

कढ़त नाह के मुख सों परतिय-नाम ।
मान सु मध्यम छूटै जतनऽभिराम ॥ २६१ ॥

सवैया ।

सावन मै चले सङ्ग दोऊ जग्यौ भूषन भामिनी भाल-थली को । और को नाम कढ़े मुख तै लखि रोख हर्‍यौ छल छन्द छली को ॥ त्यौं लछिराम करी बिनती या कलानट कुण्डल की अवली को । मानतही नट नागर ब्यौत सौं छूटिगयौ बृषभानललीको॥

बरवै ।

कढ़त और मुख नामै तिय-दृग लाल ।
पिय करि निरत रिझायौ दै गर माल ॥२६३॥

अथ गुरमानलक्षणम् — बरवै ।

परतिय सङ्ग बिहारहि वा लखि दाग ।
अति कठोर गुरु मानहि कहि बड़ भाग ॥

कवित्त ।

चरन बरन बिन जावक बधूक बिन मेंहदी करन मै ललाई लहरात है । लछिराम अङ्ग अङ्गराग बिन औरै सान रोषमान मुख पै न मन ठहरात है॥ सारदा सी बसन सुरङ्ग मै प्रकासमान पारद लौं सामुहे सुजान थहरात है । बङ्क नैन बान पर भौंहन कमान पर मङ्गलीक मान को निसान फहरात है ॥ चाल मटकीली भाल खौर बिन छूटे बार टूटे हार तड़ितप्रभा को तरजत है । कोकनद बदन सुरङ्ग घेर

घूघट मै सान सम जोबन बहार बरजत है ॥ लछिराम औरै बिन अञ्जन बहाली हेरि लाली बङ्क नैन बनमाली लरजत है। बिगरे सिंगार पैजनी की झनकार पर मानो बिजै मान को निसान गरजत है ॥

बरवै।

सो प्रवास द्वै बिधि को कबिन बिचारि।
प्रथम भविष्य भूत पुनि मति निरवारि ॥

भविष्यप्रवासलक्षणम् – बरवै।

बिरह-दसा को आगम पति कहु जान।
कहि भविष्य सु प्रबासहि परम सुजान॥२९८॥

सवैया।

बीतें बसन्त के बासर क्यौं कढ़ी कैलिया बोलिबे को मतवाली। यौं झनकार मलिन्दन की परदेस को जान चहे बनमाली ॥ खीन परी घरी व्याकुल ह्वै लछिराम दसा यौं बिसासिनि वाली। दारुन मानो दवानल की बन फैली पलासन पुञ्ज मै लाली॥२९९॥

नाचैं मयूर अटान चढ़े फहराते बलाक पताक लों धीरे। वा घरकी चरचा को करै बिरहानल दारुन अङ्ग अधीरे ॥ सावन की झर सों लछिराम जू होत मही बन रङ्ग हरीरे। जान चहो परदेस को प्यारे परे घन मै धनु देव-जँजीरे ॥ ३०० ॥

बरवै।

परदेसहि किमि जैहौ श्रीबृजचन्द।
वा नवला मुरझैहै बिरह दुचन्द ॥ ३०१ ॥

भूतप्रवासलक्षणम् – बरवै ।

जा पति गो परदेसहिं व्याकुल अङ्ग ।
भूत प्रबास बखानत समुझि प्रसङ्ग ॥ ३०२ ॥

सवैया ।

चौगुनी दाह मलैज मले खसखाने बलावती ह्वाँ झगरातैं । त्यौं घनसार गुलाब के नीर सों बोलती है चिनगी बगरातैं ॥ ह्वै घनस्याम दयानिधि हे लछिराम चलो किन या मथुरा तैं । यौं फनसेस हजार ऊ तै बिथरे मनो ज्वाल प्रचण्ड धरातैं ॥ ३०३ ॥

चौक मै चारु फुहारे चलैं घनसार मलैज गुलाब के नीर सों। त्यौं लछिराम नई नहरैं छलकै भरे हौज सुगन्ध गभीर सों ॥ ग्रीषम की गरमी क्यों सहै सुकुमारी सिरीष हरा बिन धीर सों । चाहभरी बलबीर की यौं बरी जाति परी बिसवारे समीर सों ॥

बरवै ।

वा नवला बिन प्रीतम लखि बन ओर ।
मुरझि गिरत फिरि भूपर बिरह मरोर ॥३०५॥

अथ अवस्थालक्षणम् बरवै ।

बिरह बियोग अवस्था चारि बिचारि ।
षट सञ्चारी भीतर प्रथमहि धारि ॥ ३०६ २
अभिलाषा गुनकथन सु पुनि उदबेग ।
अरु प्रलाप गनि चौथो बिरह परेग ॥ ३०७ ।

अथ अभिलाष यथा · बरवै।

मिलिबे की अभिलाषन तव मन प्रेम।
अभिलाषा तहँ बरनत कबि करि नेम ॥३०८॥

सवैया।

नैन मनोरथ हेरिबे को कर हार सँवारिबे को सु
घटी मे। माधुरी हाँसभरी बतियान को कान है
गाहक बैठि तटी मै ॥ और कहाँ लों कहों दिल को
मिलै चूनर त्यों रँग पीत पटी मै। मो मन चाहतो
है फँसिबो अब साँवरे की जुलफैं उलटी मै ॥३०९॥

बरवै।

चहत नैन अवलोकन छबि घनस्याम।
ललकत भुज गलबाहीं हित अभिराम ॥

अथ गुनकथनलक्षणम्—बरवै।

बिरहबिथा मै पिअ गुन बरनै बाम।
गुनकथनहि परमानत कबि लछिराम ॥

सवैया।

दै जिन्हे बीरी सँवारती पाग सुगन्ध लै हाथन
सों सरस्यौ करैं। जा अधरान की बाँसुरी को सुनि
तान कपोलन को परस्यौ करैं ॥ जा छबि हेरतही
लछिराम निछावरि मै मुकता बरस्यौ करैं। ता मुख
चन्द निहारिबे को अँसुआनभरी अँखिया तरस्यौ करैं॥

बरवै।

रैनि दिवस जा सँग मै करत बिहार।
तिनकी श्रवन कहानी करत बिचार ॥ ३१३ ॥

अथ उद्वेगलक्षणम् — बरवै।

बिरहबिथा मन व्याकुल तन बिन धीर।
यौं उदबेग दसा मै दुखद सरीर ॥ ३१४ ॥

यथा— सवैया।

सेज सुगन्ध सोहात न कैसहूँ सौगुनी पीर समीर सो पावै। लोचन मै वही रूप त्रिभङ्ग अनङ्ग मरोर लों रङ्ग सतावै ॥ प्रेम दसा लछिराम यही रिस मै निरमोही को नाम बतावै। आँगन तैं चढै ऊची अटान पै ऊँची अटान तैं आँगन आवै ॥ ३१५ ॥

बरवै।

वा उदबेगिनि तिय की सुनिअ न हाल।
थिर न रहति पारद लों बेदन ज्वाल ॥ ३१६ ॥

अथ प्रलापलक्षणम् -- बरवै।

बिरहबिथा मै बोलै अनरथ बैन।
बरनि प्रलाप दसा कों कबि गुन ऐन ॥३१७॥

यथा सवैया।

फूल कदम्ब को तोरि घने फिरि बैठि के मूल मही बगरावै। लाल कहे भले भेटि तमाल हरा मुकताहल के पहिरावै ॥ चौंकि चलै बन सावन मै लछिराम धमारि को धूम सो गावै। हेरि घटा मै छटान रहै खड़ी मानिकै मोहनै नीरे बुलावै ॥ ३१८ ॥

बावरी लो कढ़ी कोठरी तै यौं चली खिरकी के सो खोलि किवारे। बङ्क लटैं बिथुरीं चहुँघा कछू अ-

ङ्गन कैसहूँ जात सँभारे ॥ बूझै कहै लछिराम यही गली ग्वाल हैं माखन चाखनहारे । भेटिहैं राधिका कों भरि अङ्क मयङ्कमुखी पर प्रान को वारे ॥३१६॥

बरवै ।

बूझति बनसीबट सो कित घनस्याम ।
कौन सङ्ग मै बिहरत अति अभिराम ३२० ॥

अथ मूर्छालक्षणम्—बरवै ।

अँग अचेत सुधि बुधिहत तनिक न ज्ञान ।
कबिजन कहत मूरछा परम सुजान ॥ ३२१ ॥

यथा सवैया ।

पौन परी पै परी लो परी घरी मूरछा ऐसो न भूमि निहारे । डोलति है नहि बोलति है पट खोलत मै नहि चेत बिचारे ॥ कौन दसा लछिराम कहै अब रावरी सोहन बाँसुरीवारे । देखि लै देखि मिलै न मिलै चली बाय बसन्त की संग दवारे ॥ ३२२ ॥

मंदिर मै तसबीर के आज बिसासिनि आइ बिथा उभरी सो । हेरतही लछिराम कहा कहों मूरछा तैं परी टूटि परी सो ॥ प्यारे कृपानिधि हेरिऐ तो न तो आइबो छूटिहै या नगरी सो । और की मानो सरीर धरे बिरची तसबीर लौं चारि घरी सो ॥

बरवै ।

तान सुनत बनसी की मुरछित बाम ।
मनहु रची बिधि मूरति बन घनस्याम ॥३२४॥

अथ हास्यरसलक्षनम् – बरवै ।

प्रथम देव थिर हाँसै सेत जो रङ्ग ।
बिछबि बोलि सु उछलिवो भाव प्रसङ्ग॥३२५॥

बरवै ।

वैबो बदन जु हँसिबो गुर लघु राग ।
सु अनुभव सञ्चारी मुद बड़ भाग ॥ ३२६ ॥

यथा – कबित्त ।

द्वार चार बीच बेष दूलह दिगम्बर को ह्वै रह्यौ अभूत भूत बंस के बगर मै। पञ्चमुख पिंङ्गल जटा की लटैं छूटीं भूमि झूमि झूमि हेरै भङ्गरङ्ग के रगर मै॥ लछिराम देव देवराज त्यौं बिरञ्चि हरि ओट दै बसन हँसैं हरखे डगर मै । ज्वाल गङ्ग चन्द्रभाल माल व्याल बीच नचै बूढ़ो बैल नीचे हिमवान के नगर मै॥

लछिमी समेत लछिमीस्वर सनेहभरे भेटिबे को आये सम्भु सैल सनमाने से । लछिराम गौरि अगवानी मै हरषि चली चले सङ्ग आपऊ सनेह सरसाने से ॥ मिलत बघम्बर खगेस की डरन खस्यौ भूतल उचकि व्याल बिवर पराने से। अम्बरबिहीन धरे कम्बर करन हारे हेरैं हरि वदन दिगम्बर दिवाने से॥

बरवै ।

रचे लाल तिअबेषहि बिहरत बाग ।
राधे लखि हँसि बोली अचल सोहाग ॥३२७॥

अथ करुनारसलक्षणम् बरवै।

मरिबो दुख आलम्बन बरनत लोग।
कृत उद्दीपन जानत ताके जोग॥
चैबो भूतल गिरिबो ये अनुभाव।
निर्बेदादिक तह संचारी ठाव॥ ३३१॥
बरन कपोत जो थाई सोक बिचारि।
बरुन देव करुनारस ग्रन्थ निहारि॥ ३३२॥

यथा – सवैया।

बोली बिलाप कै नाहर तू किये बन्दि मै आपने सारे बली सुर। दण्ड लिये सब सो पल एक मै कै बिनती बचे मङ्गल वै गुरु॥ ते भुज गीधन के बस मै लछिराम कहो रचना किती आतुर। रावनमुण्ड मही पर्‍यौ हेरि अचेत मदोदरी के दरके उर॥

कवित्त।

पट फहरात पीत पट फहरात सोहै द्रुपदसुता सो कौन आरत पुकारैगो। साकरे मै ग्राह गजराज की गरजहू तैं अरज हमारी मानि बिरद बगारैगो॥ लछिराम दपटि दुसासनै दुराज बीच राजन-समाज अब लाजही सँभारैगो। बृजकरुनाकर न ऐहो करुना करि तो कौन करुनामै करुना कर निहारैगो॥

रावन समाज आपने मै अपमान कीनो आयो मानि बड़ो महाराज बिधि हर सो। कोमलसुभाव को न देव दूसरो है ऐसो जान्यौ बेद पूरन पुरान धरा

धर सो ॥ लछिराम राव रामचन्द सो कलपतरु तापहि मिटावौं क्यौं बबूर तरु तर सो । दामन सँभारो बिन दामन को चेरो फस्यौ छूटिहै न दावन बिभीषन के कर सो ॥ ३३५ ॥

बरवै ।

मुरछित हेरि लषन को श्रीरघुबीर ।
करुनामय उर धरके दृग जुग नीर ॥ ३३६ ॥

अथ रौद्ररसलक्षणम् बरवै ।

रौद्र लाल रँग थाई क्रोधहि जानि ।
आलम्बन अरि मुख भटभेरो मानि ॥ ३३७ ॥
रदपट फरकति भौंहैं लोचन लाल ।
पै अनुभाव बखानत सुमति बिसाल ॥ ३३८ ॥
सञ्चारी गर्बादिक प्रगटत भाव ।
रुद्र देवता बरनत सब कबिराव ॥ ३३९ ॥

यथा कवित्त ।

सामुहे सदल कुम्भकरन कुलेले हेरि रदपट भानुबंसभूषन के फरके । कबि लछिराम धूम धाम की समर मानि परम प्रचण्ड दोऊ भुजदण्ड खरके ॥ नैन भाल बदन अरुन बाल-सूरज से धराधर सिखर बराहरद करके । क्रुद्धवान कातिल कमान पै चढ़त रोदे फोरै बान तरकस राव रघुबरके ॥ ३४० ॥

अथ बीररसलक्षणम् - बरवै ।

बरनि बीर रस थाई सुभ उतसाह ।
रुद्र देव रँग गोरो चौबिधि चाह ॥ ३४१ ॥

जुद्ध दया अरु दानै धर्म सु बीर ।
बरनत कविजन ग्रन्थन मतिगम्भीर ॥ ३४२ ॥
आलम्बन अरि मुद उद्दीपन बैन ।
फरक भाव अनुभावै राते नैन ॥ ३४३ ॥
गर्बादिक सञ्चारी मति प्राचीन ।
जुद्ध बीर बरनत यौं सु कबि प्रबीन ॥ ३४४ ॥

यथा कवित्त ।

आवैं चढ़ी चारु चतुरङ्गिनी चपल जोर बहसी बिलासमान रावन-झमेले की । कवि लछिराम सौंहै भानुबंसभूषन के तरकत बन्द भौंहै कातिल कु-लेले की ॥ फरके प्रचण्ड कर खरके धनुष बान ह-रके न मानै मन मौज बगमेले की । अरुन सरोज सो अमन्द मुख-ओज औरै मन्द बिहँसानि रामचन्द्र अलबेले की ॥ ३४५ ॥

अथ दयावीरलक्षणम् -- बरवै ।

बचन साँकरे जाचक बरनि बिभाव ।
हरनि दुखद मृदु बोलनि पै अनुभाव ॥ ३४६ ॥
धृति आदिक सञ्चारी मानस मानि ।
दया बीर गुन बरनत इमि सुखदानि ॥ ३४७ ॥

यथा — कवित्त ।

फटी सीस पाग बिन पानही पगन आये अङ्ग अङ्ग रङ्ग फैलो दुखद के जामा को । कबि लछिराम कछू बोले गदगद कण्ठ महल कहाँ है दीनबन्धु

अभिरामा को ॥ काहू भाँति पहुँचे मरू कै द्वारपाल बूझे ताही छन ह्वै गयौ दरद गुनधामा को । अङ्क भरि भेट्यौ फेट्यौ करतल चार्‍यौ फल मदनगोपाल हेरि बदन सुदामा को ॥ ३४८ ॥

अथ दानबीरलक्षणम् - बरबै ।

लघुता धनकी मन मैं ये अनुभाव ।
हरषादिक सञ्चारी गनि कबिराव ॥ ३४९ ॥
मङ्गन-मुख लखि ज्ञानै तीरथ सङ्ग ।
ये बिभाव तहँ बरनत कबि रस रङ्ग ॥ ३५० ॥

यथा - कबित्त ।

मंगन मिलै न कोऊ प्रतिछन हेरै जग बिरद-नेवाज नौल भुज रहैं फरके । कबि लछिराम गजरथ बाजि हीरा हेम नेम करि कामधेनु सङ्ग मोती लरके॥ हरके न मानै मन परके महान मौज थरके करेजे त्यों सुरेस बिधि हर के । बारहो महीना दान धारा बरसत बारि जुगल घटा से कर कौसलकुँअरके ॥३५१॥

मिलत गुनीन बलि बिक्रम करन रूप बरषत रतन कबिंदन के घेरो मैं । लछिराम बिरद बितान फहराय बेस हिंदुआन हातिम हरष मान टेरो मैं॥ तेरी मंजु मौज पै महेस्वरबकससिंह बारि बारि समता हजारन की फेरो मैं । अपर महीप सब मान को कलपतरु रैकवार दान को कलपतरु हेरौ मैं ॥ ३५३ ॥

अकथ कहानी महा मौज की मचाई धूम वार

पार सागर लों सीमा सरबस की । छाई हिमिगिरि पै गभीर तासु याकी लछिराम रसना पै रुचि है शृ-ङ्गार रस की ॥ राम की दोहाई तो कछूक बरनो मैं मिलै जोपै प्रभुताई कहूँ सारदा सहस की । हिन्दुआन-भान श्रीमहेस्वरबकस अब गाई नहि जाति गरुआई तेरे जसकी ॥ ३५४ ॥

अंस अवतारी बंस रैकबार सिरमौर अवतार तेरो है अमर जस लीबे को । कबि लछिराम करि मण्डित सु अभिलाषै गनत न हीरा लाल गजरथ छीबे को ॥ हिदुआन-भान भूमि दूसरो करन आज भूप श्रीमहेश्वरबकस दान दीबे को । हीमे होत सतकण्ठ आवत सहस भाषै लाख मुख मचलै करोरि कर कीबे को॥

गजरथ हीरा लाल माल मुकताहल के मण्डित सु मौज लाखै बिरद नबीनो है । पारस महेश्वरबकस ज्यौं कन्हैया मिल्यौ लछिराम तैसई सुदामा फल लीनो है ॥ दारिद बिदारि मेटे भाल के कलङ्क अङ्क रङ्क तै महान राव रैकवार कीनो है । आँगुरी दसन दाबि चार्‍यौ मुख बन्द करि चौंकि चतुरानन कलम धरि दीनो है ॥ ३५६ ॥

अथ धर्मबीरलक्षणम् बरवै ।

भेद बेद मन धरिबो नीति पुरान ।
ये बिभाव कबि बरनत सुमति महान ॥३५७॥
बेद बचन तन सोधव ये अनुभाव ।
संचारी धृति आदिक तहँ ठहराव ॥ ३५८ ॥

सवैया।

श्रीदसरथ्थ महीप के बैन को मानि मही मुनि बेष लयौ है। पै कछु खेद न कीनो हिये लछिराम सु बेद पुरान बयौ है॥ सातहू दीपन के अवनीप प्रजा प्रतिपाल को रङ्ग रयो है। राम गरीबनेवाज को भूतल धर्मही को अवतार भयौ है॥ ३५९॥

अथ भयानकरसलक्षणम्—बरवै।

भय थाई थिर सङ्गम भय रस मानि।
परम भयंकर लखन बिभाव प्रमानि॥ ३६०॥
ह्वै अधीन तन कँपिबो गनि अनुभाव।
संचारी मोहादिक तहँ ठहराव॥ ३६१॥
कालदेव रँग कारो सु कबि सराहि।
बरनि भयानक रसको या बिधि चाहि॥३६२॥

यथा कवित्त।

पीसैं दीह दसन लँगूर पटकत भूमि झूमि झूमि डोलत बिकट भौंह फरकी। कबि लछिराम अंधकार वारपार फैलो गरजनि मानो प्रलैकाल जलधर की॥ तोरैं बन बिकट गिरिन्द बगमेले फोरैं कमठ करिंद कोल छाती जाति करकी। कारे लाल मुख रीछ बानर बिराट फैले आई पार सागर के सेना रघुबर की॥

गरज नगारे की निसान फहरात नील बरदानी बोलत नकीब सम्भु सुर को। लछिराम सङ्ग बरछै-तन की फैल तैसी अन्धकार गरद गुबार गैल पुर

को ॥ रैकवारकलस महेश्वरबकस आगे लत्ता होत बैरीदलबल बेउजुर को । मत्ता पै सवार छेम छत्ता की छटा कै जब कत्ता लेत कर मै चकत्ता रामपुर को ॥

मन्त्रित महेश्वरबकस के भुजन भरै रङ्गदार जौहर तरङ्गैं जंग जत्ता की । लछिराम कर मंगलीक बीजुरी लों होति रन बन गहर गुलाली रोष रत्ता की ॥ झपटै फनाली बाढ़ि चढ़िकै रुधिर कछू काटति लपटि गरै अरि उनमत्ता की । कढ़ै म्यान-बामी तैं लहरबाज पन्नगी लों कहर कृपान रामपुर के चकत्ता की ॥ ३६६ ॥

अथ बीभत्सरसलक्षणम् बरवै ।

बरनौं रस बीभत्सहि थाई ग्लानि ।
रुधिर माँस दुरगन्ध बिभाव बखानि ॥ ३६७ ॥
उठन रोम तनकम्पन ये अनुभाव ।
मोह मूरछादिक सञ्चारी ठाव ॥ ३६८ ॥
महा काल जा देवै नीलो रंग ।
या बिधि रस बीभत्सहि मानि प्रसंग ॥ ३६९ ॥

यथा - कबित ।

केते बिनमुण्ड केते रुण्ड फरकत फूले गीधन के झुण्ड बहे रुधिर पनारे मै । कबि लछिराम जोगिनीन की जमाति फैली चरबी चबात मास करिकै किनारे मै ॥ नाचै मुण्डमाली मुण्ड माला सों भरत कण्ठ फँसिगो बरद बूढ़ो आँतन अखारे मै । गरद ल-

थारे कटे बाजि गज रथ फारे रावन सुभट राम रन रोखवारे मै ॥ ३७० ॥

अथ अद्भुतरसलक्षणम् - बरवै ।

अचरज थाई जा रस अद्भुत मानि ।
अनहोनी गति निरखि बिभाव सुठानि॥३७१॥
कपाति बचन रोमांच गते अनुभाव ।
सङ्कादिक बितरक सञ्चारी ठाव ॥ ३७२ ॥
पीत बरन अरु देवै जा करतार ।
अद्भुत रस इमि बरनत हृदय उदार ॥३७३॥

यथा - कवित्त ।

स्याम घन तन पै बसन बिज्जु हार सोहै ब्रह्मजोति मानो रोम रोम के बगर पै । चकत किरातिनै सुरूप चकचौधन मै मीचै नैन बड़े बड़े मुनि खरे थर पै ॥ बूझे पै कहत लछिराम नाम रामचन्द्र अचरज फैलो नदी बन थर थर पै । मित्र सबही के मानो परम पवित्र चित्र वै रहे विचित्र चित्रकूट के सिखर पै ॥ ३७४ ॥

दोहा ।

थाई जा निरबेद है समरस ताको नाम ।
मृतकादिक सतगुर बचन ये बिभाव तेहि ठाम ।
गर गहबर के सङ्ग तहँ रोमांचै अनुभाव ।
संचारी हरषादि धृति बरनत बुध कबिराव ॥

सुक्ल रङ्ग सुभ देवता बिष्णु सकल गुनधाम ।
सम रस या बिधि कहत हैं जो कबिता अभिराम ॥

यथा कबित ।

कहर कराल भवसागर बिसाल बीच बूड्यो त्यों बहत बिषै सङ्गम लहर के । लछिराम तापर न बूझै है सयान-मत सकल अयानप सनेह मै समरके ॥ फेरि पछितैहै कर मलि कै अचलि भूमि जीवन बिचारै जे बिरंचि हरा हर के । गावै तू न गुन मन कामना-कलपतरु त्रिभुअनमण्डन महीप रघुबर के ॥

दोहा ।

करत कहा मन बावरे तू भवसागर-सङ्ग ।
फिरि पछितैहै नाम जपु रामदेव नव रङ्ग ॥३७९॥
रस नव की रचना सुन्यौ रैकवार भूपाल ।
राधे नखसिख ध्यान मै भयौ मगन ततकाल ॥
बिहँसि कह्यो लछिराम सों रचिये नखसिख बेस।
अनुसासन सिर पै धर्‌यो जय करि श्रीमथुरेस ॥

अथ बारबर्णन—दोहा ।

सटकारे सौरभ सदन स्याम घटा के रङ्ग ।
लफवारे तिअ बार तुअ जादू जमुना सङ्ग ॥३८२॥

यथा कबित ।

सौरभित सोरहो सिंगार के सिंगार हार छलकि छवा लों छूटे अजब लरेजे हैं । लछिराम लोभी स्यामसुन्दर बिहार हेत अन्धकार सावन घटा से लहरेजे

हैं ॥ कूहूके कुमार सोभासर के सिवारहू तें बगर ब-
हार साले सौतिन करेजे हैं ॥ बङ्क बार-भार सुन्दरी
के सुकुमार मनमोहन मजेजदार मरकत-रेजे हैं ॥

सावन-घटा मै चारु चपला चमक कैधौं मरकत-
माल मुकताहल प्रभा की है । लछिराम कैधौं छीर
सर पै सिवार फैल्यौ हिमिगिरि पै धौं राहु-सेन छल
छाकी है ॥ मदन-मसाल पै अजब अन्धकार-भार
कैधौं आरसी पै नाग-सुन्दरी जमा की है । माधुरी
हँसनि जोति जादू लों अलक संग कैधौं गङ्गधार पै
तरङ्ग जमुना की है ॥ ३८४ ॥

दोहा ।

परिपाटी पाटीन की निरखत नन्दकिसोर ।
आरत सम घन के पटल मरकत पाटी डोर ॥

यथा - कवित्त ।

बदन बहाली चढ़ी चारु चख लाली कोरैं भौंहन
कमाली भाल भूषन समाज को । कवि लछिराम त्यों
कपोल कासमीरी घेर घूँघट अबीरी भार त्रिभुवन
लाज को ॥ कौन परिपाटी तें सवारी कर पाटी मन
सारद उचाटी समगन सिरताज को । अरविंद ऊ-
पर सुरूप सजि मानो बैठ्यौ परन पसारि कै परिंद
रसराज को ॥ ३८६ ॥

मांगवर्णनम् दोहा ।

बन्दन मोतीलरबलित माँग मोहनी हेरि ।
प्रभा साँति की डगर की दई साँवरो फेरि ॥३८७।

कवित्त ।

उरज-उठान पर मृदु मुसकान पर जोबनजलूस जग्यौ जगर मगर है । बङ्क नैन कोर पर नासिका की मोर पर भूधनुमरोर पर जादू को बगर है ॥ मो-तीलर बन्दनबलित माँग मोहनी की लछिराम लोभी हेरि नागर नगर है । सङ्गमी सोहाग सुरधनु की छटा तें घेर सावनघटा में मानो साँति की डगर है ॥

जूरोवर्णनम् दोहा ।

सुभ सुरङ्ग गुनगनबलित मुकताहल मनि सङ्ग ।
नव रँङ्ग जूरो निरखि तिय नागर नेह तरङ्ग ॥

कबित्त ।

अधर बहाली पै बहार नकबेसरि को केसरिति-लक बेंड़ी तैन खरकत को । कबि लछिराम नगब-लित सँवारि जूरो जापै वारि सम हारि ही न धरकत को ॥ रामकी दोहाई तेरे बदनबिलास पर जादूको जलूस मानि जो न फरकत को । नौरतन-मण्डित मजेज इन्दु पीछे मानौ राख्यौ मारसिखर खरादि मरकत को ॥ ३८६ ॥

सीसफूलवर्णनम्—दोहा ।

अरुन बरन भूषन सिखर मण्डित माँग मजेज ।
सीसफूल सुकमारि बर मनु सोहाग सुभ तेज ॥

कबित्त ।

कलित कपोलन पै छापकल केसरि की तैसी छटा चूनर सुरङ्ग फहराती पै । कबि लछिराम कोकनद

अरसीले नैन सम न मलिंद पूतरीन थहराती पै ॥ त्रिभुअन वारों स्यामसुन्दर सभाग पाटी सीसफूल लालिमा अजब लहराती पै । बखतबुलन्द बृजभूपर सु मानो बन्यौ तखतनसीन मारतण्ड राहुछाती पै ॥

जमुनातरङ्ग पै कलित कोकनद कैधौं अन्धकार ही पै भोर भानु बिलसत है । लछिराम नीलमसिला पै धर्‍यौ भौम कैधौं मानिकसुमन मरकत मै बसत है ॥ कूहूके कुमार पै प्रकास फन काली कैधौं घन धनु बिज्जु की बहाली हुलसत है । सोरहो सिंगार परिपाटी को कलस कैधौं सीसफूल प्यारी तेरी पाटी पै लसत है ॥ ३६३ ॥

धार-जमुना मै धसी हरबर भोरी भयौ औरै भास भूषन छटान छहरेले को । नौरतन बेंदी अरुझेली गुन सीसफूल सङ्ग लै बहार बार मञ्जन सुबेले को ॥ पैरत परी के परमानद सराहै कौन लछिराम वारौं उपमान के सलेले को । मानो राहुदल के झमेले फहरात मारू नौलखी निसान मारतण्ड अलबेले को ॥

बेनीवर्णनम् दोहा ।

मुकताहल गुन सुरँङ्ग सो सङ्गम बिरची बेस ।
बनिता बेनी रावरी मनहु त्रिबेणीदेस ॥ ३६५ ॥

सवैया ।

श्रीवृषभानलली को लखो बरसाने भयौ रतिको अवतार है । त्यौं लछिराम प्रभा नखतैं सिख लौं चढ़ी

थोरेही बैस अपार है ॥ पीठि पै बेनी परी की परी गुन लाल मिल्यौ मुकताहल हार है। कञ्चन के दलके दल बीच बिराजति मानो त्रिबेनि की धार है ॥

यौं उमड़ी प्रभा भूधनु पै बढ़ी बङ्क बिलोचन कोर पै लाली। गोल कपोलन की सुखमा बृजसौतिन के मन साल सी साली ॥ पीठि पै चोटी निहारतही मुरझाय रह्यौ रस मै बनमाली। चूमति चन्दको मानो अमी धनु चम्पई पै चाढ़ि नागिनि काली ॥ २६७ ॥

भालबर्णनम् दोहा।

भाजन भाग सोहागथल भाल भामिनी हेरि।
नन्दलाल वारे सुमन त्रिभुवन के सम फेरि ॥२६४॥

यथा सवैया।

ढार्‍यौ सिंहासन कैधौं अनङ्ग को कैधौं प्रकास है रङ्गथली को। आठै को इन्दु उदै अभिराम कियौं कैधौं संगम राहु छली को ॥ सासुहे तैं लछिराम लखो सुभ सेज किधौं रतिकी अवली को। भाग सोहागन सों सरस्यौ लस्यौ भाल किधौं बृषभान लली को ॥

बेदीं बिराजै जराय-जरी रची बंदन केसरि बेड़ी लकीर है। स्वेद के बुन्द कछू छलके लछिराम लखे मुख होत गभीर है ॥ सारद को न मिलै उपमा घरी द्वैक सों ठाढ़ी सरोवरतीर है। आठै के इन्दु के ऊपर मानो अमी हित नौल नवग्रह भीर है ॥३००॥

टीकोवर्णनम् दोहा।

बलित नवरतन भाल थल टीको छबि सरसाय।
मनहु बसत छबि सेज पर ग्रह नछत्र समुदाय॥

यथा सवैया।

बेड़ी लकीर सु केसरि की त्यौं बिराजत बुन्द सु बंदनही को। औरई ओज अमात नहीं चढ़ी लालिमा त्यौं मद की अवली को॥ कैसे कहौं बृषभानलली लछिराम छटा बृज भूमिथली को। माहिर साँवरो क्यौ न बनै तुअ भाल पै जादू जवाहिर टीको॥

कवित्त।

खड़ी चौक चाननी के मानिक चऊतरे पै जोबन बहार जादू जौहर प्रभाली मै। लछिराम अधखुल्यौ घूघट समीर सङ्ग जोति विधु बदन बिलोकि मतवाली मै॥ सरस्यौ दिठौना बेड़ी केसरि तिलक बीच नौरतन बेंदी बर बदन बहाली मै। ग्रहन समेत गुरगोद मो समौज मानो मारू मन्त्र जपत मनोज मद लाली मै॥ ३०३॥

चौक चादनी के चारु चौरँग चऊतरे पै भूपर चमक यौं कहू न अतरत है। लछिराम लङ्क लचवाली भार जोबन के लाली बङ्क लोचन बितान बितरत है॥ छूटे बार भार सों लपटि लट बेड़ी भाल सन्यौ सेद मृगमदबिंद लै तरत है। भरिकै मयङ्क अंक राहु लै करद मानो कठिन करेजे को कलङ्क कतरत है।

बीरी बेस बदन कपोल कासमीरी छाप सीरी मंद हँसानि बगर हार हीरे सों। लछिराम नौल नथ मोती की बहार तैसी ताकनि तिरीछी मौज पलकन धीरे सों॥ मानिकजटित भाल मरकत-बेंदी मिलि मङ्गलीक भूधनु मरोर के जजीरे सों। फरस मयङ्क बाल सूरज सिंहासन पै बैठ्यो मार मानो धनु परखत नीरे सों॥ ४०५॥

सहज सिँगार मैं सोहाग सुन्दरी पै लख्यो छूटे बार लूटे मौज मरकत-माला मैं। नीलमणि-जटित सु कोरैं लाल बेंदी भाल केसरि तिलक बेंड़ी सेदकन जाला मैं॥ लछिराम लोभी स्यामसुन्दर दरसकेहूं सम को बिचारत मजेज मौज माला मैं। सुरगुर सोहैं लै रिसाला उड़गन संग बैठ्यो मारतण्ड मानो मरकत-साला मैं॥ ४०६॥

भौंह बर्णनम्—दोहा।

बरनत भामिनि-भ्रूलता बिनगुन मदनकमान।
सयन समय सारङ्ग को मनहु पंख बिथुरान॥

सवैया।

लङ्क लों बङ्क लटैं बिथुरी समता हैरं स्याम घटान की सोहैं। त्यों लछिराम ललाट पै केसरिख्यौर लखे मन होत हरोंहैं॥ छोर लों कान मरोरैं मिली उगिली परैं आनद आब हसोंहैं। औरई ओज अदा उमड़ी चढ़ी कामिनी तेरी कमान सी भौंहैं॥४०८॥

कै रसराज बिहङ्ग को चेटुआ पंख पसारि कै सो-
वन चाहैं । कै लछिराम बिरञ्चि लकीर खिची वर
बङ्क मजेज अथाहैं ॥ औरै प्रभा भरें आनन पै कै
बिना गुनवारी कमान कला हैं । भामिनिभौंहै बि-
राजती कै रसराज के कानन की द्वै लता हैं ॥४०९॥

पलक बर्णनम् - दोहा ।

प्यारी-नैनन की पलक झमकीली गुनधाम ।
मनु तरकस तर तीरहित मदन रची अभिराम ॥

सवैया ।

कै मन-मानिक तौलिबे को पला प्रेमतरङ्ग भरी
छबि छाजैं । लोचन तीरै सँभारिबे को लछिराम
धौं नौल निखङ्ग बिराजैं ॥ संपुट मार बसीकर मन्त्र
के हेरतही समता गन लाजैं । पुंज प्रभा झलकैं
खलकैं पलकैं किधौं प्यारी के नैन की राजैं ॥४१०॥

बरुनीवर्णनम् - दोहा ।

नवल बाल-दृग देखि पै बरुनी बङ्क सुवेस ।
मन-बेधन को मनु रच्यो सुई सु मदन नरेस ॥

सवैया ।

आनन-रङ्ग पै चंपक है कहा हास मैं दामिन हूं
दबै कोने। त्यौं लछिराम जू नैनन की छबि हेरत होत
कुरङ्ग लजोने ॥ सुन्दरी की बरुनीन पै आब चढ़ी
रहै मानो प्रकास मै लोने । मोहन के मनै बेधिबे
को बिरची है बिरंचि सुई भरी टोने ॥ ४११ ॥

नेत्रवर्णनम् – दोहा ।

सुरँग सेत कारे कलित चपल तिरीछे बेस ।
अरसीले आनदबलित अनियारे दृग देस ॥ ४१२ ॥

कवित्त ।

सादर सुरङ्ग डोरे बिसद प्रभा हैं गङ्ग जमुना तरङ्ग पूतरी त्यों बिलसत हैं । लछिराम देबी देव बरनै बिरद बृज परम प्रबीने मोद रासि हुलसत हैं ॥ मंजत मकर एक बासरै सफल होत बारहो महीने इन्है देखे फलसत हैं । सङ्गम सोहाग भाग परम प्रयाग प्यारी तेरे नैन जुगल त्रिबेनी से लसत हैं ॥

सुन्दर सुरङ्ग स्याम करन विसद बूटे कानन की छोर लों अटेरनि भिरत हैं । रुकत सकोच तरफरत मजीले मौज सराबोर स्वेद प्रेम चाबुकें छिरत हैं ॥ बाग पलकन के मरोरे लछिराम कोरे पी मन कबूतर कुरङ्ग त्यों घिरत हैं । चपल तिरीछे प्यारी लोचन खेलार मानो मार बरछैत के बछेरे ये फिरत हैं ॥

पूतरी बर्णनम् – दोहा ।

चपल तिरीछे नैन के तारे स्याम सुबेस ।
मनहु बस्यो रसराज सुभ खंजरीट परदेस ॥४१५॥

सवैया ।

डोरे से रङ्ग त्यों सारद रङ्ग से स्वेत कछू रुचि गङ्ग सवारे । तापर या अरसीली चितौनि की चोटैं अचूक न जात सँभारे ॥ बङ्क बिलोचन मै लछिराम

लसैं इमि धीरजमोचन तारे। पाँखुरी पै अरबिंदन के लपटे मनो ख्याली मलिन्द के बारे ॥ ४१६ ॥

कटाक्षवर्णनम् – दोहा ।

अरसीली आनँदबलित तुव कटाक्ष नवबाल ।
सहत न लोचन सामुहे परम नरम नँदलाल ॥४१७॥

सवैया ।

खंजन सान मै ढारी मनो खरसान सँवारि बिरश्चि अगोटैं । कै बर कोरै कटाक्ष फिरै लछिराम जऊ घिरी घूँघट वोटै ॥ या गिरधारन साँवरे हेरि पर्‌यो घरी चारि सों भूपर लोटैं । धीरज को चकचूर करैं बृज ये अखियाँ अनीदार की चोटैं ॥ ४१८ ॥

अञ्जनवर्णनम् – दोहा ।

अञ्जनरेखैं दृगन पर यों राजित बृजचन्द ।
फँसे मीन मखतूल जनु जाल जगमगे फन्द ॥४१९॥

सवैया ।

सुन्दरी बङ्क चितौनानि सो तैं करी सावरे को कुलकानि कटा को। खञ्जन मीन कुरङ्गन तैं लछिराम हरी छल छन्द पटा को॥ सारद वारै तिहूं पुर की अवलोकनि अंजन बालि छटा को । खंजरै बारुनी मार बुझाय कसीस कियो मनो काली घटाको॥

कान वर्णवम् – दोहा ।

करन कामिनी के बलित कुण्डल मकर सुबेस ।
धर्‌यो चक्र निज रथ मनो छबिधर काम नरेस॥

सवैया।

गोल कपोल पै केसरि-छाप त्यौं बेसरि मोती महा गथ के हैं। कैबर बेड़ी लकीर ललाट मैं सान हरैं मुनिहूँ पथ के हैं॥ कानन मण्डित बीरन पै हिय सारद के सम हेरि थके हैं। सीप सुरङ्गन मे लटके मनो चक्र प्रभाकर के रथ के हैं॥ ६२२॥

नासिका वर्णन—दोहा।

तुअ नासा पर सुन्दरी वारौं सुक तिल फूल।
किंसुक तरकस की प्रभा परमाने मति भूल॥४२३॥

सवैया।

खंजन बाल के मध्य किधौं सुकठोर सुभाई प्रभा अवली की। द्वै अरबिंदन मैं लछिराम अदा किधौं है तिल फूलछली की॥ कैबर जोड़े के माझ किधौं कला किंसुक सौरभ रासि थली की। लोचन बीच बिलास भरी किधौं नासिका है बृषभानलली की॥

दोहा।

बेसरि बदन बिलास कर मनि मुकताहल संग।
मनहु कुण्डलित इन्दु पर अवलि नखत नवरंग॥

सवैया।

माधुरी हास प्रकासन मैं रस मौजन को उलचा करती है। संगम के अधराधर को नित नौल बहारैं रचा करती है॥ मोती मजेजभरी लछिराम सुरूप लकीर खचा करती है। मोहन की पुतरीन फँसी नकबेसरि तेरी नचा करती है॥ ४२६॥

कपोल वर्णन—दोहा ।

दर मधूकबर आरसी गुन गुलाब अरबिन्द ।
तिय कपोल समता कहां बरनत भूलि कविन्द ॥

सवैया ।

कोमलता अरबिन्द सों लै अरु मादकताई मधूक सों गारे। स्वच्छता आरसी की त्यौं उतारि कै रंग सबै बिज़ुरी के बगारे॥ सोधि सुधा लै बसीकर मन्त्र सों यों लछिराम तिहूँ पुरवारे । ढारे मनोहर साँच लली तब तेरे कपोल बिरंचि सँवारे ॥ ४२८ ॥

अधर वर्णन - दोहा ।

मधुराई की खानि बृज तिय तुव अधर सुरंग ।
पदमराग अरु बिम्ब को हरत सदा नवरंग ॥४२६॥

सवैया।

पङ्कजपाँखुरी औौर गुलाब बधूक बहाली बिडारतही बनै। त्यौं लछिराम जपादल बिन्द्रुम बिम्ब की बाग बिदारतही बनै ॥ सौरभसिन्धु सुधारस मौज मैं सौतिन को मन हारतही बनै । ये समता सब सारद को अधराधर तेरे पै वारतही बनै ॥ ४३० ॥

रदन वर्णन दोहा ।

मुकताहल हीरे कनी रसमय बीज अनार ।
बृजतिय तेरे रदन पर वारों रतिसिङ्गार॥ ४३१ ॥

सवैया ।

केते कहैं मुकताहल की लरैं केते सुहीर-कनी सनमाने । केते कहैं कछू टोने के बीज ये चन्द्रिका

चूर किते परमाने ॥ ये लछिराम न मो मन में बसै सारद या समता अनुमाने। सोधि कै मार-मनोहर-मत्र धरे अरबिन्द अनार के दाने ॥ ४३२ ॥

बतीसी वर्णन - दोहा।

लसनि बतीसी की दसन या बिधि सम अनुमान।
हीरक पर बिधि मनु लिखे जादू बरन सुजान ॥

सवैया।

बङ्क छुटी मुखमण्डल पै अलकावली राहु छटा रजनीस है । सौरभरासि लों माधुरी हाँस प्रकास में जादूगरी बिस बीस है॥ राधिका की रदनावली पै लछिराम बतीसी प्रभा प्रभा ईस है। रंग लै स्याम घटा सों मनोज रच्यो मनो मोतिन मारु कसीस है॥

रसनावर्णन – दोहा।

तव रसना पै सुन्दरी समन मान करि नीच ।
मनहु रची छबि सेज बिधि सरद सुधाकर बीच॥

सवैया।

गोल कपोल अमोल पै वारिये आरसी मंजु मधूक मजेज है । त्यौं लछिराम सु नासिका भूधनु ठोर सुआ खरे खञ्जन तेज है ॥ आनन में रसना की बिलास यों सारद को लखे काँप्यौं करेज है । सौरभ सङ्ग मो बारिज में रची मानो रँगीली छटा छबि सेज है ॥ ४३६ ॥

चिबुक वर्णन – दोहा।

चिबुक चारु यह रावरो प्यारी सुषमा धाम ।
मनहु बसीकरकूप बिधि रचि मन सुन्दर स्याम ॥

ठोढ़ी वर्णन - दोहा।

ठकुरायनि की ठीक यह ठोढ़ी लसाति अनूप ।
संगम सोभा सार मनु सुमन गलाब सुरूप॥४३८॥

सवैया।

गोल कपोल अमोलन पै लखो यों लटक्यौ लट लोल जजीरो । स्वेद के बुंदन की सुषमा पर वारे बनै मुकताहल हीरो ॥ ठोढ़ी लखें ठकुरायनि की लछिराम परै मन सारद सीरो।मोहन के मन मोहन को फल मानो रसाल बिराजत पीरो ॥ ४३६ ॥

तिल वर्णन।

चिबुक मनोहर तरुनि तुअ राजत यों तिल बेस।
मनु छरिन्द ससि मैं गरक मुदमय मार नरेस॥

कवित्त।

रतन-चऊतरे पै रंगरावटी मैं खड़ी जगमगै जोबन प्रकास परमाली मै।कवि लछिराम नौल नथ पैं बहार तैसी भूधनु मरोर कोरैं बङ्क दृग लाली मै ॥ लछिराम ठोढ़ी पै अजब तिल स्याम हेरि ताब है न समता फनिन्द फनमाली मै। मकरन्द हेत चकचौहैं चपकीलो मानो चेटुआ मलिन्द अरबिन्द की बहाली मै ॥ ४४१ ॥

दिठोना वर्णन -- दोहा।

तेरे भूधनु बीच बर लसत दिठौना बाल ।
मनहु अरध बिधु मैं बस्यौ अति लघुरूप सु व्याल॥

कबित्त ।

सहज सिंगार करि बैठी रंगरावटी मैं छूटे बार भार नील रूप हरखाने पै । बेंदीभाल नौरतन भूधनु मरोर बीच बनक दिठौना की न बनत बखाने पै ॥ लछिराम लोभी सो लपटि रह्यौ बानी मन कहत बनै न कछू सम सरमाने पै । संग सो पिछलि कै समर धनु सोहै दुर्यौ छौना पन्नगी को मानो रतन खजाने पै ॥ ४४२ ॥

मुखमण्डल वर्णनम् —दोहा ।

अमल आरसी इन्दुवर सोभा सर अरबिन्द ।
बदन राधिका की करत समता बिहँसि फनिन्द ॥

कबित्त ।

अमल अमोल गोल कोमल कपोलन पै तैसो चारु चन्द्रिका प्रकास रंग रद को । दसन चमक हीराहार लों बसन पर अधर सुरंग नै बैन मैन मद को ॥ नासिका मरोर बीच बेसरि-बहार बेस लछिराम सिरमोर तीनिहूं परद को । बृज बसुधाकर सुधाकर बदन सोहै धाकर बनैगो या सुधाकर सरद को ॥ ४४४ ॥

पुनः ।

अमल तरंग परिमल के प्रस्वेद बुन्द चन्द्रिका हसनि रूप काम रसवारे को । झलक बिलास बृज खलक प्रकास औरै लछिराम दुखद बिनासन बिचारे

को ॥ सुखद मलिन्द राजहंस त्यौं चकोरन पै सुमन सराहत सुरंग सजवारे को । चिन्तामनि मुकुर सरोज मानसर कैधौं बदन कलाधर कलपतरु प्यारे को ॥ ४४५ ॥

पुनः ।

भोर कंज बासर मुकुर साँझ बिज्जुहार रैनि मैं सरद चन्द्रिका सो झलत है। लछिराम आनँद मै बनक बितान औरै मानहू मै मान समतान को दलत है ॥ बाल बृजमोहन बदन वह रूप तेरो अजब अनूप रूप रंग बदलत है । छोहन छपाय तिरछौहैं करि नैन मारू मौंहन मरोरि मनमोहनै छलत है ॥

पुन ।

सहज सिंगार बेस बिथुरे बदन बार स्वेद बुन्द बिकसे कपोल सरासर मै । जोबन के भार छाम लचकत लङ्क चौक फहरात ओढ़नी अबीरी जोतिबर मै ॥ छबि लहरेली पै न समता मिलाति कहूं लछिराम सारद थकी है तीन्यौ थर मै । सौरभित सङ्गम तरङ्ग भौंर मानो खिल्यौ मोतीलर-मण्डित सरोज मानसर मै ॥ ४४७ ॥

सीतला को दाग बर्नन दोहा ।

बाल रावरे बदन पर सुभग सीतला दाग ।
थाल्हे बिधि बिरचे मनहु भरिबे को अनुराग ॥

कबित्त।

कीने चोट लोचन चपल खञ्जरीट चोचैं बारिज बसेरे बीच परम प्रभा के हैं। सोभन सिंगार बीज हेत रचे थाल्हे कैधौं मन मतवाले हेरि बृज अबला के हैं॥ चम्पई मुकुर पै मजेजदार खत कैधौं परखत लछिराम स्याम सरमा के हैं। बेधे बान मदन छबीले बिधु बेझ कैधौं सुन्दरी बदन पर दाग सीतला के हैं॥ ४४८॥

कैधौं मनमोहन सुमन बाल खेल रचे सुघर घरौंध केई बिधि बड़भाग हैं। जादूगर कैधौं चारु चम्पई मुकुर पर सूछम सुघर बहु बेधे अनुराग हैं॥ लछिराम कैधौं छबि सागर तरङ्ग लसै रङ्गदार भौंर सने रसरङ्ग लाग हैं। जौहरी मदन सुभ नग नौ सदन कैधौं बदन परी पै परे सीतला के दाग हैं॥

मुखस्वेद बर्नन – दोहा।

सीकर स्वेद सोहावने बदन लली के हेरि।
मुकताहल हीरे कनी बनै न वारत फेरि॥ ४५०॥

कबित्त।

कोमल कपोलन पै केसरि की छाप कैसी बेसरि बहार सोहैं जगर मगर मै। माधुरी हँसानि मनमोहनी मजेजदार लछिराम गहर गोराई की रगर मै॥ मृगमद-बिन्दु गिर्‍यो भाल सो बिछलि बस्यौ बदन प्रसेदकन बानक बगर मै। चारु चमकीलो चौक

परखत मानो मार जादूगर मानिक नगीने के न-
गर मै ॥ ४५१ ॥

रतन-दरीची खोलि सहज सिंगार भार बैठी अ-
लबेली फटी कंचुकी सरम सो । लछिराम सौंहैं च-
कचौंहैं मुखमण्डल के भारती न जाति भूरि भारती
भरम सो ॥ कोमल कपोलन पै केसरि की छाप तामै
लट लपटीली है सुवङ्क कन श्रम सो । मुकुर मजीले
पर मारू मंत्र वोलि रच्यौ मीन मार मानो चारु च-
म्पई कलम सो ॥ ४५२ ॥

हँसनि वर्णन - दोहा ।

हँसनि माधुरी बाल की सहज बिलास सुबास ।
बिज्जु मुकुत नवचान्द्रिका हर हीरा गुन पास ॥

कबित्त ।

जोवन प्रभाली पर अधर बहाली पर बेसरि म-
जाली पर हाँसैं हुलसनि की । नासा मोरवाली पर
नैनकोर लाली पर भौंहन कमाली पर बङ्क बिलसन
की ॥ भाल खौर ख्याली पर अलकन काली पर
लछिराम चूनर गुलाली पै लसनि की । चाल मत-
वाली पर सौंहैं बनमाली पर फैली फिरैं कैधों मंजु
माधुरी हँसानि की ॥ ४५४ ॥

चूनर सुरङ्ग लाल भूषन बिसाल भाल तापर सँ-
वारी स्वेत चादरैं सहल मैं । लछिराम कंचुकी गु-
लाबी त्यौं बहाली कुच बदन प्रभाली स्वेद बुंद झला-

फल मैं ॥ फैली फिरै जगमग माधुरी हँसनि जोति समता मिलै न सारदा को बृजथल मैं । चन्द्रिका लपेटी फेटी मालाकार चन्द्रहली ज्वालामुखी मानो चन्द्रमौलि की महल मैं ॥ ४५५ ॥

जोबन बहाली पै बहार की बनक औरै चाल मटकीली चढ़ी चौहरै अटान मैं । बदन प्रस्वेद भाल भूषन चमक लाल सीसफूल छूटे बार छबि की छटान मैं ॥ पीरी साल घूँघटै उलटि बिहँसाति कछू लछिराम समयो न ओज उपटान मैं । चन्द रवि राहु रतनाकर जजीरे फन्द बिहरत मानो चारु चँपई घटान मैं ॥ ४५६ ॥

सरबती सारी कोरैं चंपई सबुजराती सहज सिंगार भार सुषमा गँभीरी मैं। लछिराम सेज पैं लसी यों सीसमन्दिर मो जोबन बहार अंगरागन उसीरी मैं ॥ बिहँस्यो बदन बाल अधखुले घूँघट मो स्वेद बुंद झलक सराहि सुभ सीरी मैं । सोम सुर धनुष बिरादर बलित मानो सादर सबिज्जु बैठ्यौ बादर अबीरी मैं ॥ ४५७ ॥

जोबन बहार पर जौहर अनङ्ग रंग उरज पहारन पै हार यों खिलत है। लछिराम करिहाँ कमान लों लचत चले सीवी संग सौरभ तरङ्ग अगिलत है ॥ कुन्दकली बार सों ढरत छ्वै प्रभा कपोल माधुरी हँसनि ओज यामै यों मिलत है।चाखै चन्द मानो

कै मुकुत कासमीरी फेरि मौज मै अबीरी उड़गन उगिलत है ॥ ४५८ ॥

चूनर सुरङ्ग कोरैं चंपई चमकदार अधखुल्यौ घूँघट प्रभावन गँभीरे मैं । विहँसति मन्द मन्द चौहरे अटा पै चढ़ी पन्ना पोखराज सुबरन होत हीरे मैं ॥ औरै ओज वार्‌यौ या बदन बिधुमण्डल पै लछिराम सारदै सकोच सम नीरे मैं । जगमगै बीजुरी जवाहिर-बलित मानो पीरे लाल बादर के जोहर जँजीरे मैं ॥ ४५९ ॥

बानी वर्णन—दोहा ।

बानी सुनि सुकुमारि की किन मन होत न लीन ।
मनु बिधुमण्डल मैं बस्यौ मदन बजाबत बीन ॥

सवैया ।

कल कोकिल कूर बसे बन में सुक सारिका सारस लाजत है । लछिराम नरी परी किन्नरी मैं मधुराई न ऐसी बिराजत है ॥ बृज राधिके बानी तिहारी सुने उपमान यही उपराजत है । बिधुमण्डल मैं मधुरे सुर को मनो बीन मनोहर बाजत है ॥ ४६१ ॥

कण्ठ वर्णन – दोहा ।

कामिनि तेरे कण्ठ पै होत रसिक-मन लीन ।
किती परेवा की प्रभा दर कपोत कहँ दीन॥४६२॥

सवैया ।

कण्ठ पै तेरे कपोत कहा कहा संख मैं यों सुषमा सरसाति है । है कहां प्यारी परेवा इती लछिराम

लखे अँखियाँ सियराति है ॥ लीक लसै कल कण्ठ मैं पीक बिचारे नई उपमा ठहराति है। चँपई चारु सिसी बिच मैं मनो बीरबहूटी हली चली जाति है॥

पीठि वर्णनम्—दोहा।

प्यारी तेरी पीठि छबि रच्यौ विरंचि अतोल।
तापर दल कह केदली पटरी कनक अमोल ॥

सवैया।

जापै लसै लट बङ्क परी सनी सौरभ-रासि कुहू कल टारे। कंचनहू की परी सी प्रभा रचै सौतिन के लखे धीरज हारे। सोभ तिहूं पुर की लछिराम बिचारि बिचारि बिरंचि सँवारे॥ माली मनोहर बाग सुरूप मनो रचे केदली के दल प्यारे ॥ ४६५ ॥

कन्ध वर्णन - दोहा।

प्यारी तेरे कन्ध पै बङ्क परी लट छूटि।
पोखराज सीमा सघन त्रिभुवन को सुख लूटि ॥

भुज मूल वर्णनम्—दोहा।

मदन साँच ढारे मनहु तिय तेरे भुजमूल।
जा सुखमा पै रहत नित मनमोहन अनुकूल ॥

भुज वर्णन—दोहा।

भुज-बल्ली सुकुमारि की चम्पक रङ्ग सुबेस।
भाये भाव नसान पै मानहु मदन नरेस ॥४६८॥

सवैया।

जामै जवाहिर के गहने मुरचा से लगै बृजलोग सराहैं। कंचन की लतिका सी दोऊ लछिराम सबै

सम जीतन चौंहें ॥ चम्पई नागिनि लों चमकै चढी मार की ज्यौं खरसान उमौंहें । कण्टकजाली मृणाल कहा कहा बाल रसाल प्रभाभरी बाँहें ॥४६९॥

कर वर्णन दोहा।

मण्डित नख मेहँदीवलित जुगल जसीले हाथ ।
जा सुखमा को निरखि नित स्ववस रहत बृजनाथ॥

सवैया।

कङ्कन और चुरी झनकार विराजे जहाँ मन हारतही बनै । लालिमा कैसी बधूक गुलाल मै रेख सुवेधै निहारतही बनै ॥ मेहदी बन्दन पै लछिराम त्यों बीरबहूटी विडारतही बनै । या कर पै गजरारे गुलाव सरोज सुपल्लव वारतही बनै ॥ ४७१ ॥

कराङ्गुलीवर्णनम् —दोहा।

जुगल जसीले हाथ को लखत आँगुरी नैन ।
मार कलम सरसिज कला सौंहें कहत बनै न ॥

सवैया।

सुन्दरी के कर पल्लव की बरनै को प्रभा हिय हेरत हारे । मण्डित मोतिन के गजरे बृजमण्डल बीच विजै करि डारे ॥ आँगुरी बीच अँगूठी छलान की कैसी छटा लछिराम सँवारे । मण्डित मानो मनीन के जाल मै खेलत मोर फनीन के वारे॥४७३॥

यों सुकुमारि के हाथन पै जगै जोति अनूठी छटा

छबि छाय कै । विन्दु बिराजि रहे मेंहदीन के मोहनी लाज से मोद मचाय कै ॥ कौन रचै समता लछिराम रही रुकि सारदहूँ सरमाय कै । कञ्ज पै जादू मनोज मनो चुनी मानिक चूरके जब्र जमाय कै॥

बाँह पै जौहर जोति जगै गहने त्यौं जवाहिर मंद बिचारे । त्यौं कर कोमल कङ्कन की झनकार सुनै उपमा हिअ हारे ॥ आरसी लोने अगूंठन मै लसै यौं लछिराम प्रकास पसारे । द्वै अरबिंद कलीन पै मानो बिराजत द्वै रबि मण्डलवारे ॥ ७५ ॥

नखवर्णनम् —दोहा ।

राधे-कर-अँगुरीन पै मेंहदीमय नखजोति ।
चम्पकलिन पै मुकुतलर मनु रबि करन उदोति ॥

सवैया ।

सुन्दरी आज सिंगार किये सु बिराजति चौकी पै नेह नवीने । हाथन मै मेंहदीन के बुंद लखे दृग यौं परैं आनद-भीने ॥ आँगुरी पै नखजाल की जोति जगै लछिराम सराहि प्रबीने । मौज मै चम्पकलीन को मार मनो मुकतालर लालिमा कीने ॥ ७७ ॥

उरोजवर्णनम्—दोहा ।

श्रीफल सिखर सुमेर के कुम्भ कुम्भ गज वारि ।
चन्द्रमौलि सिर की छटा तिअ तुअ उरज निहारि ॥

कवित्त ।

सावर जगैबे को कलस मङ्गलीक तापै रसराज [illegible]ण्डित कलस ये कटारे के । चक्रवाक जोबन सवारे

चिरीमार मैन कल कुम्भ कैधों गजराज मतवारे के ॥ राजैं बृजसुन्दरी के उरज अमोल कैधों गुरज सुरूप ओज गठ गजरारे के। जादू रतनाकर के जुगल कमल कैधों जीवन जुगल फल जुलफनवारे के ॥

छलकी परै है छटा बदन छपाकर पै बिहँसनि बीजुरी मजेज मौज सीरी के । लछिराम गहर गोराई की भभक चारु चम्पई कराति रङ्ग वसन अबीरी के । जादूभरे जोबन बहार पै उरज ओज हेरी हाल फहरात अञ्चल समीरी के । मानो रचे मृगमद बिंद की भभीरी भाल केसरित जुगल कुमार कासमीरी के॥

सिखर सुमेर के जुगल रङ्ग-भूमि कैधों श्रीफल सवारे बाग मोहनी नगर के ।बृजराज मोहन जुगल फल जात रूप कैधों देव दुन्दभी बिनोदन बगर के॥ परम रसीले गरबीले द्वै गिरीस कैधों लछिराम कामद कलाधर कगर के । रङ्ग चारु चम्पई उरोज अलबेले कैधों मन बसीकरन बटा ये बाजीगर के ॥

उदरबर्णनम्—दोहा ।

चल-दल दल सों सौगुने अरु तमोल सों लाख ।
तेरे उदर अमोल की मन पिअ यों अभिलाख ॥

रोमलताबर्णनम्—दोहा ।

उदर लसति सुकमारि के रोमलता नवरङ्ग ।
सोभा-सर तै बर कढी नागिनि बलित उमङ्ग॥४८३॥

सवैया ।

बांभि तै यौं कह्यौ पन्नगी चेटुआ संधि सुमेर बिलोकन चाहे। तार कै नील मनीन के बङ्क समोये तरङ्गन की सुखमा है॥ अंकुर कै रासराज सु बीजके यौं लछिराम कहाँ लौ सराहै । मोहन के मनमोहन को मनमोहनी की किधों रोमलता है ॥ ४८४ ॥

त्रिवलीवर्णनम् - दोहा ।

तव त्रिबली की झलक पर ललकत नन्दकिसोर ।
नवतरङ्ग सोपान छबि वारत हँसि बर जोर ॥४८५॥

सवैया ।

जाकी छटा पै मनीन के भूषन मोरचे लौं बदरङ्ग ह्वै हारे । जापै नरी अरु किन्नरी के तृन मानि परीन गुमान को गारे ॥ सारद हीतल मै लछिराम यही समता सरसै सब वारे । मोहन के मन मंज्जन को मनो हेमनदी के तरङ्ग सवारे ॥ ४८६ ॥

नाभीवर्णनम् - दोहा ।

नाभी नवला की निरखि वारे त्रिभुअन रूप ।
पिय-मन ताप बुझायवे मनहु रचे बिधि कूप ॥

सवैया ।

यौं लघु बामी कहा है सुमेर मैं जाहिं लखे सबै ही थरके हैं। जा महिमा के सराहिबे मै हिय सेस महेस हू के खरके हैं ॥ तापर कैसे मिलै समता लछिराम यौं हौंस जऊ फरके हैं। साँवरे के मन गाहिबे को रचे भौंर मनो सुखमा सर के हैं ॥ ४८७॥

कटिवर्णनम् – दोहा ।

कनकतारहू तें लचत कत मुरारि को गौर ।
जा पर सिंघिनि की समा भरमत पिय मन भौर॥४८८॥

कवित्त ।

छोऱ्यो काम केहरि सो कैधों करिहा को सान छामता कनक-तार कैधौं छवि घन की । मंगलीक मोहन मुरारहू ते सुकमार लछिराम कैधौं भारवार असहनकी ॥ रसराज मीना खिच्यो चंपई लकीर कैधौं मारूमंत्र वेलि मार माली रची मनकी ॥ छवि लहरेली की लचकदार लंक जादू कैधों या कमान चारु चंपा के सुमनकी ॥ ४८६ ॥

कनकलता मै लस्यौ झुंड भ्रमरीन कैधों झनकार मंगलीक मोहन सजाति है । लछिराम कैधों लपटीली माल मोगरा मै तनै बीन सारद की माधुरी मजाति है ॥ सूछम धनुष चम्पई मै मार जादूगर सातौ सुर सीमा भरी कैधों राग जति है । जोबन बहार बार भार मै लचत लङ्क कैधों या परी की छुद्रघंटिका बजति है ॥ ४६० ॥

नितम्बवर्णनम् - दोहा ।

तिय तुअ नवल नितम्ब की समता बरनत मन्द ।
चक्र चारु मन्दर सिखर सुखर सु आनदकन्द ।

सवैया ।

भाये सुमेर के शृंगन से सम देव की दुन्दभी देत हिये डर। सारद के खरसान चढ़े कलसे पोख-

राजन के रँग मै बर ॥ जा परमा को बिचारतही लछिराम निहाल फिरै नव नागर। वारों नबेली तिहूँ-पुर की नवला के नितम्बन की परमा पर ॥ ४६२ ॥

जंघवर्णनम् – दोहा।

कनक-केदलीखम्भ सम बरनत जंघ प्रबीन ।
कलभसुण्ड समता कहत कोऊ सुकबि नवीन ॥

कबित ।

माली मनमथ कै सँवारे केदली के तरु ढारे से जुगल जामै छबि यौं बसति है। कबि लछिराम कैधों खम्भ द्वै कनकवारे बनक बिसाल पै सुमति हुलसति है ॥ साषी पोखराज रसराज खरसान सोधे कैधों करी-सुण्डन की सीमा बिलसति है । छबि लहरेली जोति घाँघरे लों फैली कैधों जंघ अलबेली या नबेली की लसति है ॥ ४६४ ॥

गुलफवर्णनम् – दोहा ।

प्यारी तेरे चरन पै जुगल गुल्फ सुख साज ।
मनहु बसीकर भूमि फल द्वै बिरचे रसराज ॥४६५॥

चरनवर्णनम् – दोहा ।

जावकबलित सुरङ्ग पग जुगल जसीले हेरि ।
कलित कोकनद की प्रभा वारों तृन सम फेरि ॥

कबित्त ।

नवलकिसोरी क्वार पूनो की परब रैनि साजिकै श्रृँगार चली सुखमा की श्रेनी मै । सीसफूल खौर

कासमीरी मुख उरज यौं मोती बार मिलित पगन छटा बेनी मै ॥ भूषन झनक चाल मन्द जोति भूपर त्यौं लछिराम धूमधाम चाऱ्यौ फलदेनी मै । राहु रवि चन्द्र चन्द्रमौलि गुरु मानो मन्त्र पढ़त जुगल कोकनद की त्रिबेनी मै ॥ ४९७ ॥

मण्डित महावर की रेखैं बिरची त्यौं बेस औरई बहाली भूमि लाली तरवान तै । नखत की जोति नखतावली उदोति भार भूषन झनक भ्रमरावली बितान तै ॥ मङ्गलीक मानद सुरङ्ग सुकमार लीने लछिराम राधे बृजमण्डल बखान तै । छूटी लटैं बूटी लौं चरन-रज लूटिबे को टूटी परैं बिबुध-बधूटी आसमान तै ॥ ४९८ ॥

गतिवर्णनम् दोहा ।

राजहंस गजराज-गति लसति बाल मग लाल ।
उरज वार भारन अमित जोबन जौहर माल ॥५१९॥

कवित्त ।

बसन अबीरी खौर सघन पटीरी सीरी बिहँसनि चाँदनी सरद लौं मिलति जाति । रंगदार भूपर तरंग गंग माला सम समता विचार सारदाऊ पछिलति जाति ॥ लछिराम चाल मतवाली राज-हंसिनी लौं मंगलीक मौज बनमाली की खिलति जाति ॥ बदन प्रभाली पर अधर गुलाली पर चिबुक बहाली पर बेसरि हिलति जाति ॥ ५०० ॥

सुकुमारतावर्णनम्—दोहा।

भाल खौर बीरी बदन छुटे छवा लों बार ।
करति न और सिंगार कछु अंगराग के भार ॥५०१॥

कवित्त।

सहज सिंगार भार चाँदनी सरद बीच मंद मंद गौनहू सँभारत न अलकै । लछिराम सारी स्वेत चादरे के ऊपर मै गहर गोराई वृंद बीजुरी लों बलकै ॥ सीकरति बदन बिथोरति बसीकरन रोम रोम जोबन तरंग रंग झलकै ॥ लचके परी की लंक संक भभरी मै भरी छीर के कटोरे लों छवि कहूँ छलकै ॥ ५०२ ॥

गोराई वर्णनम्—दोहा।

कह केसरि चंपक कहा कहा दामिनी-जोति ।
जा गोरो तन लखतहीं मति गोबिंद बस होति॥५०३॥

कवित्त।

रास करि पूनो कार परब तमासे बीच पाछिले पहर सोई आनद परम सो। नखछति उरज मलैज घनसारकन लछिराम कैसे लसे मालाकार क्रम सो ॥ अंचल दरीची को समीर तै खुलत नेक छवि लहरेली फैली चौक चमा चम सो ॥ अरुन अबीरी कासमीरी घट बेलि रच्यौ मीन मार मानो चारु चंपई कलम सो ॥ ५०४ ॥

प्रकास वर्णनम् – दोहा।

बरनत जाके नखन की महिमा गिरा गणेश ।
ताके अंग-प्रकास को बरनै किमि कबि देस॥५०५॥

कवित्त।

भूधनु मरोर बीच बिरची तिलक बेड़ी भूषित करी त्यौं भाल सघन सितार लै । लछिराम सारदा लों चांदनी सरद बीच मोगरा अलक मेली हाथ गजरारे लै ॥ घूघट न खोलै अलबेली तू डगर लाल वारिहै निकुंज मुकताहल के थारे लै ॥ सुरभि परैगो बृज भूपर भरम खाय नखत-नरेस लोभी नखत कि तारे लै ॥ ५०६ ॥

अधखुल्यौ मुख अरविंद खंज नैन तिल चंपक मलिंद मकरंद अरमा की है। स्वच्छ सारिता सों छवि छलकी परति अंग भूषन चमक जोति नखत जमा की है ॥ विहँसनि चाँदनी चकोर चकचौंधे परे बेनी लछिराम कुंद कलिन समा की है ॥ साँवरे लखे ते होत हीतल सरद बृज आई साझ सुंदरी सरद सुखमाकी है ॥ ५०७ ॥

सम्पति सवाई अलकेस तैं अचल भौन साहिबी सुरेस तेज भान धर्मधुर को । लछिराम गजरथ बाजी के नखनही तै बिहँसि बिदार्‍यौ करै बैरिन के उर को ॥ राजै बायें दाहिने कुमार मंगलीक राम बानी बरदानी श्रीभवानी सम्भु सुर को। बखत बुलन्द श्रीमहेश्वरबकसजीवै जुगजुग तखतनसीन रामपुर को॥

सवैया ।

बिक्रम ज्यौं बयताल कवित्त पै चन्द सों ज्यौं पृथीराज नयौ है । गङ्ग पै साह अकब्बर ज्यौं हरिनाथ कों दान बघेल दयौ है ॥ कोटिन कैसे गनों श्रीमहेस्वरबक्स धरा जस बीज बयौ है । रामपुरी लछिराम पै तैसई राम गरीबनेवाज भयौ है ॥५०६॥

कबित ।

सम्बत सु मुनि बेद अङ्क बिधु मधुमास परम प्रकास रामपुर के अखारा सों । सौरभित सीरो मलै मंजु सुबरन साज सगुन सभाग सुधा सरस अपारा सों ॥ लछिराम औध बृज बिरद बितान मौज रैकवार रामकृष्ण जस अवतारा सों । कामद महेस्वरबकस को कलपतरु मण्डन महेस्वराबिलास गङ्गधारा सों ॥ ५१० ॥

इति श्रीमन्महाराजधिराज श्रीठाकुर महेश्वरवक्ससिंह वहादुरजू की आज्ञानुसार श्री अवधनेवासी श्रीलछिराम विरचितो महेश्वरविलासग्रंथः संम्पूर्ण शुभं भूयात् ॥

